

'अपना सब कहिया धनिक होयब?' ओ जिहासने पुछलकनि।
'से किएक?'

'रखूना हमस बहुत जोर सँ भूख लागि जाइत अछि।'

'सा कऽ ओ जाइ छऽ तइयो?' ओ पुछलथिन।

'से तँ मरूखनी गुमतीए लग घनि जाइत अछि। हमस पाइ कहीं रहैत अछि।
जहाँ कहीं पैत मी पाइ? कए ता बिहासी तँ अपना सगमे जलखी अलेए। खुन
खाइत रहैए। नहि त जेबोमे पाइ रखने रहैए। कीनि कीनि कऽ थिनिथि
बदाम कि बिरकुट खाइत रहैत अछि। हमरो बड मोन होइत रहैत अछि, बाबू
ओ।' केनाक ई बात सुनि कऽ बड कपोट भेलनि हुनका। मुदा ओ किछ
कहलान नहि।

'बाबू ओ, अपना सब सब दिन एहिना मरीय रह्य?' बेटा अतनोकहि
पुछलकनि। हुनकर ग्यान दुनलनि।

'नै-नै। सब दिन केहू एहिना मरीय कसै?' ओ बुझओलथिन।

'कहिया धरि रह्यै?' ओ पुछलकनि।

'हमरो लोकनि सब दिन मरीय नही रह्य। हमरो सबहक दिन फिरत।' ओ
बुझओलथिन।

'अपना सबहक दिन कहिया फिरत?' ओ पुछलकनि।

'फिरयै कसोक दिन। देखहक नै।' ओ कनी खीझाइत कहलथिन।

'कोसा बुझै फिरे सँ अहाँ?' ओ पुछलकनि।

'हमर काम कइत हुनाह।' ओ शान्त स्वरे कहलथिन।

'की कहने रहियै?' ओ फेर पुछलकनि।

'कहने रहयि जे पुरक दिन बीति जाइत छैक तँ सुखल दिन जयैत छैक।' ओ
कहलथिन।

'कहिया?' समानाथ पुछलकनि।

'जल्दीए।' कहलथिन।

'तोयो कहिया?' समानाथ के पैताक उत्तरसँ संतोष नहि भेलक।

'जहिया तँ खुन नीक जहाँ पढ़ि लिखि कऽ पैघ मऽ जयबह।' खुन
झानी मऽ जयबह लखन। ओ बुझओलथिन। संगहि संग घाम भरिक लोक
सबमे मेल मऽ जयबह लखन।

उचितवक्ता

गंगेश गुंजन

उचितवक्ता

[संथिली कथा-संग्रह]

डॉ० गोपेक्ष गुंजन

●
क्रान्तिपीठ प्रकाशन

एल० आइ० जी० एच० प्लेट-37
लोहिया नगर, पटना-800020.

प्रा

पारम्परिक आवश्यकताक अनुसार
हमह एतऽ लेखकक विषयमे संक्षिप्त
सत परिचय छापऽ चाहैत छलहु,

परन्तु लेखक मना कऽ देलति । लेखकेक शब्द मे :

"कथा सभकेँ स्वयं बाजऽ दियौक आ' पाठक वर्ग' त
अपने गण करऽ दियौक । एहि लेल मध्यस्थता की ?
ओकावति वकी नहि बुझाईत छैक से ? कथा सभ
अपने बाजओ आ' उपस्थित करओ अवन पक्ष ।"

—प्रकाशक

- ☐ अवसर : २६ मार्च १९६१ ई०
☒ सर्वाधिकार सुरक्षित : श्रीमती कान्ति सुर्जना
☐ प्रकाशिका : श्रीमती इन्दु बाला सिंह
☐ आवरण डिज़ाई : श्री भुवनेश प्रसाद डोंडियाल
☐ व्यवस्थापन : लेखक
☐ मूल्य : पचास टाका मात्र
 सविस्तर वृत्तचित्र टाका मात्र
☐ प्रकाशन : कान्तिपीठ प्रकाशन,
 एल०आइ०जी०एच०फ्लैट ३७
 लोडिया नगर, पटना-२०.
☐ मुद्रक : ए० आर० प्रिंटर्स, डी-१०२
 न्यू सीलमपुर, दिल्ली-११

UCHITVAKTA : A SHORT STORY COLLECTION IN
 MAITHILI. BY DR. GANGESH GUNJAN.

उचितवक्ता

ई पोथी अपन श्रद्धेय भैया आ' भौजी, श्री राजेश्वर सा तथा
 श्रीमती अपर्णा देवी के सावर समर्पित !

उचितवक्ता

क्रम । पृष्ठ संख्या

शब्दक सरोकार [लेखक विधि से]

: कथा

मुढे मुढे : १

चङ्गी : ७

सपना कावम : १५

एषारहम चिन्ता : २०

मनुष्य वा गोवर : ३४

अवसरक लोक : ४४

मुर्दा मुर्दाक भाग्य : ५५

बाप वेडा : ६१

रखवारी : ६८

एक टा रङ्ग्य सतुवेचनी : ८०

श्याम अंकल एहन कियेक छयिन : ८३

अपन समाज : ८६

शब्दक सरोकार

॥ एक ॥ सुखमा-संचारक विवेकवादी विस्फोट से आइ जीवित धरतीक एकहु टा कोन बाँचल नहि अछि। सम्पूर्ण मानव-समाजक ई परामव छैक जे ओकरा, ओही सब किछु गुनऽ, जानऽ तथा सोचऽ-कहुऽ-करऽ पड़ि रहल छैक जे ओकर प्रयोजनक नहि छैक जाहि से ओकर सरोकार नहि छैक।

हमरा इहो बूझाईत अछि जे जतेक रास विचार आ' वर्तन एखन धरि सृजित आ' प्रचलित होइत रहल अछि तथा जे संस्था, तकर बाँध संगठन वा व्यवस्था पद्धतिक रूप धरैत अछि से अपना अपनी कऽ मात्र एक टा खास नाव जकाँ भऽ जाइत अछि। सबजाना नाव नहि, एक जनिया नाव। ताहि नाव केँ सब, अपनहि दिशा मे अपने बाँहिक जोरे पतवारि से, अपनहि दृष्टिकोण खास कऽ सेवैत अछि। सेवैत जाइत अछि। आज सभ बात-विचार, ओकरा दृष्टिकोण मे प्रायः अप्रासंगिक लगैत छैक, जखन कि एहन सभ टा विचार-संस्था हमरा एखनसँ एक भंगु मलाइ जकाँ बूझाईत अछि।

ओना कालक अनावि अनन्त प्रवाह मे, एक संग नाव सेवैत अनेक विचारक नाविक एकहि तरहक समाने उद्देश्यक छवि मे आभास भऽ सकैत अछि, परन्तु हे प्रायः भ्रम थिक। कारण जे ओ सभ, अपना-अपना लक्ष्य मे पृथक्-पृथक् छवि। मन मे तेँ प्रश्न उठव स्वाभाविक लगैत अछि जे एतेक दुप से आइ धरि एतेक तरहक विचारधारा, एतेक-एतेक वर्तनक उद्भावना तथा प्रचारक संगहि सङ्ग समय-समय पर समाज द्वारा ओकरा स्वीकार अस्वीकार करवाक छविल-पुखल कऽ दै बला जगन्मोहन कि एक होइत रहैत छैक ?

तेँ सुखमा-संचारक एहि महाविस्फोट मे हमरा एहि लोक-सत्यक अनुभव होइत अछि जे सम्प्रति साधारण मानव समुदाय स्वयं केँ मात्र हेरापल-भूतिआपल तथा नाना प्रकारेँ अपना केँ ठकावत अनुभव कऽ रहल अछि। कए ठाम तेँ सम्प्राप्त वर्गीत सत्ता सेँ परिचालित एहि समाजक अस्तित्व मे ओ अप्रासंगिक भऽ गेल अछि। युग प्रचलित कुल शासन-पद्धति सांख्य-वाद, भूमीवाद, साम्यवाद, लोकतंत्रीय समाजवाद आ नव प्रजातंत्र आदि-आदि

(अ)

तथ मे ओकर अस्तित्व मात्र गनती अर्थात् आँकड़ाक रूप मे रहि गेल छैक तथा आव अपन एहि परामव केँ सही-सही अनुभव कऽ सकवाक भाषा आ' लोक-विवेक साधारण जन केँ प्राप्त भऽ गेल छैक तेँ ओकर अंतर मे एक टा निर्णायक उपक्रमक प्रक्रिया चालू भऽ चुकल छैक। ओ स्तब्ध नहि, चुप अछि एखन। समय पर से, स्वाभाविक परिणाम जकाँ सभक सोझाँ अवश्य करैतक निर्णायक उपक्रम, मे हमर-लेखकक आत्म विश्वास तथा वृत्त आशा। विचार-बुद्ध, सत्ता-संघर्ष, सुष्ठु राजनीतिक स्वार्थ-संग्राम आ तत्सम्य आयल सम्पूर्ण मानवीय दुःख पर अनुचित विपत्ति केँ, अपन मत तीस-पैंतीस विस्तार-वर्ष केँ देखैत, हम स्वीकार करैत छी जे हमर लेखन स्वाम्तः सुखम अछि।

॥ दु ॥ लेखक अपन समाज सत्य, समय-सत्य एवं समकालीन विचाराभिव्यक्ति-माध्यमक निर्भीक प्रयोक्ता, तेँ 'उचितवक्ता' होइत अछि एही तर्क सेँ कृति सेहो स्वयं उचितवक्ता होइत अछि जकर कि आजुक समाज मे चोर अभाव। एहि पोथीक नाम तेँ, 'उचितवक्ता'—कथा-संग्रह धरैत छी।

बारहुटा उचित वक्ता छवि एहि संग्रह मे। पहिल कथा-संग्रह अन्हार इजोत ६४ ई० मे छपल रहल। दोसर संग्रह मैथिली अकादमी पटनाक प्रकाशन-प्रवृत्ति-प्रवर्णनाधीन अछि, आव तेँ ६ वर्ष सेँ प्रायः। तेसर संग्रह ई (यद्यपि प्रकाशित दोसरे संग्रह थिक) १९६१ ई० मे। कएक वैचारिक एवं व्यावहारिक कारणेँ, लेखकीय-सम्बेदना तथा दृष्टि विकासक ध्यान रखैत, एहि संग्रह मे पैतृति ईस्वी सेँ अठ्ठासी ईस्वी धरिक अपन किछु कथा अपने लोकनिक समक्ष निवेदित करैत छी। एतऽ कोनहुँ प्रकारेँ हमर ई मायमता नहि अछि जे ई सब, समेटा हमर प्रतिनिधि कथा-रचना थिक। नहि। हमरा बूझाईत अछि जे एक-एक जगद जे हमर कलम सेँ निकललस, हम सभक उत्तरदायी छी तेँ ओ सब हमर प्रतिनिधित्व करैत ओहो सब, कथा, कविता किवा अन्य विधाक रचना जकरा कवाचित् समय नहिषो मानत। सब हमरे। जेता स्वस्थ सुन्दर सक्षमक संगहि संग कोनो एक टा विकलांग अविकसित सन्तानक जन्मक सेहो होबऽ पड़ैत छैक कहियो। ओहो बच्चा ओही पिताक। तेँ वैह ओकरो जवाबदेह।

॥ तीन ॥ सब कथा समय, सत्य तथा ऐक्यकीय आदर्शक पृष्ठभूमि मे कयल गेल लेखकक आत्म संघर्षक कथा-सृष्टि थिक, से कहवा मे हमरा कोनो तारतम्य नहि अछि। ई सभ टा, एहिना शब्दक काया नहि घऽ लेलस, प्रत्युत मादस मे स्वरूप ग्रहण करवाक एक टा प्रक्रियाक अंतर्गत सृजित भेल अछि। छुट्टे घटना अथवा कथानक कोनो छेउ रचना नहि वर्तत छैक। श्रेष्ठता समय,

(आ)

बोध, इतिहास-विवेक, समाजिक सम्पूर्ण परिस्थिति आ' तकरा विषय मे लेखकक दृष्टि-अंगीक सज्जतात्मक प्रयोग सँ निमित्त होइत छैक । दृष्टि आ' दृष्टि-अंगीक रचनाकार मुख्य पुत्री धिकैक आ' प्रयोग-बोझ ओकर साधना । ताही अर्थ मे हमर मन कहैत अछि जे, जे अतेक महान् कृति होइछ मे अपन अतीत आ' वर्तमानक समक्ष आसैवे महान् व्यंग्य सेहो रहैत अछि ।

एहि कथा सभ मे प्रवा स्थान तकर रूपल भेटैत चलन तँ हमर सार्वकता अन्वया अनेक प्रतिक्रिया सावर ज़िरोघाँय ।

॥आरि॥ अपन सम-उपलब्धि के ह्म, सर-सम्बन्धीक आ शक्तिविक खाड़ीक लेखक-कविक आशीर्वाद कस चुकैत छी तथा मित्रवर्गक स्नेह शुभकामना । ते हुनका लोकनिक संहि कृतज्ञता आ' आवरपुर्वक स्मरण रहैत छवि-मैया-भौजी, सरस्वती जी-मुनु, छोटाका मैना-छोटकी भौजी, हमर कनिषा, हमर मित्र, प्रभास कुमार चौधरी, भीमनाथ झा, रामनाथ आलाचक सहिब मार्कण्डेय प्रवासी, शुकला जी भुपमा, अवधेश-भाभी, देवेन्द्र, नरेन्द्र, रणविजय, इला, सरिता, शंकर मोहन झा, मुकुल यादवेन्द्र, चन्द्रेश, आ' मनु-विजया, जैनेश, हमर बाल तथा धीर भाव तथा चार, विश्वास छवती भौजी, स्व० एस० अतिथल, भगवतीचरण श्रीवास्तव, अजय, भूपेन्द्र अबोध, प्रो० रामबुल्लान सिंह, केदारनाथ कलाधर, मधुकर मंगाधर, हीरानन्द शास्त्री जी, मुधांशु सेखर चौधरी जी, प्र० रामदयाल पांडेय, डॉ० कुमार विमल, निशान्तकेतु, भगवती चरण मिश्र अपन रेडियो गुह केसब पाण्डेय जी, नर्मदेश्वर उपाध्याय जी— हुनका लोकनिक आत्मीय छविक अमृत मिलिखल अछि ।

तखन अंततः सर्वांगिण एकत्र समाज ! समाज जाहि मे हमर माँ-पिता सँ लऽ कऽ नाडीन गाँवमे तथा मदर टेरेसा आ' मोलायस वैजामिन धरि छथि ।

ए०आर० प्रिंटर्स प्रकाशक श्री कुमारकान्त चौधरी, श्री विजयचन्द्र झा, श्री सत्येन्द्र मिश्र, श्री उमेश झा तथा प्रिय भातिज कलाकार चि० सान्त्वानु पाण्डेय एवं श्री भुवनेश प्र० डीविषासक स्नेह सक्रिय सहयोगहि सँ ई पोथी छपब संभव भऽ सकल अछि । ते सबकेँ हृदय सँ धन्यवाद ।

॥प्री॥ हमरा सभ शोटय के एकर विशेष हर्ष जे ई पुस्तक चि० गौलू बाबूक जन्म-दिनक (२६ मार्च) उपलक्ष्य मे प्रकाशित भऽ रहल अछि । □ गुजन

मेलगाँव
मई दिल्ली

युद्धे युद्ध

बारह घंटाक भीतर, ई तेतर बेर । ओ होइतमे जाबि क' बैसल । माथ पर बिजनीक पंखा घुरमी कइत छैक । मूड़ी उठा क' ओ एक बेर अस्पष्ट पाँखि सबकेँ देखलक आ' फेर सँस छोड़ैत कुत्ताक दुताम खोलि लेलक । भीषण गर्मी । जनि नहि कोना लोक जीवत ? इच्छा भेलैक जे बरेंक पानिसँ भरि छाक नहाय । कपारसँ घाह लठल रहैक ।

दू छन ओ सोचलक, कतोकाल तक बिना किछु वजनहि चुपचाप पंखा तरमे बैसल रहब । एही विचार-तर्ज ओकर पपनी खसि पड़लैक । फेर जेता चौकैत लजा जठल । क्यों देखि क' की सोचत ? बाटे-घाट सुति जायबला प्राणी ।

बेयरा शय मे टाढ़ भ' गेलैक । ओ बिना बेघनहि, ओकरा एक स्वास पानि द' जाइ लेल कहि क'सोत छोड़लक । बेयरा चल गेलैक । सौझिक अवता पर, अनायास आँखि गेलैक । पानिक छिटका सबसँ दगाएल अपना मे अपन आकृति ओकरा बेसी छेहियाएल लगलैक ।

एहन जीवन जीवैत आइ मो वर्ष सँ बेसी भ' रहल छैक । एकटा असकर कोठरी, होटलक भोजनक जीवन आ' चाह आ' मिश्रित घंटासँ बहुत बेसी घंटा तक बिना अतिरिक्त प्रजुरीक कार्य करैत जीवन । भोर-साँझ, दिन दुपहर बीच सड़क पर चलैत जीवन । आ' सुस्ताइ सिम कोनो चाहक दोकानमे पाँच मिनट-सात मिनट धरि टहरैत, पाद चुकबैत आ' पैर आगँ यदि जाइत असकरथा बैक अंतहीन जीवन !

ओकरा बुझलैक, जीवनकेँ जेतेक मन-स्थितिमे ओ अनुभव कयने अछि, बहुत कम्मे लोक क' सकल होवाह, मुदा फेर तामसो उठि गेलैक । अपना विषयमे ओकर अतिबाधितक प्रवृत्ति परकाष्ठा पर पहुँचि गेल छैक । बरगुत ओ जीवनकेँ बहुत कम रूप मे गुप्तने छैक ।

आगामे पानि राखि, कन्हा परतुक तीसियासँ हाथ पोछैत बेयरा प्रतीभा कर' लगलैक मुदा ओ एत बेर चुप रहल । खाली, स्वास उठा क' पाँच-सात घंटा पानि पीछि लेल । बेयरा भरिसक खोला क' चल गेलैक । मासिक डेटे छैक । बिन भरि मे कतेको बाबू अहिना घंटा भरि पंखा तरमे बैसि क' चल जाइबला अवैत छथिन । माथ स्वास भरि पानि आ' एक प्याली चाह ।

ओ सोचलक किछु खाइ लेल मंगवए । जेवनेमे एखन पाइक खास अभाव नहि छैक । मुदा जानि नहि कियेक फेर बेधराके खोर क' एक प्याली चाहू द' जाइ लेल कहलक आ' आव अनुस्तासँ प्रतीक्षा कर' लागल जाइक ।

अइ बेरमे आबि क' सब दिन ओकर माथ टमक' लगैत छैक आ' सोसि देह जेना आलससँ दूट' लगैत छैक । ओ एकटा हाकी छोड़लक आ' मुँह पर चूटकी बजीलक । बगलहिमे आबि क' तुरत बसल किछु नयबुजकक गर्म स्वर मुनि-मुनि तामस उठलैक । ओ सभ अप्पनामे एकबारक पन्ना लए अगड़ा क' रहल छलाह ।

'पहिने हमरा देख' दे ।

'देख' ने, मुदा एकटा पन्ना हमरा दे । ताबत हमहुँ त' देखियैक' ।

'बम्हे, द' ई छियी' ।

जानि नहि मामूतियो गप्पकेँ लोक कियेक हल्का क' दैत छैक ? होटलमे आबौ त' हल्के मचबैत । कनीबको काल त' तामि सँ बसब सीख' लोक.....

'ऐ रो, ई त बाढ़िक भीषण प्रकोप छोक ?'—आमके फाटल स्वर ।

'कोन हलाकामे रो ?'

'बम्हे—देख' दे । अपनहि सभक हलाका.....'

लेकर बाव ओ युवक पूरा गंभीरतासँ पड़' लागल.....'रातो रात अचानक बाढ़ का पानी बहुत चढ़ आवा और पूरा गाँव दह गया । लगभग डेढ़ गो घेर बर्बाद हुए । बेघर लोगों के सेवासँ.....'

एकएक जेना रेडियोकेँ मिला देल जाइक । ओ ध्यान केँ एकदमसँ हटा लेलक आ' सोच' लागल । एतनीटा जीवनमे नहि जानि कलेको बाढ़िक बहायल घर-अंगनक कणन भाषा देखि-मुनि चुकल अछि । बाढ़ि ओहिना अर्बत छैक आ' हजारौ लोक एहिना अलाप भ' जाइछ । ई बाढ़ि ओकरहुँ जीवन में आविसेसँ लागल छैक ।

बाहक गंध जखन नाक तक' पसलैक त' ओकर ध्यान हटल । प्यालीक डंटी पकड़ि क' उठौलक आ' एक घोंट पीबि कांत महकं टेबुलकेँ देखलक । सभ युवक ओकरासँ अवस्थामे कम रहैक । सबहुक आकृति पर तखन अनुभवहीन चिन्ता रहैक । देखि क' ओकरा मन कणनासँ भरि गेलैक । मनहि मन जेना बावल—'किन्ताक गप्प नहि बंधु, घर आंगन फेर बनि जाइत छैक, खाली आवश्यकता होइत छैक रौद्र-वसातकेँ सहैत जाइक.....' ओ चाह पीबैत रहल आ' मनहि मन आनखसँ होइत रहल, जेना ओ चिन्तित युवक सभ ओकर मनोभाव मुनि लेने होइक ।

भ' सकैत अछि, अइ युवकमेसँ कोय, हू-बहू वैह हो जे सात-आठ वर्ष पहिने ओ स्थल छल । ओ सोच' लागल ।

20 गणेश गुजन

समयक सङ्ग सबटा स्मृति, घटना नहि मिटा सकैत छैक । कतोक एहने स्मृति होइत छैक जे कहियो नहि छुटैत छैक ।

ओकर मन अनायास व्यतीतजीवी होब' लगलैक । तखन लगलैक ओकरा आयौ मे अतीतक ओ समस्त घटना, व्यक्ति वस्तु होइक आ' ओ दुःख-सुखक गण करैक मुदा मे आबि गेल हो ।

आब त' धरौक ठेकान नहि छैक । जानि नहि कए वर्ष भेलैक ?

सोसि पड़वा मे कनीक देरी रहैक । गामक वातावरणमे बाधसँ भूमि रहल माल-जालक घंटी आ' खुरक स्वर भर' लागल रहैक । बड़का चैर पर घूरसँ घूरा उठ' लागल रहैक आ' भगवतीक चितकार घर, तुलसीपीरा लग मजिली काकी बिबारी लेस चुकल रहथिन आ' भतसाकोठलीमे बूझि पजारैक उद्योगमे लागल रहथि । बजानसँ हाँटि क' एकछेड़िया कात मे दूटा तेना माटिक घर-आंगनमे अघस्पात । दूनु दुपहरियेसँ हुरान छल । दुपहरियामे त' भोज-भाल सेहो भेल रहैक । घरवासक भोज । थंडीक हरि-गर-हरियर झालरिबला पातक थारीमे चिकनी माटिकपूआ, कादोक दही आ' पित्तो-सिमाक नरंग, तिलकोड़ाक पाकल फड़क पत्तोवा.....परतल गेल रहैक गृहणीक सर्वाधसँ मण्डित सात वर्षक रजना, कपार पर, माटि-नाचिसँ सनापल ओझरायल केश लेने नोधारीक पुछारीमे स्थित आ' आठ-नी वर्षक जयन्त ! ओ घरबैसाक वायिधसँ चिन्तित, धारिपाने अपने डाँड़ केँ कसैत, पैद परहक माटिकेँ पोछैत.....'पैतोवा चाही ? हे, हृदये निय' । आ' एकटा पाकल तिलकोड़ाक बाल मुजंग फड़ पात पर ।

नोधारी सभ चल गेल रहथिन्ह, ओलक पातक पात आ' सिक्कटिक कारी-बैगनी फरक मुचारी ल' क' । रहि गेल रहल दुनु शिशु !

आगामि गंधक गोबर आ' माटिसँ नीपल-पोतल आंगन आ भिजने माटिक बावा पर, अंडोक खुट्टा पर दांगल नारसँ छारल कर्षिक चार । मुखगुआ गंभीर वस्तु-जातक व्यवस्था आ, कोठीक स्वान, बखाड़ी-नक केर व्यवस्थाक चिन्तामे निमग्न । धान बेसी हेतैक तेँ बखारी चाही । बखारी त' बजान पर फतह बना लेल जेसँक । बाक्केँ कहल जयन्ति जे नानी-गामसँ धएलगाड़ी पर बहुत रास बंस भेगा दिअ । केर खूब भवगूत बखाड़ी बनतै, अँध आ' बड़की टा खोपवाला बखारी । अइ बेर बड़ धान हेतैक.....

ओम्हरसँ रहिकावाली सोर पाईल अथव । आ' जासनक स्वरेँ बज' लगल,—
"रंजु बीआ, एतेक अन्हार भ' गेल आ' अहो एखन गरि छेलेमे लागल छियै ? वैह भौ खिचियाइत छथि । जल्दी चलियो" ।

दूनु तेना उरें सकदमस, सलें खेवाह-भुपाहमे मोने ने रहलैक कनीबको जे बन्हार भ' गेलैक । माँ आइ अबस मारथिन्ह ।

पुर्व पुर्व 03

जन्तु, आधे फेर काहि भोरे खन खेलायव । की ते ? जयन्त चुप ।

'बेस रंजु' । तकर बाद रंजु, रहिकावालीक सङ्ग अपना अंगना चलि जाइत रहल । जयन्त अन्हारमे ठाढ़ अपन छोटा-छिन घर-आंगन देखैत रहल । फेर सिधे परे समर लागल अपना दलान-दिस । जाहि नहि ओकरा आइ कतेक खिसिबैबिन्ह नाँ ? यद्यपि आन दिन कोनो घात नै खिसियाइ छथिन, तइयो आइ कती बेसी अन्हार भ' गेलैक अछि । भ' सकैत अछि खिसियाबिन्ह, 'अन्हार भ' गेलैक आ' अहाँकेँ अंगनाक बाद नहि घुरल एखन घर ? अन्हारमे कतेक साँच-बीड़ा बुलैत रहैत छैक ते होश नहि कनियो ?'

आइ जयन्त चुपचाप सुनि लेत । किछु ते बाजत । नहि त' फेर काहि खेलाइयो नइ जाय देल जयन्तक मुदा तैयो ओकर परर धम्कऽ लगलैक ।

माँ आइ चुप रहबिन्ह । ओ चुपचाप बैसथी परसँ पानि डारिक' पर-हाथ धोब' लागल । फेर छोटाकिनमा सीड़ी पर बैसी क' खयलक आ' ओछाओन पर पड़ि रहल । माँ आइ पहाड़ा सेहो पढ़' नहि टोकलथिन । जयन्त ओहि सूनि सुनि रहल आ' भरि राति सपनामे अपने छोटा-छिन घर-अंगना देखैत रहल...

भोरे निन्हा दुटिहहि आँखि नीडैत बीड़ल गेल अपन घर लग । पहुँचतहि कौड़ धक द' रहि गेलैक । ई की भ' गेलैक ? चारु मात पानिमें पानि । माटिक कतहु कोनो बेल्ह ते बाँकी । खाली उज्जर-उज्जर पानि । ते एकपेड़िया, ते ओ माटिक घर-आंगन सब किछु दहा क' चल गेलैक ।

जयन्त केँ ठक-मुड़ो लागि गेलैक । फेर किछु मिनटक बाद ओकर परर रंजुक अंगना दिस बड़' लगलैक — जा क' कहि दैक जे आइ भोज-भात किछु नहि हलैक । घर त' बाढ़ि दहा क' ब' गेलैक ।

ओहने एकटा बुढ़िया बाढ़ि एक राति भरमे सुतलि रंजूकेँ सेहो दहा क' लेने चल गेलैक घर समेत । राता-राती घर काटि क' जसि पड़ल रहैक पानिमे । तेकर बाद, बीच में कएक वर्ष बीत गेल रहैक बाढ़ियेक पानि जकाँ । जयन्त पैघ भ' गेल रहल । एकटा गाँवमें बियाह भेल रहैक । एकहि वर्षक बाद फेर ओहिना भयानक बाढ़ि आयल रहैक आ' ओकर पूसक घर खसक' दहा देने रहैक । खाली ओ दुनु प्राणी बाँचि गेल रहल । बाहिमे घर-घर करैत स्त्री आ' आनो बड़का टा प्रसन्न-आध सुनु, हमरा कमाय जाय पड़त । ओ स्त्रीकेँ कहने रहल त' चौकि गेल रहैक ।

कित' ?

'कलकत्ता । दोसर ठाम गेन्ह कोनो विशेष लाभ नहि । सुनैत छी ओत' बड़ जल्दी आ' नीक नौकरी भेट जाइत छैक ।' पत्नी मानि लेने रहथिन ।

4 □ गंगेश गुंजन

पत्नीकेँ एकटा सुन्दर घरक मनोरथ छलनि । जाहिमे भगवतीक चिनवार हो, आ' दुध औरक अलग चुल्हा आ' जौन बैसेबाक स्थान । चारमे टांगल पूर्वमे आवल लोक हो आ' जाकरी देल जंगला । ओलती में गाड़ल बक्री ।

जयन्तक परोधमे एकाकीपनक भय ततेक भलि रहलनि । पाढ़-कीड़ी जमा भ' गेल थीक घर ठाढ़ क' लेत, चारि बीघा जमीन कीनि क' घर बैसि रहत आ' कयल ठाढ़सँ कुसियारक लेती । कतेक रूँया होइत छैक । नौकरी त' मतलबे छएह । पाढ़-कैचा जमा क' किछु खेत-पघार बना ली आ' गामे पर गृहस्थी कर' लागी ।

मुदा जयन्त पत्नीक सोचलहेक अनुसार किछु नहि भेलैक । वर्षहु ओ रहि गेल कलकत्ता । रूँया सेहो कमायल । मुदा मामे-मासे स्त्रीकेँ किछु खास रकमक मनिआँवर करबाक अधिरिक्त किछु नहि क' सकल । वर्ष-दू वर्षमे दस दिन लेल गाम गेल । संताप-हीन अपन स्त्रीकेँ बोध-भरोस देलक आ' लटकल ओपशीमे बीसक नव पाहि-खुड़ा लगा क' गाम सँ घुमि आयल ।

'हे कोनो व्योत क' क' ईहेबाक कुसी दिया दिगीक । ते त' एना साने-साने खुट्टो बदलने किछु फल नहि' ।

तकरे इन्तिजाममे लागल छी किछु टाका जमा भ' जाय त' दुटा कोठली ठाढ़ क' लेब इहेवेक । ऊपर खपड़ो रहैत त' नै कोनो... पत्नी संतुष्ट भऽ गेलीह, भविष्यक प्रतीक्षामे । हालेमे भरि गेल छ मासक बच्चाक तकलीक हुनका कम भ' जाइत—नीक धिक । आव जे आओन तेकर भाग्य नीक रहतैक । पक्कामे रहत । ओकरा जकाँ वर्षा मे त' नहि भीजत ।

जयन्त भगवतिर बिता क' जाइ लेल तैयार । आव दिने कतेक बाकी ? रूँया-पैमा तनवा जोड़ि लेलक अछि जे माटिक मिलेबा पर पजेबाक देवाल ठाढ़ क' लिअए ।

ओकरा मनमे बसात जकाँ उत्साह भरि गेलैक । पत्नीक चिट्ठी अवलइए । अइ बेर जयन्तकेँ अवश्य भिरौम आ' दीघायु वेला हेतैक । ओकरा अबबाक समय तखन हेतैक जखन ओ पक्का घर ठाढ़ कऽ चुकल ।

ओ कतेको रंग-धिरंगक कल्पनासँ होइलमे बैसल भर' लागल । शरीर एखनहु धाकले रहैक, मुदा ओ सोच' लागल—मनुष्य प्रत्येक ओहल मुखकेँ बिसरि जाइत अछि जाहिसँ कतीको पैघ मुख भेटि जाइत छैक । तँ पैघसँ-पैघ कुछ विस्मृत भ' जाइत छैक, कारण कुलेक अनुपातमे ई संसार पैघ-पैघ मुखसँ सेहो भरल अछि ।

जाहक अंतिम पोंट लेत ओ बड़ प्रसन्न छल आ' रूँया जोड़ि रहल छल । एतेक वर्षक अनवरत परिश्रमक बाद किछु मासमे ओ एकटा घर बना सकत जाहिमे ओ रहत, स्त्री रहतैक आ' धीवा-पूता । आओर जकरा सुनबेमे कोनो बाढ़ि दहाक' नहि

शुद्ध मुद्रा □ 5

त' जयन्त' । ओकरा भेलैक; एघने पड़ाय गाम, आव असंकर नहि रह्य । गाँवसँ एतेक दूर परदेसमे...

पाइ देव' काइन्टर पर आयल । सड़क पर भीड़ लागल रहैक । सभक आकृति पर चिन्तायुक्त जिज्ञासा । होटलक रेडियोकेँ घेरने सभ ठाड़ रहैक आ' चुपचाप सुनैत ...अरे ई त' विशेष समाचार बुलेटिन बिर्कक आकाशवाणीसँ...! ओ साक्षात् भ' गेल आ' गुन' लागल । श्रोता सभक आकृति पर तामस आ, अभिमानक बेग्ह स्पष्ट रहैक । सभ कसो जेना साँसकेँ जालि क' ठाड़ रह्य । जयन्त कत्ती आओर आगाँ बढ़ि क' पुछारी कयलकैक । ओचहिमे एकटा सज्जन बड़ निपिड़ सन गारि देलथिन । जयन्त छे' अपना देश पर आकस्मिक आक्रमणक ज्ञान भेलैक । ओकरा कानमे प्रायः सामूहिक रूपेँ पढ़ल जाइत थारि ...इस बार सर्वादि कर दो रस्ताले को... पड़ोसी और मित्र देश का नाटक करके छुरा भीकता है प्रीठ में... कमना: मद्धिम होइत गेलैक । जयन्त स्वयं बड़ कोपित भऽ गेल ।

मनुष्य कहिया हएत मनुष्य, नहि जानि । मानुली स्वायेंक एहि बुद्ध-वृत्तिक विनाश कहिया भ' पाओत से नहि कहि । छोटसँ-छोट गप्पक लेल एतेक-एतेक मनुष्यक नाश ? एतेक लबाही ! जयन्तक शान्तिवादी प्रकृति एकाएक जेना पखरल दिवासलाइसँ सटि गेल पेट्रोलक टिन भ' गेलैक । उत्तेजनासँ ओकरा देखक लस-नसक सभटा शकती, प्रतिकारी आक्रोशसँ भरि गेलैक ...आब त' एहन परिस्थिति मे एकटा नहि समस्त घर-आँगन दहाड़-दहाड़ पर लगैत छैक...ओकर आँखि विचित्र भावसँ चमक' लगलैक । ओकर साँस बड़ी ओरसँ चलक लगल' । □

सडी

—'तोरा मनमे कोनो पछताया छीक ?' ओ पुछलकैक ।

ओकरा ठोरपर ओकर किछु मैही आ स्वादिष्ट स्वादक सूक्ष्म तह जको सटि गेल छलैक । ओ माथ हिला कऽ—'नहि' कहलकैक आ थिक्कन बिहूँसल । ओकरा अनुभव भेलैक जे भरिवक ई ओकर मन पतिअयवा लेल बिहूँसि रहल-छैक । असलमे ओ दुधसँ भरल छैक आ पछता रहल छैक । ई सभ दा होयब, ओ पछिला दू घंटासँ खावो सज्ज करैत रहल अछि । ओ सम्पूर्ण बुद्धिमत्तासँ ओकरा देखऽ चाहलक । ओकरा आँखिमे एक टा पारदर्शी तबित भरि गेल रहैक ।

पछिने ओकर कातेमे डाढ़ि भेल रहैक । ओ पुछने रहैक जे 'अहाँ एतऽ एकसरे की कऽ रहल छी ?' ओ अपनाकेँ नुकसनाक चेष्टा कएने रह्य । फेर कंठकेँ साक करैत कहलकैक—'हम यथार्थसँ हटिकऽ एतऽ आबि गेलहु' अछि ।'

—'अहाँ कोनो बात, अपन 'पुरना घर' मन पाड़ि रहल छी ?' ओ पुछलकैक ।

—'नः । मात्र एक टा प्रत्यक्ष वातावरणसँ बचवाक हेतु एतऽ आविकऽ ठाड़ छी । हमरा हृदयक अधिकोश भाग घड़-घड़ जरि रहल अछि ।'

—'अहाँक आँखियो लाल लगैत अछि । ओ कहलकैक—'अहाँ देखियोक अपन मुँह अपनामे । सत्त' ।'

ओ आपन मुँह देखलक । ओकर आँखि काते-काते लाल भऽ गेल रहैक । आ ओकर सुनोमे तँ बहुत पातर गिरा सभ प्रखरभंगेल रहैक । ओ घबड़ाहटि आ उत्तेजनासँ चुप रह्य । आ ओकर पंखामे चलिकऽ बैसवाक आपसकेँ कय बेर टारि चुकाव छलैक । पछिला दू घंटासँ ओ एके बातक उत्तेजनासँ परेगान छल ।

—'तोहर तटस्था सहज छीक कि बनीतरी—जानि-बूझिकऽ ? ओ कोनो आज्ञासँ पुछलकैक ।

—'अहाँकेँ की लगैत अछि ?'

ओ नहि बूझ सकैत छलैक । ओ नकार भऽ आँखि धुमा लेलक । हुन चुप छल । आब कोठलीमे गँवा घुमि रहल छलैक । तेना पीठपर झूलि रहल छलैक । भरि मोहलाक दुपहरिया कोठलीमे तेना समा गेल रहैक जेना ओ घर नहि, बली

हो। ओ खूब सम्मीरताईं खींसा रहल छल। ओकर-कान-बागल छलैक बरबन्धा पर। ओकरा चिन्ता बागल छलैक ओकर पर। ओ आँखमे कलन-वासन भोजि रहल छलैक।

—तुनु एक बीरारकेँ देखलक। केर बीरार दिस बेजस जातल। केर हँस जातल। केर चुप भऽ गेल। ओ ओहलोक अवाय बाजऽ लगलैक।

—‘अरे, किछु बऽछू!’ ओकरा जेना मन पड़लैक।

—‘बुझिये ते पड़ैत अछि जे की होयत?’ ओ असमर्थताईं बाजल।

—‘की होयत?’ ओकर स्वरक ज्यंग बड़ कठोर छलैक।

ओ कनऽ जायत, जेना ओ ओकर स्वरक भूझै पहि जयललैक।

—‘तीहर मतलब?’

—‘मतलब की?’ ओरेंमें एके हा प्रश्न छल—‘अहाँ कखन आयल। आबि नेलहुँ। बरा’। ओ कहलकैक।

—‘अयबाक की अर्थ छैक?’

—‘अहाँ कहूँ की अर्थ छैक? अहाँ आबि नेलहुँ। एहिमे की अर्थ भेटल?’

ओकर बात खूब ठीक छलैक आ एक टा टेकनगर स्थानपर चुप भऽ गइल छलैक। ओ अपन काछगछीकेँ अपना अज्ञानताईं सँधवाक प्रवास करैत रहल। ई प्रवास ओकरा अर्थ बुझास लगलैक तँ किछु बजवाक बात मन पड़लैक। ओकरा दिस ओ बहुत ठीकई देखलकैक।

—‘अर्थ किएक नहि छैक? बहुत छैक। तोरा की बुझास छोक सम टा ‘अर्थक’ आकृति तस्वाँ सफ-साफ बनिबऽ बीबीकेँ हाड भऽ जायत छैक? ओकरा रंग-रूप पकड़ैत गन्ध नहि लगैत छैक?’

ओ अकस्मात् गहमन भऽ गेलैक। ओकरा अंतर्मुख भेलैक। ओ पुन हृदय विचार पर उतरि जायत अछि। ओ बड़ बजला आ तेज छैक। गतिविधि बात धरल तँ हृदयस्थाने बुरा समय लागि जाइत छैक। ताहूमे बेसी काल आ नहि हटत। ओ बड़ अगत्यसे देखलकैक। ओ ओकरे दिस लँकल बेस सम्मीर आ उदास भऽ गेल छलैक। ओकर ई चेहरा ओकरा छू किबकैक। ओकरा गर्दन पर एक टा मोलजम पातर सोर सिहरि रहल छलैक आ शिर रहलाक बादो ओकर कानक झुमका हिलि रहल छलैक।

—‘रोजे ते बँह होयत छैक। हमरालोकनि बात करैत छी। की अर्थ छैक?’

ओकर एहि बलहन मन बालपर ओ चौकल। तँयो कहल बनल रहल।

—‘हम बेरोश छी। हमरा बर होयत अछि पूरक इच्छा सबसँ।’ ओ कुसी पर पसरि गेल। टाङ आंग पसरि गेलैक। पसरक आकृति ओकर तरवार छुआ

भेलैक। ओकरा नीक लगलैक। ओ ओकर बहिना कान देवालपर ओठछँत-ओठछँत करीब-करीब पड़ि जकाँ गेल छलैक।

—‘पूरक इच्छाक माने?’

—‘जेना बाह पीयाथ आवश्यकताक भी कहानी, चम्मक, प्याली छकनाक आवश्यकता होयत छैक ते? अर्थसाम्ये ते पढ़ने छलियेक।’

आब केर ओ गध चुन रहल। केर ओकरा समय काँक बात सोरि सोहलाक सुहरिदा बरिह रहल छलैक। ओकरा गधक ऊपर कानपर पीछाक हुनहुती धुमि रहल छलैक।

—‘किछु बजल मै की किएक?’ ओ अंतर्मुखि देखलकैक। गोबिंद ओ पड़ल जकाँ छल जे अशिला कर्कशो मिनट धरि कोनो मध्य-मंद नहि चललैक।

—‘हमर छापी प्रथमि रहल अछि।’

—‘तस?’ ओकर आबि, ओकरि आ ओरपर एक टा चतुर स्त्रीक मुखला छलैक।

—‘कतहुँ कम। हमरा सड़ो फलतु कम।’

—‘छातीक धक्कन बन्द कऽ जायत?’ ओ अपन प्रकपर एको रस्ती गहि बिहसल।

ओ जखनी ‘हँ’ कहलकैक। परन्तु ताबत उदास भऽ गेल छलैक।

—‘जस।’

—‘कतऽ भऽ जायत?’ अपन एहि प्रत्यक्ष ओ ओकर गति कसरि देखलैक। काहि, परम्, कारिमो दिन ओ बँह प्रत्याव कयते रहैक ओकरा सोझाँ। ओकरा चुप भऽ जाय पड़ल रहैक। सोरि कहरेमे एको टा तबान एहन नहि जात ओ अथवा ओकरा सब मल बर्य अपना जकाँ एकांत भऽ गेल कऽ तबान। बहर बेहूत बेकार अछि। ओ खिसिबलऽ मोलक आ हारि कऽ बीसि गेल।

—‘ओहि दिन तोँ आने कह्यो रह्यो’ जे कतहुँ बऽ चखू। ओ ई बात मनेमे सोचलक, बाजल नहि। बाजल एहि प्रसंगक अगिला अर्थ।

—‘कतऽ चलबे?’ ओ चौक गेलैक।

—‘अहाँ की सोचि रहल छी?’ पूछैत काँक ओ एक टा बाजल बुझीक अनुभव कऽ रहल छल ते ओकरा बुझलैक।

—‘हमर भाथ जरि रहल अछि। बहिला दू बँटल हँम तंग-तंग छी। हम जाड?’

ब्यंगसे ओ दोसि देखलैक। बजलैक किछु काल बाद।

—‘कतऽ जायत? सड़कपर, बीबी, अपन प्रिय रेशमो, कतऽ?’

सर्ग ॥१॥

—'हमरा घरमें ओकर जयबाक मतलब छलैक ओकर सर्वनाश । तौ जनेत छै ई बात जे ओ कुमारी छलि । हुनरा पर विश्वास करैत छलि । तखन ई विश्वास-कान्त नहि होइतक ओकरा प्रति ?' ओ कणाय आ ज्ञान रावतों बैरागन छल ।

—अहाँ घरमें एकसरे रहैत छी मे बात ओकरा बखन रहैक तथापि अहाँक घर जयबाक ओकर दुष्टता स्वाभाविक आ अधिकारपूर्ण छलैक । अहाँ तेल जे विश्वासबाद अछि से ओकरा बुझैत अहाँक प्रीति जगिनीक । स्वीकै पुरष चाहिएक मात्र ।

—'हमरा कानियो' दुख नहि । किएक नै हम ओकरा कहियो प्रेम नहि करैत रहिएक ।' ओ कहलकैक ।

—'जे किना बात । मुदा अहाँ जनेत किएक छी ?'

ओ मुझी निबुरा कऽ बैसि गेल । 'कोठनी ओकरा घुमैत बुझि पड़ऽ लगलैक । खिडकीसँ नीकटा मुँह ओकरा हुनकी भारीत बुझि पड़लैक ।

मुदा ओ आत्ममें पड़ऽ—पड़ऽ सल भऽ गेलि । ओकरा आँखिमें केरी बहुत तटस्थता छलैक । एतेक कालमें ई तटस्थता ओकरा अपरि रहल छलैक ।

उरकऽ ओ कोठनीमें चढ़कर देखऽ लागल । ओ ओकर पीठपर गड्ढर बेने देखऽ लागलि । हुनूक अनुभव एहि बातक रहैक जे हुनू चुप अछि ।

—'अज्ञान नहि चनू । वैमू कुर्मिपर आरम्भसँ । ओ झड़-झेड़में बाजलि । ओकरा दिस ओ देखियो नहि सकलैक । छाती ओकर इतलुक हँसीक खिलखिली कान में पैसलैक । एहिबेर ओ देखलकैक ओकरा । मनेन ओकर हुनू तरह्नीपरी चढ़लैक आ ओकर हुनू गाल समेत ओकर चेहरा हुनू हाथमें अछि गेलैक ।

—'अहाँ कलने-कल्पनामें जीवत छी ।' ओ गंभीरतामें बाजलि ।

—'हमरा बुझि एने कहैत अछि जे हम की करी ?' ओ खीजा कऽ दमनीय भऽ गेल । ओ मुदा विह्वल रहलि छलैक । ओकरा देखने जा रहलि छलैक । ओकर आँखि फेरी अछि नहि सकलैक ।

ओ टहलि रहल छल । कोठनीक बाह्र दिसमें ओ अपन अस्तिवक बेर दऽ रहल छलैक । आँखि ओकर स्थिर रहैक । एहि बेर ओ एक डेग घूमि कऽ ओकरा नीलकण्ठ । एकदम आधी बड़िकऽ ओकर कन्हा छलैक । ओ चुपचाप बैसि गेलि ।

ओकर बाँहि पकड़ि कऽ ओ अपना विश्व विधलकैक । घुमना कऽ गेलकैक । ओ ओकर बाँहि बन्धनमें रुच्छापूर्वक डीङ्ग होइत झुलि गेलि रहैक । ओकर माथ ओकर बामा छातीपर पड़ल रहैक । ओकर आँखि झँपा रहल छलैक । ठोर कोपल जाइक । ओकर तरह्नीपरी अपन तरह्नीपरी दबाव ओकरा नीक जकी अनुभव भऽ रहल छलैक । एक बेर चुप तेजस्व धधकि उठल छल हुनू ।

ओ चुपचाप रहैक । ओकरे देखने जा रहलि छलैक । आँखिमें कोनो प्रकाशित भाव नहि छलैक । ओकरा देखि कऽ मुसाइक जे ओ तटस्थ नहि रहि गेलि अछि । ओ चुपचाप अपनेमें चिंतित भऽ गेल रहल । कयरता आ विश्वासघातने ओ भेद होइत छैक, ओ सींचि रहल छल ।

—'को सोचऽ लगलहुँ ?'

—'किछु नहि । तौ को सोचि रहल छै ?' ओ सजामसँ जकी पुछलकैक ।

—'अहाँक सत्ते, वास्तविकतासँ बेसी कल्पना नीक लगैत अछि ।' बात बहुत पलतैक । ओ खूब बौद्धिकतासँ गति लरा कऽ कहि रहलि छलैक ।

—'सि मानबाक तोहर आधार ?'

—'अहाँक आँखि सम-रंग । ओकरे पटनामें होइत पड़ैक । घटना सभक सच्ची विवरण वा संस्मरण कि कल्पना नहि । घटनामें होइत हीन-विक अर्थवात चिक । चत ।

माथ झुकीने ओ चुनैत रहल ।

खिड़कीतें, ओकरे फाँके सन्धिमा कऽ पैतल चलाइ जहाँ चुपक प्रकाश कोठनीमें आवऽ लगलैक । ओहि प्रकाशमें ओकर मुँह उदाव आ चितित जागि रहल छलैक ।

—'तौ पटना रहलि छै ?' ओ सहस्रित, अवरोध भावनासँ पुछलकैक ।

—'जहूँ ।' ओ माथ हिला देखलैक आ चुप आँखिमें ओकरा देखवा उपवास करऽ लागलि । ओ की कनो की नहि चाहि दिशिमें बैसल रहल छलि ।

—'हम तोहर कतस छियौक ।' कहैत ओकर कंठ फिजित बाँझि गेल परन्तु ओ अपन घटाके बहुत दुखार कयने जा रहलि छलि । ओकर चेहरापर अङ्गुन उल्लास वा उत्साह नहि रहैक, ध्यान ओ विह्वल रहलि छलि ।

... हम सोरा कोनो तरहक छुटकाराक किछु टा आशा नहि दऽ सकै छियौक । तौ जे जनेत छै ।

—'हमरा छी ?' अहाँ अपनीक अपन बनाओल अन्धत काटि कऽ जीवन जे लखू ।

—'तोहर मतलब ?'

—'आब अहाँ जाओ ।' किछु सोचैत ओ हड़यडा कऽ बजलैक—'ओ कखनो, एखनो कोनो गच्छीसँ आँखि सरीत छलि—दूर परसँ ।'

—'के ?' ओ पुछि जेँ बसलैक मुदा सुरती संकुचित भऽ गेल ।

ओकरा कन्हापर गलत बच्चाक देख्ने कोनो संवर नहि छलैक । जानि गेल छलैक ओकर माथ आव एखन ओकरा हुलास नहि करैतक ।

—'कती ?'

ओ माथ हिवा देलकीक । फेर दोसर दिस देवडा लागलि । ओ ओंकार मध्ये मूर्खकीक । बदलामे ओ एकर तरहली-पांचो आडुरके देवाकड कोक अण धरि अपना हाथमे धरने रहलक ।

ओ आशि गेल । ओकरा धीरपर बहुत मूर्ख स्वभावक महि कहि सकवा ओंकार तह सटल छलक । ओकरा बुझाव पड़ि रहल छलक जे ओ उत्साहित अछि । मुदा, ओंकार बेग बड़ स्वरसँ आकाश-वाकल पड़ि रहल छलक । ओकरा भरिलक पर सभइत ओ सभ छलक जकरा भवत नानैत अछि ।

ई व्यवस्था दोसरो हीडलक तँयो, एहमे किछु होइतक को ?

अनिर्णीत ओ एकटा फटीयर दोकानमे चाह पीपऽ पेसि गेल । बहाक ओइ जाइत रहलक-लोकाक रेलमनेल सड़कसँ ।

ओ तेरी अपनाकेँ घटनाक क्षणमे ठाढ़ अनुभव करलक—घटना नै नहि । ई ओकरा लोक पूव खराब बात छलक । □

सपना कायम

एक टा नीजवान रहल । बहुलाकांशी रहल । जेना कि कोनो नीजवान देख करैत अछि । ओकर परिस्थिति-माने आर्थिक, नीक नहि रहैक । ओ खूब शोचल करैत । अपना सनक लक्ष्य धरि पहुँचवाक प्रयास मे दिन-राति चिन्तित रहैत रहल । अपना चिन्ता मे ओ लोक व्यस्त रहल जे ओकरा देखि कस फयो ई कोहि देल करैक—'ई नीजवान जाहि महि, कोन विचार मे भुतिवासल रहैत अछि ।'

टोल पहुँचवाक लोक ओकरा मार्ग एहन कोनो गण तोरैत छैक आ' बाजब करैत छैक ओकरा एह बातक पता नै छलैक । ओ बेसी-नी बेसी व्यस्त रहैत छल अपने आप मे । एक तरहँ बतहपनीक सीमा धरि ।

ओकर स्वास्थ्य औसत रहैक । काटी काया तेही साधारण । रहन-बहन अति साधारण जेहन कि मध्य वर्गक जनहीन कोनहुँ मुदा लोकक भंड संकेत छैक । ओ जखन बाट पर चलत तखना गंभीर आ विस्मयल लोक जकाँ । ओना ओकर सबटा व्यवहार आ' बालि-बालि एका टा सामान्य आ बुझनुक मनुष्य जकाँ रहैक, तँयो ओकर पंथीर रहवाक स्वभावक कारणे लोक अपना-अपना मोताबिक ओकरा विषय मे उठकरी बगौत रहल आ मोहल्ला मे किछु नै किछु बर्त्ता ओकरा दंड होइतहि रहैक । कउवन सतक छहानुसृति मे जे—'नू नू—' बेचारे कपटी शत्रुक बेटा एना भंड गेलैन तँ ओना भंड गेलैन ।" एहिना, किछु मोठय अवसरणों कोष सँ ओकरा विषय मे जाबल करैक, जेना कि कम पड़ल गरीब-समान मे होइत छैक । ओ महि निजि कोँ धेरोजगार जकर रहल । से साथ साथ के वृद्धक छलक ।

नीजवान मे एक टा विचित्रता छलैक । ओ सब राति एकै टा सपना देखैत रहैक । सुर्जित रहल समय पर आ, उठयो करल समय पर । एहि मे ओ कानिओ अनियम नै करल । मुदा रोज दिन एकहि टा सपना सपनाय । ई बात हमरो बहुत बाव मे जाकऽ पता लागल तऽ ।

हम, जे अहकि ओइ नीजवान दो मुदा रहल छी, ओकरे पड़ोसिय रह्यो आ मोन मे ओकरा देखि चिन्तित एक टा पैघ भावक स्नेह छलय । ओकरा हम खूब वृश्नुक चिन्तारक मुक्क जानैत रहिदैंक । सँ ओकरा वास्तव चिन्तितो रहल करी । यद्यपि ई बात छीक तँ हमहूँ नहि जानि पबिदैक जे आखिर ओ एना कियेक अछि

जैसे शोक सब ओकरा चित्त में कएक ठाम लऽ निर्यास सेहो कऽ दैत छैक आ ओकरा कारणे ओकर शरीर में बेचैन पहुँचैत हेतैक ।

संयोग से, एक दिन प्रातः में हम अपना कंठलीक सोझी में दशमणि करैत रह्यो । इन्हें रात-सवा सात बजैत रहल हेतैक । ओम्हर से ओ बुक आवि रहल छल अपन सङ्ग जालि-डालि में ।

जखन ओ लज आनन्द से देखला ते बुझायल जे ओ भाकल अछि आर एही लक्षण के प्रसिद्ध कोनो चित्त-किर में ओ राति सुति नहि सकल अछि ।

हम ओकरा आशोर लय पहुँचवाक प्रतीक्षा करैत रहलहुँ जखन ओ एकदम लज आवि गेल ते विमल भाव से प्रणाम कयलक ।

—'भोरे भोरे कहाँ चललऽ ?' हम ओकरा पुछलियैक ।

—'एहिना... कनो...' ओ अपने संशयित, संकोची स्वर से कहलक आ जाम खागल ।

—'बड़ हड़बड़ी में छऽ भाग ?' कियेक जे अपना दुनु भायें एक-एक प्याली बाहु पीबि ओ । हमरी दशमणि झपटि भऽ रहलए । हम आनन्द कयलियैक ।

—'हड़बड़ी कोनो विशेष नहि, परन्तु भाइयो, एकर कोनो जरूरत नहि एखन ।' ओ क्षणभरि ठमकैत बड़ निश्चयता से आपसैत कयलक ।

—'नहि, जरूरतक कोन बात ?' तो मुँह से अक्षरमें ओ केने होयबऽ । हम पुछलियैक ।

—'हूँ, से तेँ हम कहल को तेँखर भऽ जाइत छी सब दिन ।' ओ कहलक ।

सायत चाहु आयल । धुमू गोठन वीसि की स्वादि-स्वादिय पीछऽ लगलहुँ ओहि दिन । ओही दिन ओर बुकक बऽ किछु गहीर गण सब बूझवा योग्य भेल । ईहो सुमल भेल जे ओ सब राति एके ठाँ अपना सपनाइत अछि । ओहुँ राति ओ तेहुँ स्वप्न देखैत रहल कि ओकर पिता निम्न से खूब जाँर से डरयलखिन आ पिछिया-पिछिया नाकी देख उठि गेलखिन । बुकक निम्न दुटि गेलैक । निम्न ओक तखनहि दुटलैक जखन कि ओकरा सपना पूरा होयबे गेल रहैक । तकरा बाद तेँ खोजायल मने ओकरा मूलन धारे नहि लगलैक । निम्न तेँ भेलैक ।

ओकर सपना बिस्वहि में दुटि गेलैक ताहि बात से ओ खूब तमसयल रहल ।

बिता मामूली हुँजीक काज करैत छलखिन कोनो कपड़ान्तेक कतऽ । ओ सब पुरान डहल दशमनायक किरायन कोठरी में रहैत रहल । नूतन में, एत से किछु छोट सन हुकड़ी जड़ि क, पिताक छाती पर खसि गइल रहैत । तेँ ओकर पिता खूब ओर उबरा गेल रहलखिन ।

जाहि राति ओ अपन सपना संपूर्ण नहि देखि पवैत छल तकरा प्रात को भरि दिन खूब बेचैन, अनुत्पास लीशयल रहल । ई सब बात ओ बड़ इमानदारी से सुनीलक हमरा ।

ओ चाहु चोटि रहल छल, मुदा जेना खूब हठ भाव से ।

—'आखिर ओ कोन सपना छ ?' तो की देखैत छहुँक रोज सपना से ?

—'देखैत छियैक... (ओ किंचित रुकल)... देखैत छियैक जे घरक बार तंगार भऽ गेलक, बेलो फूल सब लाल दहे-दुह भऽ गेलैवे, बाबू माय दुहि रहल छथि, गरै-गौंस गरै गोंस, आ हमर छोटा भाब अपन कटलाही पोसी सब पर घसा लगा रहलए कानि रहलए जे ओकरा सबक ताहु बना भऽ रहल छैक, आ चोले से एकाटा खूब असह्यर लतामक नाछ छै, ताहि में बहुत रास कारिकर करल छैक लुछकल —

तकरा भइस्साक खूब ताहि टटा नेना-भुटका लोनावल आखिने देखैत छैक—'हुकुर-हुकुर मुदा तेँ चोटि पावि रहल अछि जे खा पवैये उदास भऽ जाइत अछि सब बच्चा... ओ सब भूखल अछि... फेर देखैत छी—कोठली से माँ गीत गावऽ लगैये...' रोज दिन ई सपना देखैत छियैक ।

—'फेर ?' हम पुछलियैक ।

—'फेर की ?' जेना ओ उत्तेजित भऽ उठल—'तपन पूरा तेँ होयबय नहि काहिहो राति ओक तखने दुटि गेल निम्न जे कि माँ गीतक भास सखबैमे लेल छल । हमरा स्वप्न में ओक गीतक बड़ प्रतीक्षा रहैये । हमरा माँ भरि जीवन्त-कहिमो कोनो गीत नहि गाबि सकलए ।'

—'फेर ?' हम पुछलियैक ।

—'फेर की ?' जेना ओ उत्तेजित भऽ उठल—'तपन पूरा तेँ होयबय नहि काहिहो राति ओक तखने दुटि गेल निम्न जे कि माँ गीतक भास सखबैमे लेल छल । हमरा स्वप्न में ओक गीतक बड़ प्रतीक्षा रहैये । हमरा माँ भरि जीवन्त-कहिमो कोनो गीत नहि गाबि सकलए ।'

कहैत-कहैत ओ जेना भाकि गेल ।

ओहो काल धरि ओ लुपान बेलन रहल, फेर एकाएक अकसीच करऽ नाकल—'नहि जाबि कियेक, हम सत्ता कियेक बेचैत छियै ?' ई बात ओ बड़ बेचक जस होय कहलक । जेना ओ कोनो अपराध करैत अछि जे कि ओकरा कथमपि नहि करवाक चाही ।

—'तेँ उदास कियेक होयत छऽ ?' सपना देखब किछु खराब बात तेँ नहि छैक गुणारक पहान-भटान लोक स्वप्नदर्शी भेल छथि । चिन्ता कवीक ?' हम ओकरा अपनल से बुझलियैक ।

—'नै, से बात नै ।' दुख ई होए जे हमरा स्वप्न पूरा भइये रहल छल कि दुटि गेल ।

—'कोनो हतै नै ।' संभव छैक आह से पूरा भऽ जाब ।' हम आश्चर्यजनक देखैक ।

ओ क्षणिक रहल । फेर उठल, प्रणाम क कऽ चल गेल ।

थीक दोसरे दिन भोरे-भोरे ओ बिहुँनीत पहुँचल आ उरखाइ सँ बाजल-
भाइयो हम अपन सपना पुरा देखल आइ। आइ हम मोक मोत सुकलहुँ आ नेना-
भुइया सबको भारिकेर खाइल देखलियै।' कहैत काल ओकरा मुँह पर दिगल हर्षक
भाव पसरल छलैक। देखबा योग्य।

ओइ दिन ओ नेना माक एतने अनुभव करवा हमरा जन आवल रह्य आ
अमोरा सँ उत्तरीत रोइ जहाँ जखि गेल रह्य।

फेर हम ओकरा विषय में सुनलियै जे कलहुँ सँ—कोमो शहर सँ अपना बाबू
के एक टा बिट्ठी लिखलकिये जे ओ नीक अछि, किता नहि करै गेल। ओ एक टा
कोयला खान में मजूर भऽ गेल्य।

एहि समाचार के सुनि कऽ हमरा सभसँ पहिले मोन बड़ि गेल, कोयला खान में
अहाल भेला सँ पहिलेक ओइ पुष्पक स्तरत गोर खोम्ब देह। ओकर रंग तँ कोयला-
कारिख पर बजोने जकाँ छिडकीत रहैत हेतैक...

मुदा हमरा ओकर स्वप्नक चिन्ता रह्य जकरा विषय ओ किछु ने लिखने
रहैक। ओइ पुष्पक ई स्वप्न तँ कोमो गंभीर कनोविषयके जाति पाबोत, हमरा
सत बोधार्थ लोक खाली एही चिन्ता सँ भरल रहल जे ओकरि ओ एहन स्वप्न कियेक
वेचन करैत अछि ?

पता नहि आब ओकर ओकर पड़ोसी सब ओकरा कोन बखरि सँ देखैत छैक।
हुनका लोकनि केँ कहैत आवथी अबैत छति ओ पुष्पक ?

ओही दिन में कहियो एक बेर भोरे ओकर छोटा भाइ हाथ के एक टा
अलमुनियोक गिलास केने हमरे दिय सँ जा रहल छलैक त हम ओकरा सोर कपलियेक
आ पिता आ भावक विषय में पुछलियैक।

भावक बिट्ठी सँ बजलये मुदा ओहि से अनन्य पते ने लिखलखिनहँ ओ। बाबू
कोन ठेकात पता पर लिखबूनि किछुओ ? आइ कालि छूष भोर दुखित छथि बइल।
“ओकराओ दुष्टि नैबनिहँ” ओहि बड़काक अखि तोरा गेलैक आ चर जगि
गेलैक।

—‘हम ओरा संगे चरबऽ सीहर चर। तँ कतल जा रह्य छ’ एखन ?’ हम
पुछलियैक।

—‘आथ पाव मायक दूक ताकऽ बाबूक बारी।’ कहलक आ आभाँ बलि गेल।
हमरा ओकर पैस भावक स्वप्न मोन बड़ऽ लागल जाहिने ओकर पितर बाबूहि रहैत
छथिन।

हम पूब अवस्था सँ प्रतीक्षा में रही जे ओ छोटो जखी दूध लऽ आपस

बाबय। हम एम्हर ओम्हर बलैक-किरैक काएक भिन्न विता गेलहुँ ओहि दिय तखन
केम्हर सँ ओ छोटो अबै लेब रह्य। कहि जाति एतेक बेरी कियेक भेलैक ?

आ कि ताबत ओ अबैत देखल गइल। ओ खूब आस्ते-आस्ते आवि रहल
छल। एहन मन बुझावत रहैक जेना ओ अपना घर दिस ओबखिने न चाहैत छै।
मुदा बेगोने बेगे अबैत ओ हमरा जन मूड़ी खसा कऽ डाढ़ भऽ गेल। हम देखलियै आ
पुछलियै—‘बेटलऽ मायक दूध ?’

ओ विवशता सँ मूड़ी झिल्लिक—‘नै।’ गिलास खासो रहैक। तकरा बाबू हम
ओकरा दिस तकवाक चाहल नहि कऽ सभलहुँ। मुँह दोसरे दिस केने कहलियै—
‘कोनो बात नहि’।

—‘बलऽ आइ तोहर घर देखि ली।’ हम कहलियैक आ ओकरा गड्ड भऽ
गेलहुँ।

भाब देखियो, ओही दिन एखार रात्रि कोयला खानक ओहि भासाबू
हुँबटनाक विषय में समाचार सब छल रहैक। जाहि में बहुत रास खान मजूरक
मनुष्य आबका बचल जाइत रहैक। आ हमरा संझो पड़ल पुष्पक रोपी बूढ़ पिता
जाहि निरीह ओबिबे इनरा दिय तकने छलाह में तेहन अनन्य भावनाक जहूरि
छलैक जे हमरा लेल एकदम बज रह्य। हम तकरा बखरि नहि सकल छी। मायक
भास सँ कोयलाखान सब से ओइ नोजवान मजूर केँ ताकि रहल छी—अब ओइ
किरायाक कोठनी में आगरा नहि गेल छी।

आब सँ हम खूब साफ-साफ अनुभव करैत छी जे सब किरायाक कोठनी में
मृत्यु मुख्य जीवन जीन हार लोक सहोदर भाग होइये।

ओ हदर भाव अछि। □

एगारहम चिन्ता

प्रिय भाइ साहब

आज खेत छी जे संस्कार नीकेना होयब । हम एकटा खुब संसदिय काहसे, (अर्थात् ओईसे खुट्टी फमवाक लेल) बहुत दिनसे पदया जाइत चाहि रहल छी, किछु त परिवारी ओझरीहटि आ कुछ-खपति, आ बेतो 'नौकरी'क व्यस्तता, ते कय-कय बेर कार्यक्रम स्थिर भऽ जाइत अछि, फेर अने इमामर पहुँचि जाइत अछि । लखन, सोबैत छिएक ई पदया यावाक कार्यक्रम बुझाइ जे कय मास कि वर्ष रहिते बनीने रही । ठीक छै । फेर बनायब । एहि फेर कार्यक्रम बनाविब बला बातवर सत्ये बुझाब लगैए जे इमर कयस तीस वर्षसे, बेसी भऽ गेल । एतबोपर डीक छल, मतलब एतबे मानि लेने । परन्तु कहाँ ? बुझाय लगैए जे एक टा हए व्यक्ति—तीस वर्षक पुरा 'बेल' बनि गेल छी आ 'कतहु' जयवाक (ओजना पुरा करवाक) कार्यक्रम बना रहल छी आ तीस वर्ष लेनि गेल छी ।

कोनो एक टा मनुष्यक, तीस वर्षक पुरा 'बेल' भऽ जायब कहल गम्भीर व्यधि भऽ सकैत छैक एकर कल्पना जे, कि अहाँ एही संसारक लोक छी, कऽ सकैत छी । नहि जानि अहाँक जीवन-एकतीस वर्ष कहल दशक आ बढिण्ड लगैए ई बात हम इरायबे कलमे निबि रहल छी । बहुत दिनसे अहाँ नहि दिखलौहें भरिदक किछु । नहि ते । किएक ते संवादक समटा माध्यम हमरा केले खुब गड़बड़ भऽ गेलैए । यद्यपि हमरालोकनि आयसो अंतरे—'कतुअह-दसमियाह' छी । नाने ज़ारीख गनैत रहैत छी आ दिखी कि पदया कि भानतपुरमे नौकरीक सन्ध लेपैत रहैत छी । संभव छैक, अहाँ दिल्ली गेल, बिनोद जी बुनहा किया रहिको लेल । इधरसि पिदावत आ भीन भाइ कोइलख लेल...

मुदा कोनो 'दसमियाह' भावुकतामे नहि, एकटा तीस वर्षक वयसक लोकक नानसिबतामे एहि पक्षपादक पैपी लगल गेल ।

गुम्वरत शहराब वहुस आ व्यवस्थाक फलस्वरूप आशावाय मे खुब शहरीभाव ते वर्षक वर्ष जीवि लेब हकरालोकनिके आवि गेलय आब । हमरालोकनिके मुदा हमरे मामक 'खेतगांवबला' बरहीके नहि, जकर दरबजानपर नित्य भोरसे हर रातीका मस्मति मे रचन-बसिवा ववरव चालु भऽ जाइत छैक... 'खेत' जे कि कहलहुँ 'हमरालोकनि'

के, ते एतऽ प्रयोजन एतबे । अनितु... केवा, वही ई वृत्ता रहल अछि, एहि पाँती आरे लिखैत कोल, जे प्रयोजने की ? ई बात बहुत 'ठार' इंगसे ते ते वृत्त' मे कहल जा गेलैए । जखन देशीय संदर्भ मे समग्रतासे समाजके देखवाक उपक्रम करी ते वैज्ञानिक होयब अपेक्षित कि दार्शनिक होयब, कि समाजकारणी—अर्थशास्त्री होयब कि राजनीतिज्ञ कि कवि-साहित्यकार होयब अपेक्षित ?

हम जनैत छी, एकर जवाब देब थहाँक वास्तवता नहि । संभव छैक, एतबा संघटित भऽ कऽ एहि प्रश्नके केहिहि जे होए अहाँ । किन्तु ई मायब हमरा लेब बहुत स्वाभाविक आ आवश्यक अछि जे हमरा सँ एहि प्रश्नमे अहाँ हमरा सँ छी । आ, हम जे कि मे मजत छी ते ई पय ।

बेसी मैथिली समाजोत्क अहाँके (जब-पुरान सभ) समयवर्गीय नागरिक सामंजस्य-जीवनक कुशल कथाकार कहैत छथि आ ई अथालोकनिक समाजक, ऊपरसे टरल-तरल मुदा भीतरसे हाहाकार करैत दिन-रातिक झुकम्पी सत्य छैक जे एतबो एकटा हमरा अनुभव भेलए मे लिखि रहल छी । एकराकथा कहबैक कि समाजक कोनो एक टा व्यक्ति, नहि कदब, मुदा भेन मे कहैत छी । कहिते नहि छी, इच्छा रखैत छी जे अहाँ एहिपर चाही ते किछु लिखी—अहाँ अपना कोशलसे एहि स्थितिक समन्धान-कथा कही । घटना ई अछि जे ।

हम पदया आयल छी । आरु सोल बजार गेल रही, काँजे । आब फलेक व्यसन आ सौस-रमनगर भऽ भेलैक अछि छोटी स छोड़ गहरणे, ते ते जनिने छिएक ई ते पढने निक । ऊपर मड़कक विजयी-अर्थात् प्रकाश आ नीचे दुनू कल घोट, फटफटिया आ लोक सभक भावमभाव । किछु पैल जनिहिएर हम । लखत देखलियेक जे श्रीमती अंजू भरिख ओकर भतीजी वर बहिन-बेटी आ ओकर छी वर्षक बेटा एक कल घटे मड़ कले आबि रहल छलैक । बेटा कले बैसिए अगती गुलाबल । मड़क बीच मे बड़का हम कपके नाकनातमे लारी उज्जर रंग रंगि कऽ बसा देल जाइत छैक, ओ छोडा एकबक कूचिकऽ ताहीपर चडि गेलैक आ नाक-माने श्रीमती अंजू ब्याकुल भऽ कऽ चिचिवा जकां उज्जैक आ दोड़िकऽ बेटाक आहि पकाड़ि पीचो जामनि मड़कक नाव दिस । ओकरा जतमे जान अगलीक सेना गाड़ी-नीकां बेटा पिचाइये गेल होइक, आब पॉलि गेल होइक । मड़कक व्यसन आवा जहाँमे किछु असंभरो नीहि छलैक ।

ओमेनी अंजुका एना चितित आ ब्याकुल भऽ जायब खुब स्वभाविक छैक । हम ओकरा बहिला पाइह वर्षसे जनेत छिएक जखन ओ वयानन्द स्कूलमे अठमा कि बीमा कथानमे पढ़ैत रहल । अठमाकी नील कुर्ती, उज्जर मलवार-ओइसी आ गुला मोजा पहिरिकऽ स्कूलक बस पर चडिकऽ जाय-जाय ! नाथ बड़ मातैक, भाव-भावजि गेहो । पाछा भरिख किछु परिवारी विषयन सभ भेलैक । भाइ-भाउजि साथ सँ फराक ।

आप भरिस्तक रह्ये नहि तहि करैक । पाछी माय कि भेलैक से नहि कहब, भरिस्तक मरिये लेलैक । मुदा भरिस्तो कयनी ई बड़की बेटी ओतऽ । बरत जीवनक अन्तिम दिनमें ओहि बुढ़िपाके अपन बेटी पुतहुसँ गिराक्षित भऽ कऽ एहि कोरपच्छु अंजुके लऽ कऽ बेटी-कमाय ओतऽ आविवाह रहऽ पड़लैक । हमरा ई बात नीक जकाँ बूझल अछि, एही डेरा में अंजु कालेजोमे पढ़लक । सामे बहिन-बहनोइ आ बहिन बेटी-बाहिन बेटाक सङ रहल । पाछी एक दिन कसैक दिनक बाद, एहिना कोर रोड पर जाइ चाहत रही तँ शरीरमे एक खूब रहना-पुड़िना गुन्धर साड़ीमें छव-हुक सन करैत रिकबापर बस जा रहल छलैक । विशेष बात ओकर स्वस्तिस्वक छलैक-पय सन घोषा । घोषाक जड़िमे खूब टटलत बेसी फूलक बेसी लियदस । भरिस्तक कर लगे शिनेमा देखऽ जा रहल छलै । कोर रोड पर ई एक टा नीक रूप छलैक ओकरा सारै, जे ओकरा पहिला रूप वर्षेसँ बनेल छैक ।

बहुत दिनक बाद उही पता लागल जे श्रीमती अंजु हमर एकटा भाभीक सह-पाठिनी । ओ हमरा कहलनि, आव अंजुके निबड्व कठिन छैक । अंजु अपना बहिनक ओतऽ पुरि आवलि अछि । एक टा बेटी छैक । अतहु कोनो स्कूलमे मास्टरनो बसल जाइत अछि । एम० ए० राजनीति शास्त्रमे कयलक पढे विश्वविद्यालयमें । भरिस्तक बी० ए०० लेहो । मुदा भेटैत नहि छैक नोकरी । हम भाभीकेँ एकबेला सवाल कयलिन—“ई बात हमरा आइ धरि बूझमे नहि आबल जे अंजुका (हमरा अंजुले कहब नीक लगैए) अनन बहिनोइ सङ किएक रहैत अछि ? विवाहक बादो बहिनोइ नगै रहबाक की मुक छैक ? अहांक तँ रुखी अछि, कहू तँ !”

भाभी कोनो जवाब नहि देलनि । खाली पैहू जे ओ लड़की विचित्र छैक । ओकरा मदति होवबाक चाहि । बेटीकेँ कोनो ना बड़ा-लिखा रहलिन अछि । अति छैक कहारन कोनो ‘विजनेस सेल’ शिटीमे ओकर अपन कारबार छैक । लेकिन सम्भव तँ हुनू गोटेमे रहै छैक आव ।”

—“बोप ककर छैक ? कोनो जरूरी तँ नहि जे अहांक निब अछि ते” एकर बोप नहि होइक ?”

—“जि हम कहैत छी ? मुदा बरो कोनो छास रहि काहू लेत छैक ? आव तँ इ वर्षे भऽ लेलैक । एक नहरमे रहैत...”

ताही अंजु दऽ पहिला दिल्ली-बाबामे भाभी कहलनि जे आव एक प्रकारसँ छैक छैक । अंजुकेँ आव पढनामे नहि देखि सकबैक । आथ ओ पढना छोड़िब चब गेल । कलजेलैक, ककरा रुठ गेल, किएक गेलि ते नहि जानि । हम तथापि जिद कयलियनि—जे “अहांके ईहो बूझल होइत जे कतऽ नेलस ।” मुदा ओ अनतिमसैत

कहलनि जे—“आत्मनिर्वाणर बिस कतहु...” मुदा आव ओ जरूर पहिला जीवनमें निवृत्त भऽ गेल होइत । एक टा नव-जीवन होवैक । सभटा नोडि-काटिब गेलस ।

—एकर मतलब तलाक भऽ गेलैक ?

“तहि ते कहाँ बेचैक । एहि अवसरे निवृत्त जे आव ए जीवनमे ओकरा अपना बहिनोइक ओतऽ केर मुक्तिव शरण कांइ लेबऽ पड़लैक । अहां कल्पना बऽ सकैत छै, ई लेबऽ भवावह छैक संज नमाजमे एकटा विवाहिलाक आपना बहिनोइक ओतऽ धनवासी बनल ? किछु नहि । अहां लोकनि किछक नहि, शेषक नाइडि ।”—ओ एहि अन्तर्गतक संग चुप भेल छलीह ।

—“मुदा कपड़-चला, रहत-सहैत तँ एकदम राजकुमारि जकाँ सजीत रहैत । में केर कतज ?”

—“कहिया छलै छलैक । बरो तँ पुजी-पाटीबला लोक छैक ते । मुदा आव नहि । आइ-काहि नहि । केर आव ते ओहो विदमे खतम । भल कयलक । हम तँ बूझैत छी जे ई निर्णय जीवनक अन्तिमिच्छा, संघर्ष आ अन्त्याक विरुद्ध तत्वा-कथित वैवाहिक संबंध विषयमे ओकर अपन ई निर्णय खूब ठीक छैक । ओवि ते सकल । बहिनोइक ओतऽतँ नहि पुरत...” ओ अनन मन एकटा शुभेच्छु लखी-जकाँ सोन होइलनि । जेना घोट कर नाव कानि गेल हो...”

आ पैहू एतहिसेँ हमर ई विद्वता, अंजुकेँ, समझैक, जीवनक विचारक ई छिरला चुक होइत अछि ।

हम एहि दुआरे नचार भऽ गेलहुँ लिखबा लेख जे ओ माने श्रीमती अंजु (जकरा हमरा अंजुना कहब नीक लगैए) कोर रोड पर ओही दिश जा रहलिन अछि । स्वस्त ट्राफिकक जनमारा छहरामे अपन एक साथ-अनधी बेटीकेँ बलवैत ।

एहि बेरक दिल्ली यात्रामे भाभी कहने रहलिन जे आव सँ अहां रोव कि जानिसे अंजुकेँ कोर रोडपर जाइत कहियो नहि देखि सकब । ओ नव-जीवन लऽ कऽ नहरसँ आत्मनिर्वाणर बिस कतहु चल गेल अछि ।”

मुदा आइमे सोम केर श्रीमती अंजुला कोर रोडपर ओतक रहियार समयमे ओही शरै जा रहलिन अछि । हमरा पहिला कहोक वर्षेसँ बूझल अछि जे ओम्हरे ओकर बहिनोइक चर छैक । अरुत ओ केर ओतहि जा रहलिन अछि ।

ई अवसरे हम किएक लिखलहुँ अहांकेँ तकर बहुत कोनो ठोठ व्याख्या मतमे नहि सकि । मुदा, लिखलहुँ ताहिमे एकटा मानसिक आधार आ जरूरत ई अवसरे लागि रहल अछि जे मैथिलीक समाक्षीकथण अहांकेँ आधुनिक मध्यवर्गीय नागरिक सम्पत्त जीवनक कुशल कथाकार मार्गत छकि । ई घटना अहांक जानकारिमे पहिबऽ अपन

कोन प्रकारक स्वरूप धरत से नहि कहि । जागी अहाँ । मुदा एहिपर हूब कोनो कथा नहि सोचि रखल छी ।

आर करीब करीब ठीके ।

हँ, एक टा पत्र भीम भाइक नामे संलग्न अछि । भेटि जाइत हुन्का । डाकक दोष कि हुनर पता-देखनाय विवेकाय, केँक टा चिट्ठी नहि भेटलन्हि । ई पत्र जरूरी, तँ सोसर डाकपिन अहाँकेँ वताकऽ भविष्यमे होवऽ चाहित छी ।

इति अहाँक

भीम भाइ,

आम तँ बुझाइत अछि जे पचाचार पर्वत करब परामर्श । एतहुँसँ कौनो आप्त लोकक चिट्ठी भेटैत छैक तँ लोक बुझामसँ विफाक काहूँए आ संवोधनक बाद पहिल पाँती जे पड़ैए तहाँसँ 'कुजल-शेम' मुक्त भऽ जाइत छैक । मतलब जे "तोहर भीजी" बहुत दिनसँ दुखित छथि पहिने जेक जे कार्यक एतेक राख भार आ एक्के अर-आउतक सजीव परिधिमे एतेक राख धीरा-पुता नकर केर कुज-रोग आ अभावसँ दशापत-दशकलन कर बेर लोक अनेरो रोगी बनि जाइत अछि । तेँ मोलिकऽ मार्गण्डेय बन्दर तेँ देखीजियनि । केर सोचबहुँ जे हु मात भाव लग पठा बिबिनि, वेहमे रोग होयनि तेँ नीके सऽ जयतीह । दवाई अहाँ धरि सम्भव जेत सऽ देखियनि । मोनमे छल जे महा लग भेली हूब, सब तरहेँ नीक रहति । कसो कम वेहमे तँ खुद आराम होयति । नीके भऽ जयतीह । अपना, बेटु नामसँ नकरी, नकरीसँ नाम करैत रहैत छी । अपना मोन भीके नहि रहैए । तहिपर मुला-निन्दुक चिन्ता । बिन्दू तँ बूझि पड़ैए जे हरवाही करता । एको पाह पड़ैमे मोने से दीन छैक । नरि-नीधिः कऽ भाकि गेलहुँ । कऽ टा प्रलोभन भऽ कऽ भाकि गेलहुँ जे, ओतऽ पुता अतऽ नीक जकाँ पक्ष करऽ, ई अशु कीनि देवऽ, राज स्कूल गेलवारऽ । मुदा व्यर्थ, कतबो मारि लगीत छैक लीयो केर सडि लेन जे जायब करिहूँ सँ । मुदा केर बहू । साली खुरी-कोवारिमे देस बेस रगल । बाड़ी भोटो कि मेरवाइकेँ अकलो ई मे पोखरिसँ पानि बटवीकेँ श्रेष्ठ मोन लगैत छैक । पचाइक तमपर अस्सी मोग पानि पड़ि जाइत छैक देह पर ।

शामक बातव्यवस्था भीक नहि । अन्तेमे अमहोयोग आ अत्याय । तेँ निन्दुक भविष्य की योजना नहि अछि । खेतिमे करिधि । मेहो कथी पर ? जे जवा-भात अछि तहिपर परिवार सेवाय ? आर जे बु बौधा भूमि अछि तकर आदि सभ, एक कथमे रहैत छी तखन तेँ कहुना कऽ घर-गृहस्थीक व्यवस्था करैए आ सोइहली खेतीपर भऽ

जाय तँ लोक धायत की ? जतबो छैक मेहो साहरिकऽ उपरि तखन मे ! वेह एह बेर एखन धरि जहाँ नाँह भैलैक अछि । कनेको सभ तरैत छैक तेँ फायलपक कागज जोड़ित-जोड़ित चिन्ता करऽ लगैत छी जे केतमे पानि लागत, कोना हर-हरवाइका व्योत कऽ कऽ ताक पर सब टा कऽ सकब । मुदा वेह रोवी । पानि नहि । की होपनीक एहि बरे लोकक ! एखन धरि भरि कामक रोपनी समाप्त भऽ जाइत छलैक । खगता सब तेँ नहि मानैत ! पितरपक्ष मुक्त होयनीक आब । रोग ओइ-वेहव तौघारी होयबक चाही । जे बड़ दूर भऽ गेलाह, खैर, तनिक छिपि छोड़ल जा सकैए । दादाजी कि दाइकेँ तेँ नहि छोड़ल जयति । भऽ गेल, कहु नैलक भाव मधुवनीमे बीसह टके भऽ गेलैक । बाउर कि शानि किछु टा तेँ धरसँ नहि निकलनिहार ! दरखवाक ओखती लगक ओल उपा-डियो तेँ तरकारी-तमनक इतिहास नहि भऽ सकतैक । तोहरौध तेँ एहन नहि चल्य । राजमी लगचियलैक । इष्टदेवताक पूजा कि आने आत खर्च होयनीक । कतबो होयब ? श्रीधाराताक सब बरब हे नहिथो होयब । मुदा अन्त्याय मधुबनी ! कतबो होयब । किछु माथ काज नहि करैए । अवसाथर नेमकेँ छरीने रहौ, कोन-कोन धरानिमे ओइत महेय खतक इतिहास कयने रही बलाटसँ । भऽ गेल पछिने कर्तव्य सुध लागल । इलोडी-टाटका आने सँ वाट छैक । रागमे करवी पर्वत कुलभ । कबोकेँ तरहेँ कहिकऽ लक सौधारिवेकल हियाय किनाय लताकऽ टाह अन्तवाकऽ वेरवीने रहौ । खगम । ओइने वेपई होइपर । करी तेँ कतऽ तेँ करी । सभसँ तेँ केहूनी मानसिक कुज-आधि लोक खेपि सदैए कोटीमे जाउर रहै तँ । मेहो तेँ छैक तेँ । मुहुर तेँ जाबो नैलगनैक । नहि लगनैक तेँ फेर एगवे परमाइमे एतेक टा अइवाल चल्य कोना । एही सभसँ मोर्चत-मोर्चत मोन बड़ भाकि गेलय । नहिमे साइकिल सँ रुकरी चल जाड, किछु बसयो तेँ कार्य । आव साहमे तेँ होइत अछि । खैर, इष्टदेवताक जे इच्छा होयति मे होयनीक । कनेक माथ धनु ?

एम्हुर तोहर भीजी दऽ तार आयल जे मोन खराब छनि । जाकऽ भागे लऽ अन्तियनिहै । जेरखे सब टा जात भेलनिहै । लखमे तेँ मेहो । मुदा लाक-लाक किछु रोमे तेँ कायम करै छै शायद । एम्हुर देहक स्थिति ई जे ऊबेर । एक डोप पोषित जेना देहमे रहि । भलम-भलम पर्वत समेतकेँ करऽ पड़ैत छैक । ओकरा घुंते समूह तेँ छैक मुदा सहाय की ? नहि देखल जाइत छनि तेँ दधरल-दधरल तायत छथि भानसमे । ई क्रोश चलय आ अनेक दिन जे नहि जहाँसँ । मोन फेर-घोर-घोर अछि ।

तेँहुँ कोनो चिट्ठी तेँ लिखलऽ । कोना छैक श्रीधारा-पुता सभ ? बीआनिकेँ मुनियनिहै जे बड़ कमजोर भऽ गेल छथि अचो सभ छै । वेह । तेँ ओतऽ तेँ सुभीता होइ, सबकेँ नीक जकाँ देखाकऽ छैक सँ दवाई कराबक चाही ।

अपने ती, सेहो सुनतीं जे बीमार रहेह छै । वैहपर अन्न देवाक चाही । बीमारीके अन्विषावक नहि चाही । हमरा लोकनिके हेहे तें पुगी थिक । पैहू जे छवि पड़ल तें परिवारे थिकि जाक ने ! तें अन्तवहक नहि, कोनो लोक डाक्टरसे जान कराक सबाइ खाह ।

कलकत्तावासी आबि रहल छैक । सब बच्चासभके लऽ कऽ मास जाबिजहऽ । मै छुट्टी होअह पड़िबे तें कम तें कम निगा पूजा धरि तें अकरो सब क्यो आबि जाइ जाह । दीपा-पूजासभ निगा पूजा देखत । बान्सी काकाके ई सब जरूरी लगैत छलन्हि जे परिवारक लोक धरि सबे कतहु रहल लोक-चाकरी, मुदा निगा पूजा धरिमे अवश्य उपस्थित रहल इच्छावताक पुजामे ।

चिन्ता नहि करिहू । कहिना धरि अब जवजह, तेलिखि दिहह पहिने । तोरा बिट्ठी लिखवानि किएक एतेक आलस होइत छह, नहि जानि । एतेक-एतेक दिन धरि लोकक कुशल-अँम नहि जानि सकल । पर लोकके अतेक चिन्ता होइत छैक मै बुझबाक चाहिये तें ।

ई पत्र हमरा गानसी हमर छोटका भैयाक अछि भाइ ।

माने हवारी गाम अछि । एक घर छलल । माँ छल्लि, पिता छलल । से सब था आब समान अछि । अघान् आब नहि अछि । गाम तें अछि । मोन सेहो ओहीसे शोखल अछि । सब लागल भाइ जकाँ बतवा दूर धरि बँसीक ताग जाइत छैक, बेखरिने तरे-तरे चापलो भंडाक अनन्त मोने बिछा करैत छी तें बँसीके आर नैवाथल जाइत छी, कारण, बँसीक छीप खुब नीक जकाँ बीड़पर नाडिमे कऽ बँसी खलनिहार कतहु गेल अछि । ई निषिदा छैक जे आ आओत आ हमरा छीपिकऽ ऊपर कऽ लेत । ई तें भेल निषिदा । मुदा निषिदावी लोकक निषिदा नहि । अहाँक ओ कविता जे अछि— "विश्वतः ई धूरी अछि—"

ओ संसार नहि भेटैए आब कतहु । आब ओ परिस्थिति नहि भेटैए कतहु । पहिला बेर, भनसा परक असोरा पर बैसली । भीजी बेरा लोक जकाँ राह कलहा चाकरक रोटी पकाकऽ तोल-लेल अँचर, हरिपर मैरवाइ देलनि । जाय बैसली । दूधै-कोर तें खजने होय कि बेसीसे बैसी बरष तीनिर्-चारिक एक टा मोर-नार रोगी बच्चा मेल-कुनैल तेरह दाम काइल बैसी पहिरने, जाहिसे ओकर पैर हुलकीत रहेक, चूधचूध आधिकऽ लेनेमे ओलने लग ठाढ़ भऽ गेल । हुम भोजीके पुछियनि, ककर बच्चा छैक ई ? ओ उबियावल मासब ओकर जे परिचय देलनि ते जेना करैक बरकि गेल । अहाँ ई नेवा ओकर बेटा छिएक ! एहिना बीआकऽ अँगने-अँगने भूमिकऽ पैर भरै छैक ? एकरे बादके बुद्धिनाशवण भा माससाहेब स्कूलमे दुर्गोस्थानमे पड़ैक हेतु जगवा देल कतेक बेछा कयने रहिएक जे एडि-निधि लोक किछु । नहि पड़लक । जेठ भाइ

जवजवसो एकटा महोस भीति अन्तर्भूक आ एकर बाग ओकर घरवाही कऽ आगल । विविध दुर्गम ।

—आब तें एहक भंड बैसैक ई । दुइए-तीस मास पहिने तेहन भुत्तर मोटावल मोटावल छैक जे दिशतिनेक तें किछु नै कुरैत । गुत्तर । आब तें रोगी भंड बैसैए । पैर एतेक टा छनि कऽ भंड बैसैए । किल्ली छैक कि बीर के देवकीक ? आब-भियक बैसने छैनि कऽ एहिना पठाई जाइत छैक, बुझि पड़ैए । ओ नेवा चुप, ओलहीमे डाह । हुमरा बुते कओर उठाकऽ मुँह धरि कऽ जानक कहिये । भीजी ओकरा बचाकऽ आब बैसियनि ।

मुदा अहाँ कहु भाइ, 'मोख' कऽ कऽ जीवन आ संसार बदलल जा सकैए ? कहियो ? लोक व्यापक 'वालरोग' केहुन दसब पुचा-सकाइक भविष्य बनि सकैए ? आब तें एक वर्ष अर बाँइ गेल हीपरक ओकर बरष । बाग बेगारीमे थिकाइ भाइ क्षीयत छैक आ तबतुरिया सभ सबे 'ग्राम सुधार समिती' बनैए । ककरोनर पबैती बैसबैए, कोनो सुहेदुवर लोकके अकारण डँड दैए । अपन प्राण-मुधार समितिके आसभ कखनी 'युवा कांग्रेस'क ग्राम-बाया, कखनी छात्रसंघके राक्षितिक करल सब-कमिटी कहैए ।

इहक लोकबाद अछि । संगले-मंगल कऽ भीतीन करैए । कखनी जगदि-पाति न तोड़बाक चाही ताहि पर-सभा करैए । कलसोम गलवाहा भैया नहि कऽ सकलापर कलसोमक घरबाजगामर तें बरके घुरा अने जाइए ।

जँर, गाममे अही गाम जकाँ बहुत रास बेरोजगार अछि । कोनो बाट नै छैक ककरो । ई ग्राम, लोक वहीए जे मिथिलाके सलेकुशिक बैसबक केन्द्र छल । मिथिलेके गौरवान्वित करैत छल, विद्वानसँ लऽ आचार-विचार सममे ।

पछिला तीस वर्षमे एहि गाममे क्यो एहन 'राजमेला' नहि भेल जे मधुबनी-काइ परक सुगलकालीन टुटल-भङ्गल 'अहोदय' पुस्तक नरभति पर्यन्त खरवा सकैत, सड़क, बिजली आ आन वस्तु तें जाय दिशोक आ ने कोनो तेहन लोकक बेटा-बेटोई हमरा गामक बेटा कि बेटोके बिवाह भेलेक जे सरकारी बच्चा आधिकार हो जे अपन बेटा कि बेटोके मासपरमे हमरो गाम, बोड़ खरवारी 'सुभीता' सँति कऽ पला-वितय । हमर गामके भेटलैक अछि हमरा तब सुच्छ लेखक ।

मुदा, अहाँ गाममे सुनलीहें जे आब प्रायः ई सभ सुभीता भंड गेल अछि एकही सड़क, बिजली ।

हमरा गाममे एकनौ दशनी पर्यन्तमे बुद्धीलोकनिके भरि-भरि अँधे बाल-गानि हेनिकऽ दुर्गोस्थान जाय पड़ैत छनि । अहाँ सोचब खता चाटे किएक जाइत जाइ छनि, मुदा हमरा गामक 'सड़के खता छैक मै' । बीजमे सुगलहुँ इमर्ज नतीमे बीजे जे मुच्छियाके

कय दन हजार टाका भेटलैक सङ्काक सारमतिक तेल ! एक-दु ठाम खेला भरखली कयलै... एके भाइमे केर बाटपर छोड-छोड जवरा कायम... लोकके कहि तेल केलेक एखे अनुदान भेटल रहैक ।

ते गाम एक टा धर्मसंकटी भाव-बोध जकाँ गर्दिन मोकने रहैत अछि । हीरए जे भाव गाम नहि... केर कहियो नहि...'

एहनेमे गामसँ छोटका भैयाक चिट्ठी हमरा, कि छोटकी श्रीजीक चिट्ठी हमरा स्वीके आबि आइए—'एते-एते वितस चिट्ठी किएक बन्द कथमे छऽ ? चित्ताने छी, धोपा-पूता कोम छैक से ?'

आ, हमर गाम-बोछ, पूरा-कालक-बडका दाकाक संघोच्चार जकाँ जीवन्त भऽ जाइत अछि आ चानन कफाक बुगियाठ जकाँ... बडका माय, काकी, छोडकी काकी, गोरकी काकी आ हमर माँ—दुर्गापाठ सुनैत ओलोकनि आ घुमनक मुगधसँ श्वाणत अतिश-भरि टोल...'

माँ कहय—'हम जाइछी पांड मुसऽ । घरमे जिजिर चडा देनिईए ! भूख लागल तँ काहि कऽ खा निहऽ ।'

एम्हर मुनलीहँ चानन काका सेहो वमान तवाह छयि । बड पांछमे, जरीरें, मोने, सभ तरहें ।

बाबि कहि, हमरा गामके की भऽ भेलै ? हमरे की भऽ गेल ?

बैचो गाम किएक 'बुलढेठ' रहै ?

भइ, ई एना बुलढल रहै की छैक ?

अहाँ अपन गामपर कोनो कविता-एक टा सभपूर्व कविता बोचि रहैत छी ? केर फखनोकऽ हम ईहो लोचैत छिएक जे अहाँ यदि कथाकार रहितहुँ तँ एहि सभ दिखविते कोना चिबितिलेक ?

हँ भाइ, एक टा कार्यक आर । ई चिट्ठी वमानके भेट जाइनि । अहाँ-लोफनि, अवयमे टाकअवला अगळ चाह दोषान वा भोजर-रोडक-गोरमी बेसिते होथिब किछु क्षण कऽ...'

प्रिय प्रभाव,

बीचमे एक बेर दू दिनक जास्ते बटना गेल रहै । तँ अपना चित्तक भरखलिमे गम गेल रहै । आज न कय मात भेलैक । इनरो बाबूक बरखी एम्हरे किछु मास पूर्व भेलैकहँ । तोरा त बूझल छीक—हम नहि जा सकलहुँ । नहि किएक गेलहुँ, वकर कोनो साफ-साफ कारणो नहि बूझल अछि । मुदा, नहि गेलहुँ । छोडका भैया कष्ट भेलाह, समाजमे किछु गोटे हमरापर 'ओलोकको' बनल होमलाह । वगध । मुनलहुँ जे

हुनु काइ अपना-अपना घर-असोरापर बिस कय ब्राह्मण भोज कयलनि । एक भाइ विश्वरत्न, एक भाइ बाबहार तँ । ठीके छनि । सम्भव, हमर स्वर्गमे चित्तक पडि जायन होइनि वेदा लोकनिक ई पख-भोज । एहन मही आ अकायमे एवना गामसिहँ आयोजित ई भोज हुनका नीक लागल होइनि । भऽ सकैए अपन छोडका वेदा अर्थात् हमरा पर चित्ला भेल होइनि—बुझि गईए, ओहिना अभाव आ कष्टमे अछि... माफी देने होथि, नहि कहूँ !

मुदा हमरा तँ ओहना गाम अवकाश कोनो प्रण लेखि छल । तोरा जकाँ 'जामनी जस्ताहक' ओहना हमरा स्वभावमे बुझै से कमी अछि । तँ त हजार बजारक व्यवस्था कऽ कऽ बरखी कऽ अर्थ छँ चित्तक । नहि आनि अपन आम्हनीय तँ कि 'जहाँ-जहाँ कऽ कऽ ?' पहिलक सम्भावना तँ ओना हमरा कोम बुझाइत अछि । जे ही ।

हमर त एहन भोज-भातमे ने अस्था अछि ने अहि ! तकर कारणो छैक । लोक बरखी रहनि । नवे-नवे लोकरी घुमने रहै । छोडका भैया बूझलजिन—आज तँ हिनका कमाईसँ कोके भोज होइक । हम दाका गडीलियनि तँ अवश्य, मुदा भोज लेख नहि । हमरा भारी पाखण्ड खनैए ई-खाली ब्राह्मण भोजन । ब्राह्मणो केहन तँ कोनका अरक कोडोमे स्वयं कल-कल वर्षक नै-हियक बाडर मोनक मोन घुमल रहैत हो... ते हम बिखने रहियनि जे कोक उपनक्षत्रमे ई दाका खर्च हो अवश्य, मुदा भोज-भातमे नहि । आ-हम अपन विचारो लिखने रहियनि जे कोना खर्च हो । ई विचार एवना गामक लोककेँ अरमभ केहन कठिन छैक, ते तँ बुझने छीक... किछु गोटे गाम हमरा, 'नै बुझैत छयिन', 'नेका छयिन', तँ 'ई छयि' 'ओ छयि' कहल गेल, 'अलोकिता बात-विचारक बोधित कयल गेल... ।' हमर पिता कहलअनि—'नै, ठीक छैक । माय हुनकर, ओ यदि अपन कर्तव्य एहिना कऽ चाहि छथि तँ आपत्ति की ?' छोडका भैयाकेँ अपेश भेलनि—'विश्वरत्न अछि, तदुक्तमे व्यवस्था कऽ दहू ।'

वाही मुन विचारक अगलिकीत चित्तक आदमे वजन अपने भाका कर्जखोर होवऽ पहुँत छैक लोककेँ तँ विवन्वना नहि कहै एकरा केँ आर की ? वैह भाड चित्तक आदमे अधिकतम दाकाक व्यवस्था कयलनि, खर्च-वर्ज भेलैक । नाच गोटै प्रकक कोर्षा, (कयनि छलहुँ ओ लोकनि चित्ती, भाइ सभ, ओहि प्रसंग बच !) आदक स्वस्मक निवन्ध भेलनि तँ हमरा हुनु छोड भाईसँ ई वचन खऽ लेल गेल छल जे एवना हाथमे दत्ता नहि अछि, मुदा दाकाक व्यवस्था कऽ कऽ एक तेहाइ अपना-अपना हिरसाक दाका जेठ-जवकेँ धरा देनि ।

वसित हमरा एकदम नै छल ई आद-काड । मुदा, चित्तक शोक आ सामाजिक, पारिवारिक रुझि अतरि आ स्वाभाविक वातावरणो विविध होइत छैक...

गौर इही भावनि भइ जे लोक हुनकर विचार नहि बुझत, बुझत ई जे फला कबूक छोटका छेदा केहन कबूक आ गुपुच भेलनि !

कुपुच बुझल जायक बसल छल, अछि, तेँ सभ ठा कर्त—अपितु आदरणीय अन्तर्गत 'अनुबंध' चुपचाप स्वीकार पड़ल छल—'नितक आइ सम्पन्न भेल छलनि आ अन्य भोज भेल छलनि'—'हाइलाहक दोसरे दिन देखा एव सभकेँ आमंत्रित कऽ कऽ घरमे बैसल रहलनि। माय, पिता, मामा बहुत अस्मानजनक आ स्वर्गीय चितक जीवन धरिक अखि प्रविष्टाक अवमान बुझायल—'हृत्पत्र भेल ओहिना बैसल रहलहुँ जेना महाराजक कटुचरीपर रैयत सभ—रहल छलैक ताहि दिन—'मुदा छोड़ ! ईहम छट्या तँ होरा नुब बुझल छोक। गौत पील भऽ गेलैक। फला भागक फला बाबूक पैयारी—'चिता नोथनि बापक आइक टाका लेल, चिता गेलनि'—

ओहम हमरा परिवारक कुलीन-समुद्र इतिहासमे एक ठा भयावह कर्तक कर्त बुझलैक। एक ठा विविध स्थिति ई छलैक जे एहिमे हमरा नायक समाजक कोनो अक्षि नहि देखैक, एतऽ अरि जे एक ठा कोनो व्यक्तिवाक किछु हाथि नहि भेलैक। तथापि कलैक एहि दुधारे जे हमर स्वर्गीय पिताक मर्दावाक कथदा प्रतिकूल भेलनि। कुलीन परिवार-परम्परामे बर्तक। एहि जुगमे, एहि 75-77 ई० मे पर्यंत हुनक स्वयं छलनि भीयारीक सीमन्त आ एकल भावना ! संभव छैक ? जतऽ साय पाइ सभ ठा कऽ रहल छैक आ करा रहल छैक ? नमुकष, पाइ, जमीन आ दोकान कऽ गेल अछि ? जीवनक सभ महान मूल्य समुद्रमे—'स्वाम्याधिक छैक जे हमर एहि लोकानदारीमे कोनो रहस्यता आ गहरीय नहि रहल, तेँ अछि—'तेँ कर्तक टाकाक अवायवीमे हमर भैयाक नामे अपन हिस्सामेमे कर्मीन रजिस्ट्री करबल छल—'कचहरी आ जमीन रजिस्ट्रीमे तेहन अपमानक आ अपराधजनित भयक बोध होइए जे मोन कबूल जे कथयक। जे कि एक नहि कथयक ?

तेँ पाठक आ अलोचक वर्गमे एही नायक नामस्ती संस्कार आ नागरिक प्रामाण आधुनिकताक संस्पर्श कथाजिन्दीक कर्ममे स्वीकृत होँ तेँ हुनका जानि नहि किएक लागल जे अपन परिवार नाम आ तकर परिस्थिति तोरो नुनबियो।

एहिपर कोनो कथा कहवाक हमरा लेल गुंवाइयो नहि अछि। कारण जे हमरा तेँ स्वयं एकर पाइ वतऽ पड़ल ! असम्भव !

भैया हमरा वास्ते बहुत कथने छथि जेना एक ठा जेठ भाइ अपन छोट भाइ केन कऽ चर्कत अछि। एक बेर भगवती भऽ गेल रहल 58-59 ई० क गण धिक्क। अरि-भरि राति छिरामे जागल बैसल रहल, मोने अछि—

आइ भैयाक चिट्ठी गौर आगल अछि—'जे किछु परिवारिक बटवारा संजो लड़ा-पट्टी बीचमे छैक तेँ आबि कऽ सोझा जायक बहुत थाययक—'

एहि चिट्ठीक मतलब हम बुझैत छिएक—'कर्तक अवायवीमे हुनका जे हम खित देने छथनि, तकर रजिस्ट्री नहि भेल छैक। उपरा लऽ रहल अछि। ताहिमे भौत निश्चिन्ता नहि छनि। पहेल अछि जे कानूनी रूपमे ठीक-ठाक भऽ जाइक माने हम लिखि देने छथि। कहीं हुनकर मोन बदलि गेल आ जमीन पर दावा कऽ दिवनि !—'बैह अवस्था चाहियनि ! हमहुँ सोचैत छिएक, स्वर्गीय माँ, पिताक भैया कबहुँ आ अपन सम्बन्ध, सम्पदक प्रवाह आ जीवनक तब-तब समस्या नव संबंधक बोध। कतेक रात बात अनर्गल आवि गेलैए जे लोक 'अदरपूर्ण' स्वीकारते जा रहल अछि। ई कतई, किएक अवलैक अछि एहन अशुभता आ अविश्वास ?

हमरो मुख्य समस्या वैह 'सम्बन्ध' अछि परस्पर सम्बन्धक विविष्ट भावबीज संवेदनक खुब विस्तृत धरातल। किएक लोक ओकरा छोड़ि कऽ भाइक स्थान छोड़ि कऽ दोकान भऽ जाइत अछि ?

तोरो तँ बुझलै छौक, पिताक मेलाक बाद सभ किछुक समाप्त होइतमयार चले। दू ठाम लूहि। दू दशक, बैसनियाको लोकनि दू। बीच आइमे टाड—'केहन घोषित अपनात बुझावत छैक ? आ लोक एकरा एना बुझबैए—'ई सब सदा तँ भऽ अवलैक अछि, भैयाजीमे बँटवारा, एकरा जाने क्यो दुःख करय ?

हमहुँ बुझैत छिएक बँटवारा। मुदा कि सम्बन्धो समाप्त ? ना, यदि गैह तेँ लोक मूल्य पर ? रूपा आ जमीन दुधारे ? ई हुन एतना समझ, जे लोकक तबटा मौलिक बालोकेँ गाँठि देखत ?

जेना कहलियो, खुब अपमानजनक लखैक रहै। मुदा कोनो रस्ता तेँ छैक। भैया सभ ठा रामना बढ करणर लागल अछि, तेँ तँ बुझावत अछि, मुदा कोन अभाव आ कष्टमे तेँ नहि बुझावत अछि ? हम कर्तव्य छै, एक दिन छलनि, खुब समस्या छलनि आ बरमाज कर्म भेटनि। अभाव रहनि। मुदा बाइ ? तबने ? नाम आरो माय आरो ?

भैयाक तार-चिट्ठी-तार अखिल रहैत अछि। जहिवासी घर-घरायोक बँटवारा भेलक ई धटना साधारण छैक। घेर आगल अछि। एहि बेर स्वयं नहि लिखैत छथि—'बिखबबत छथि अपन अवस्थात वऽ आ हमरा लए बकिरीता किछु रूपा दऽ जे दवाइ होयछनि।

एकतँ चिट्ठी खुब बेरी सँ भेटल अछि। दिल्ली चल गेल रही ! भैया दुखित रहैत छथि, चिन्ता भेल। पाइ तेँ तत्काल पठा सबबाक हाथलिमे नहि छी। भैयासँ अकृष होइ लेल कोनो मोगल खुबचोरा टाका लेबऽ पड़त। एतऽ तेँ गेहो संभव नहि।

फिर ईहो होयत कछि मोनमे जे हवैयाक अभावमे भैयाक दबाइ सकल होयतनि ? अंतमज- मोन फिर ईहो धिक्कारेण एकर मतलब जे भैया मात्र हवैये लेल भिखल भिट्ठी, अपना बीमारीक खबरि नहि देखनिहैं... एकटा विचित्र डिपार्टमेंट परिस्थिति छैक, सम्बन्धक शेष सामग्री बोझके दबाव आ एकदमते बढति, खुलल आबुक्त जीवनगत मूल्य आ संवेदनाक दूखल परिस्थिति। बड़ विचित्र छैक। भैया एक टा सम्बन्धी द्वारा फेर संदेह सभाव देलनिहैं।

एकटा अभियोग भेटे—“दुखित रहौ, फालाके से कम से कम एतयो चित्ता भेलनि जे मुनोके पछाछ निजाका नै कमजनि। अर, कलनै टाका तै नहिहैं, पक्क जबाब तक नहि देलनि। आबि (एहिज फाला माने छोडका भैया आ दोसर फाला माने हमः), कतेक छाती मेथ चलू फने एके रली भैयाके ई अपेक्षा भेल छनि। हुनक दुख तकलीक हुनका भाग-परिवारक अपेक्षा बाँचल छनि? मुदा, एहि टेकीक भूकम्पावससँ कतहु सौंसे अन्हार कटम ?

मोन पहुँच बन्हिरिया राति। बाबूक सड़ाते के खतर खेदर... एक हाथमे सड़ी, जोड़ा, लावदेत, दोसर हाथसे छोडका डोल आ टोके। जखन वर्षा कि वर्षाक संभावना तै बाबू छत्ता मेहो भेदि संगमे। बाबू कलपर जा रहल छथि, कहियो कस निमजबद रातिमे बाबूके एता पोखरि दिस बाइत गिने दूडल रहलपर पछवासी कातसँ अपना बाँछलीदेस बड़का भातिम पुछयिन—“पेट नइबड़ अछि कि बाबू काका ?”

“नहि। किछु मरोड़ जकाँ छैक। तखन ते जांचत एक बेर संदेह नहि छोडल गी, निसे नहि होयत।” मुदा एतेक रातिके अपना भातिमक ई पुछि लेल हुनका खुब आत्मजबद बड़बैत छलनि। भोर जीवन परदेमे रहलवह। बूढ़ावस्था मे बहिरिया बाँकक मामले जे जीवन मऽ जाइत छैक, तेहुते छलनि। अपन घेटा सभ हरदम तै बाहरि...

आब तै बाबू कोना इमताह ? आंगनमे टाढ़ लागल छनि। बँटवाराके कत, ईश्वरता टाढ़क ओहि कात बड़ि गेलैक।

जब दे; हम किछु बेसिडे भावनामे आबि गेलौहैं। पिताक प्रतंग आबि गेल तै। आब ओ नहि छथि। ओ जखन ई तयका पर बमबोलनि (जकरा ओ गुनगुनी टाड़ करव कहियिन...) तै सोचनी ने छल होयताह जे तैहू पीछ कोटली पक्काक पर समद आतसी चमिनस्पक, अलडि-सहावक जड़ि भऽ जायत, भोरि जखन बीमारी सीमनस्पक सगना उड़ि जायत आ एक टा कोटली तेल चित्ता जायत...

मुदा, ईहो तै भरिस्क तोरा मुनमे होयतीक। भोरि मिथिला तै सम्बन्ध सम्बन्ध। मुकादल की छैक आब ?

हूँ, एतवा चित्ता आ दुख जरूर होइए जे थिपक नहि हमर ओ बाइस कि चौबीस हप्ताक पुरते फूसक पर बाँचल, जकरा हमर माँ स्वयं अपने हाथे जगिया माय-सकुन्ती माय-तंगे लेवने पड़ल आ जकर असीरापर तीन टा सोझर हरदम बाँचल रहैत रहैक, चर हरदम बूझैत रहैक आ पुपहरियामे माँ आइतमे बेल बबै कि मइया कि धानक प्यार, ओमरैत ओमरैत चीखटिमे ओठझल ओठझल झूति रहैत छल...। दूख, बूझैत पर दल हमरा लोकनिक खड्क। मुदा बाबू मे कम माममे एक टा चिट्ठी जरूर माँक वचनाक (माने भैयाक) टाकपिन दऽ जाय हमरा लोकनिके जाहिमे माँक वचाक की हाल छैक तकर चित्ता रहैत छलैक आ माँओ कइ बेर टुनका लदा बेल करब कोओ जे ध्यान धरि थकलैक कि एक ते गोस्टकाई निच्छि देखहुन, कतेक दिनसँ चिट्ठी नहि केतल-ए, सोन ब्याकुल अछि।

आब मामक असे कोना बदलि गेल अछि हमरा लेल। हमरा बेर-बेर होइए जे तैहू फूसक पर होयत जरूर असीरापर माँक पकासो करैत स्वर पैवैत रहैक आ सकटा जुझल-टुझल एके अस्तित्वक मुख-दुख, सर्वमान प्रक्षिप्य जकाँ लवैत रहैक।

मुदा कहाँ ? माम तै नाम नहि आब। ते पिताक खड़ाईक अटल-खटल मे माँक दगाक जकासी। आब तै पाँच टा पक्का कोडलीक बाहरसँ एक नकान (भीतरसँ खोराक फाँक)...

हमरा नहि बुझाइन अछि जे तोरा ऐतक राख ई सब निजबाक आधार-धरणा की ? बहुत दिनसँ भरिस्क तोरो कोनो कथा सवा प्रकाशित नहि देखि रहल छी ?

बति, तोहर-

दुनाय-

फेर एकटा पत्र फल निजपाहा पहुँचिहैं। मुसमेल-तरकाल आबि गेल। भैयाक चिट्ठी। चिट्ठी पढ़वामे भय जकाँ भऽ जाइत अछि। एहि बीचमे भैयाक चिट्ठी भेटबाक मतलबसे हवैयाक तरोदा आ जमीनक रजिस्ट्री। भेल जे राखि दिऐक। मुदा तत्काल संभावित, कतेक काल नहि पढ़ब। पढ़ी।

अंतर्देशीय खोलऽ बाह्यदिग अछि तै अनायास खुति गेली। विषय छैक—

चि०.....

मुभासीकीय।

तोहर परीक्षा-कल वेदि कऽ बड़ हर्ष भेलए। एहिना जीवनमे प्रगति फरैत जाह ते आजीबिदि।

—तोहर भैया !

हम अकचका गेलहुँ। ते तै हम कोनो परीक्षा पास कयनौहैं एहि बीच, ते थान कोनो प्रगति। दोसर जे ई पत्र भैयाक मऽ कोना सकैए ? पूरा पत्र देखलैक अछि। पत्र 28 दिसम्बर 67 ई-क छैक। पत्र भैयाक छैक।

मनुष्य आ गोबर

गुवाहाटी 10 अक्टूबर 1978 ई० एफ० भारतीय गान्धक प्रयोग ई विवरण अछि। राम मिथिलाक। उकटा नाइ दिम कहल जाइत नथकोसी। जीवक अन्तिम वर्णकत सहनियार। अभावत अपि बूढ़-पुरान आइपी सैह कहैत छनिम-निकोसी। चकरा हेतु प्राचीन ऐतिहासिक गौरव-वीर्य सौंदर्य रहैत छनि। हुनका मनके अन्तरेजी राजक सन्तो देखल छनि आ एहि तीन-इत्तीस वर्षक स्वतंत्र अन्तर्गत राजक गहनी देखै।

एहि किछु वर्षमे वड विकास कार्य लागू भेलैक। जेकरा राम भाषण, प्रकाशन राम अन्तर्गत सन्तो एकरे प्रमाण साहित्यक बस्तु अछि।

किनको मते—“गाम-गाम खुब आराम वसुधै। किन्तु तँ आज भिन्नराक वेटाकेँ पर्वत डेरैजिबक बुझल रहिगेल देखैक” किन्तु मते—अंगोर वडैए आराम। एकटा जेहो पुरान मिथिला रहल जलैत छल से तँ अन्तर्गत चारु मे लगल किन्तु बुद्धि, देवानक पवित्रा पर्वत सुविधाजीक कोटी समक गोरा घर चल रहैक आ सोज भात जेतवारक चबुतरा बनि गेलन्हि...”

—आ सड़क? भिन्नली? नवो भवोत्साही युवक पानि कऽ उदाहरण दीकताह।

ई घटना वा विचार सभे देशक कोनो गामक भऽ सकैए। ओना हम भोजपुरी, जे कि यहाँ लोकनिक-मिथिलीक लेखक छी तँ यहाँ एकरा मिथिलाक कोनो नाम मानि लिखऽ। अपन मते नाम राखि लिखऽ, पारिस्तक से ताम एकदम किड बैसत।

तँ ओही एक गाममे आब एकटा सड़क बनलए। ई सड़क भैम चौङ्गर आ गहिरगर सड़क ताहि दिनक डिस्ट्रिक्ट बोर्डक छलैक। एहि सड़क पर कय सड़क सँ पतियानी बनल बैलगाड़ीक एक-एक टा जीव-दुष्ट जे एक-एक टा नाली जकी रहैक। स्थिति ई जे डेड कोत पर रेलवे स्टेशनक तामा-रिक्शावाला ओहि गाममे अवकाश छपा बड़ मोकिल तँ वड महंग हप्तै करैक, तेहन जे बाबू-भैया लोकनि बुते संभव। केहो सभ मोक्षिम से नहि।

से सड़क एहि बेरक ‘गहम दो, काम लो’ अर्थात् गहमक बोनि वऽ क सड़क निर्माणक सरकारी योजनामे एह सड़कक दिन किरलै। आ माटि बड़ाओल गेल। खाधि

बाद अंत सड़कक रूपमे जनि गेलै। एहनामे जेना पि होइत छैक, आजीवन किछु सौंदर्यक उपायक सन कमे सुप्रीस्थानमे लऽ काय शक्ति बान्ह छनि भाषण करथि—“ई सुविधाजी गामकेँ स्वर्ण बना देलह। की बेरी। फऽ गेल एही मान धरि सड़क बीच-भऽ ज्ञापन नाममे गहम धरि रिक्शा मोटर, बस बिन राति पोहैत रहत। करैत रह धरि गहमक अन्तर्गत। एहिने जहाँ महि जे पथोमे निकलव पराभव भवोत्साहि जेतजी तँ जाम-अली तँ अर्थात् धन्य ई सुविधाजी गामकेँ स्वर्ण...”

सोभर कोनो अन्तर्गत, डाइ-गडैई ओकरा कऽ सोके पर नैकार—‘गुम छी। अहाँ ने सुविधाक बन्नाल छिदै। सन्तो सरकारी गहम अहाँक सुविधाक केरमे आ अहाँ सन-सन्तक कोटीमे...। स्वर्ण बनबैत अछि तँ सन्तो गहम सरकारी देखकैत जतनामे पैह एहने गड़क जौं छै। खाधि-भुधिके पारिस्तक कनी कोस कऽ देखबितहे आ स्वर्ण सैदार फऽ गेलन्हि...। अन्तर्गत सन्तो नत। एहने कम गहम सैदार फऽ के फऽ नामकेँ कनी ओहि चियारकेँ देखि अविचारी, केहन ठोस बनैलकैए? सुविधाजीकेँ लऽ जेतनि कहबनि जेओ बी० टी० बी० केँ सँहो लऽ नहि...। जकरा सँहो जौओ छनि सन्तो विकास कार्यक सरकारी आ पब्लिकक कोष...।’

जामगत: एहिने गहम-गहम आ तकरा बाव कवार ओहोत्वभि। जे कि कतहु मे कनहु किछु टोड लख रहलै तँ महाभारतक बाबावरण।

का मोटे सुविधा बी० टी० बी० क तँ बीस मोटे गिरीछ अन्तर्गत जतनाक। ताहमे विवेचना तँ ई जे एके पारिस्तक सन्तोमे पाटा-पाटी। इ मोटे सुविधाजीकी तीन मोटे सुविधा विरोधी। कुल मिलाकऽ नामक मते ई निश्चय करब बड़ सुधीनगर जे नाममे राजनीतिक जेतनाक विकास भऽ रहलए। सुब खीरतँ। अन्तर्गत बी० टी० ओकर कोसनि नाँव वर्ष पूर्व कयो कला अन्तर्गत सकैत छल से आज राजनगरक वन टा रंगकुलिया विद्यार्थी सभ खेराक कऽ देखक। पारि दिन आप-आप करैत रहलह बी० टी० ओ० राहैक। परन्तु अन्तर्गत गहमरी बीजनामे जे किछुओ जतना किछु कयननि-बी घोटाना भेल होइछ, ई धरि सन्तो जे नामक एक ई मोटे बाकायदा रिक्शा सेने अछि आ खायरी उचैए जकर उदाहरण वऽ कऽ सुविधावादी लोक सभ आ स्थानीय विद्यालयक समष्टि-समष्टिक अपन भाषणमे कहैत छनि जे ‘सड़कक ई विकास नहि भेल रहैत तँ नामक ई बेरीजवार विद्यार्थीक युवक सभकेँ रिक्शा चलाकऽ अपन चितनी सुखमेक बनयवाक रहता। अन्तर्गत किन्हू...। अर्थात् सड़क नामक बेरीजवादीक समष्टिमे एकटा बड़का चलावातमे रहलए...। से एक जने बजलाह।

ई घटना यद्यपि नवमी दिनक नहि थिक मुदा थिक ओही नामक। जहि पर एकटा बी० टी० पाठ बेरीजवार वक कोसलेन्द्र मा समष्टि कहलकैक—‘पी भँपू हा, समष्टि भाषण। अहाँक सुविधा वा बी० टी० ओ० केँ छनि वृत्त जे एहि नाममे

कतके बेरोजगार लोक रहेए ? आ ई नहि बूझल छनि जे जाहि दु गति क रिक्ततासँ मुर्खी होयवाक उदाहरण देल अछि ते हुनू टा सड़क बनससँ पूर्वहि गहरमे रिक्के नीचा छल... मुटुटे प्रचार करल आइल छनि जेना कि कोनो चुनाव होइवला...

—आहिरे बा, नै मन छी, मुखियाक चुनाव नहि होइवाला छैक ? तेँ बातवरण नमेष अयलाहुँ ई भोंपू जा सभ । एक टा पुष्पक तीव्र स्वर पशिलुक बात कर्तल ब्यंग कयलक ।

—बेसी कदिवली नै छीह । बेकार समय बेबाद किए करैत छी ? जाइ जाइ, मुखियाक जयजरा पर, एहि सड़क धूरा उड़िया कइ गइल कइ गेलैह । ताड़रिसँ गहरि जाइ...

—'अई ओ, तकर मतलब हमरा अहाँ कुरुर कहलहुँ ? अहाँ ई उपरलस ?' भोंपू जा ओधित भेलाह ।

—'अहा हा, कुरुर कहाँ कहलौ ?'

—'ताड़रि तेँ कुरुरे होइत छै...'

—'किएक ? बड़के नै होइत छैक नाइकि ?'

—'कतहु देशभिएक अछि बड़के तोगडिसँ अलोरा साईत ?' भोंपू जा अवगत कुछ भावे कहलथि— 'ई तेँ कुरुरे' ।

—ताड़रि तेँ माछी-कुरुरमाछी तेँ साड़ि लेछ बड़... ओ पुष्पक किबकिबोल थिन । तावत जगा भेल किछु बड़-विपक्षक दंग लोक आ बीबाउजि होय तावत जे सड़क बनलासँ आम बिकास पर भेल ओ सड़क बनला से नामक छोड़ी बाच भेल एहि दुनू बात-प्रतिवासेँ संगसंगसगइ ।

तखन फेर ई निराकरण जे फलसँ जीवटो परक पाकिड़ शर, के दोकान खोलओ अर्थात् नामक परमिट कबारा भेटओ, तकर डककेरीमे पूरा नामक हुनू पक्ष-व्यस्त आ दीइ बड़हामे कच्ची सड़ककेँ धोनि कइ समतल करैत व्यस्त ।

चर तेँ बेहू एकटा नाम आ ताहि नामक ओहि सड़कक कवा कहैत छी । तथेगीक देह पहरेक घटना ।

महानन्द बाबू जाइत रहनि दुर्गस्थान, दुर्गकेँ प्रणाम करऽ । लोकक आवाज जाही लयले रहैक, छीड़ा-छीड़ीकें बरोह सभ जा रहल अछि आनि रहल अछि । दुर्गस्थानमे आज तेँ पहिने जकाँ छुट्टे बसावा जा गरी-मुगारीक सभ बेकाम नहि लगीत छैक । आज तेँ पंचगेर सधुर आ दिक्कली-सिमुरे रहि, पानक दोकानमे चारि-पाँच रंगक नाम हरिहर कारी बीयर बेचिपर सैहो लटकल भेटत । अपनि पानक दोकानमे बैसिपरक चुक लखैत रहू । वरीय मुगवाक थिया हुन पर्यंत एक टा मैल चिक्कटि बरकी पहिरे, सौमे देह उधार मुदा कपार पर खुब भला लाख छेग । उदपक्षी जकाँ बुझायत

ओकर जनाय-जाना देखिकऽ डेहुगसँ नीचा झीड़तें ऊपर सम्पूर्ण उधार । वस्त्र नहि, मुदा जान भव्य छेग ।

तेहने एकभरि छीड़ी खूब हुकमेत दीइनि जा रहनि छनि से महानन्द बाबू देखबयित । ओ पच्छिम बिस खूब जोरसँ दीइल जा रहनि छनि ।

बहुत आगोसँ हरिहरक काबनि ओकरे गड़-कड़-कड़ कहने रहनि—'दीइने दिशनी... जखी-दीइ, नै त हुनि जमई... हो बड़, ओम्ह, बंस थिड़ी लग ठामहि, दीइ कुनी तेँ ।'

ओ छीड़ी दिशनी चिन्तोहे पड़ावनि जाइत रहैक । तावत एकटा आर खूब अँच स्तर नृपयलक—'मुभरा जखी करे रे हेऽऽ । दीइकऽ जो दुर्गस्थानक बाज, बसबाड़ लग ठामहि रखल लोक बहुतसस छैक हेऽऽ । दीइ । नै तेँ बीच हँतोनि बेतो रे...'

एहि अवज्ञा पर एकटा छीड़ा हुनरा धरिया जोगैत पचिया कहरात पड़ावल लँक जाति कऽ ओही छीड़ीक पाछाँ चार्ज ।

तकर बाद जेना ओरो बहुत छीड़ा-छीड़ी के एहि ओर करवाक सजैत बुना-सेल होइक ओर एक पचियाबीसँ सभ ओही दिशामे दीइल जेना दीइबाक इतिवर्धिता ही । महानन्द बाबूकेँ बंदाक स्थितिमे जेना कथित बंसबाड़ लग किछु बंदा रहल छैक । किएक तेँ आदि-साड़िमे कहियो काल खरात, ककरा मेला लोकनि 'रिक्की' कहैत छथिन तेँ बीटल जाइत होइक । बेसी गंभीर नहि होइत ओ माइ एतवे सोचलथिन जे—'अपना नाम के तेँ एम० एल० ए० साहेब' जाइवस्त 'क्षेत्र घोषित' गहि करवा सकाह । तखन एतऽ 'खरात ?' मुदा हुनका दुर्गस्थानसँ आवि कऽ फेर पाठ करवाक लेल बंसबाड़ छलनि तेँ ओ जेग सड़कारनहि थडि गेलाह ।

हुनका कात बाटे छीड़ा-छीड़ी दीइत आगो जाइत रहनि । एकपेड़ियासँ उतरियो कऽ खेतो केँ धईत ओ सभ दीइ-प्रतिघोषितानि लागल रहल ।

जाइते-जाइत महानन्द बाबूकेँ बुझलनि जे भरिभरक ई जेना सभ मेला देखऽ दुर्गस्थाने जा रहल अछि । ओ अपन गेहाइ दर्शन करऽ आ धुरबाक क्रममे जखन दुर्गस्थानक अगोरसँ नीचा उतरलाह तेँ देखलथिन जे कँकटा लोक करीब-करीब गोखने दुर्गस्थानसँ आगो दीइल जा रहल छैक । हुनका एकर बड़ नहि लगलनि । एक क्षण रुकैत अनुमानऽ चाहलनि मुदा नहि अटकर लगलनि ।

दीइत एक टा लोककेँ चिन्तित-रोकलथिन—'किशुना की बात छैक हो ? एना किएक दीइत जाइ छऽ सभ कथी ?'

—'आरि बजरि गेबैए, सैह जाइ छिए ?' ओ कहलकनि ।

—'आरि ? कतऽ ही ?'

—'बैह बेतबाड़ लग ?'

—'बैसवाड़ि लग ? ककरा संगे ही ?'

—'मे दीकसें तहि वृत्त अछि ।' ओ जस्ताइमे बड़ि गेलैक । महानन्द बाबू एक क्षण छाड़ि भेलाह जे किछु चाफ-चाफ मेष बुझवा योग्य हो । मुदा बोड़ैक काज ठाढ़ रहलाक बाद ई सोचि कइ जे बैसवाड़ि रामहि तँ छैक, वैह एही कलम बाबक बाद । जरी दीधारे, बात की छैक ।

ओलाडीके लोकक मुख भीड़ । गर्जै गली भइ रहल छलैक आ कम दा आड़ीसँ नैस ओका कम चम-चम कइ रहल छल । महानन्द बाबूकेँ अंदाज तहि लगलनि परिस्थितिक । ओ आगू बढ़लाह तँ किछु लोक हुनकर अवकाश महत्व दैत चिन्ति-आयल—'रौ बहीं' सभ रौ, साल ने होई-यो रौ । हे नाविक अचलबुनहो करइ दइत हिनके निवाक ? अपने कडाइ-पौडवेल जुनि करै ओ रौ सार सभ' ।

मुदा ओकर एहि ओजस्वी शिष्ट सुझावकेँ कपो ने समललैक । ओपाड़िनि ओड़िना होइतहि रहलैक । महानन्द बाबू आर आनां बढ़लाह तँ किछु मोटे आर सावधान भेल । कर्नाक शला देल गेलनि आ हुला किछु कम पर अललैक । ओ आर आनां बढ़लाह तँ लोक आर बाद छोड़लनि ।

महानन्द बाबूकेँ तँ ठकनूही लागि गेलनि । दूध ई क्षण जे इटा पुरख मागुनि हरिचरण आ शिवचन एक दोसरा पर लाठी उसाहने आ बेर-बेर चुगौती दैत जे बापक थैदा छै तँ कइ ओ तौ ? दुनू-दुनूकेँ सह कहै आ एक काजमे एक दा बरख वरैक छोड़ी आ बरख एगारह-अरहैक छोड़ा बराबत सहमत अइ । दुनूक हालत देखलसँ बुझाइत जेना 'योवईसँ दुनूकेँ खूब संगेह होइक । दुनूक देह माथ आ सलपर गोबड़ लगल आ चेहरा दुनूक उड़ल ।

महानन्द बाबूकेँ चिन्हवामे आवि गेलनि ओ छोड़ी पहिने जे बोड़कि छलैक ओ ओ छोड़ा जकारा बाबमे कपो सोर कमने रहैक आ ओ लोक लइका पड़ावल छल, आ हुनका भेल छलनि जे ओ सब भरिलक दुर्गन्धवान आ रहल अछि—'वैह दुनू तँ बिजैक ।

—'की बज छैक हो ? किएक तौरा लोकनि'—' महानन्द बाबूक एतवा कहलक छल कि लाठीबजा एकटा पुरुष बानल—'बहो केँ तँ जखरति अरेबाक । बहो छी कोरवाईक नेता । साल रहू । हम आइ एकरासँ फरिछावए लैत छी । महानन्द बाबूकेँ लगलनि तँ खूब अप्रलाह, मुदा चाल रहैत तथापि बुझौलनि—

—'आनामे को फरिछवेल हो ? आइ बीच दमोमे ई अपनामे जे खाड़ी भोजि रहल छइ ई योग काज करैत छइ ? राम राम ! हटै जा एख सँ ?'

—'हटवै तँ तहि । मर्द बनैए । अछि एक बापक जन्मल तँ उठा नियस ।'

एकटा बेर देनई चुगौती' ।

—'ई रौ बापक तहि तँ की मोरा जवाँ पित्तिक जगमल ? हम उठपही, तो मर्द छै तँ रोकि के ।' कुल मिलाइ दूध ई रहैक जे, जे छोड़ी ने पुनू ने तँ कि तँ एक, कि दुनूक कपारसँ पोषित बहिनैक । महानन्द बाबू पैसा पैसमे पड़ल एक क्षण किछु सोचि नहि सकलाह । बेर एक बेर साहस करैत लगसग एकटाक हाथ धारैत कहलनि— 'शिवचन ! तोंहीं बागि ते । दुनूनुक भइका तोंहो तँह । एना बयो कयइ करय अपनामे ? जानै रहइ । कइ हमरा । बाग की छैक—किएक ई जगड़ा ?'

भरिसक किछु तर्फी अललैक ।

'हइर हइही कहैत छी ? हरिचरण बाबल—'हमर कटिरवी पहिने बोड़ि का आवनि आ ई गोबर हंसोधि का रखलक ? कथन एकर बे । एहू चलैक आ हमर कटिरवीक गोबर सभस छीनि सेनकैक । तँ पर हमर कटिरवी रोक लगलैक जे किई नैन छै हमर गोबर ? तँ ई जोड़ा नीबि का छकेनि देखलैक आ जगड़ा करइ सगलैक । हम के तहँचो एतइ तँ देखैत छी जे ई हमरा कटोरवी के गव-गव मारि रहल अछि । तँ पर ओही भइहैरि केवकै । हमरा देखलक तँ छोड़ी काज आवल । हमरा रजल तँ गेल तँ हम ऐ छोड़ा केँ एक थापड़ मारलिये । तँ पर एकर बाग हमरासँ खाटा-लाठी करइ अगलार ।

—'गोबर कोभी सभटा तोरे बेटी बिछमे छयी ?' निश्चयन कइ ज्ञात पुछलक ।

—'त की ही काका, बहो बाबक मंगल खाकइ केहे छिय जे हम पहिने एतइ जुनि गेल रही तखन ई छोड़ा आगले आ हमरासँ छीनइ लागल ।' ओ छोड़ी बीचहिमे कहैत फेर हिलुकइ लागल ।

छोड़ा चुप छाइ रहैक ।

—'ई तँ बड़ खराब बात निश्चयन । तोरो सन बुझनुक लोक धरि चुच्छ एतनी गोबर तेव एना लाटा-लाठी करइ लागल... ?'

—'चुच्छ गोबर कहैत छियेक, एतनी ? एतयामे कतवा कतेक चिपड़ी होइतैक से अहाँ बीर तँ ने जसबै ? एक सभिक छोमे परिवारक बुलात छिये ई ?'

—'ई रौ से जखौ तोरे परिवारक एक सभिक बुलात छी कि हमरो ?' पहिल लोक कोधेँ बाजल ।

महानन्द बाबू अवाक एहि परिस्थिति केँ बुझवक चेष्टामे ठाढ़ रहनि आ शंसांमे पहिल लोकक फूटल कनाइसँ टखरैत मोनित देखल रहनि आ एतेक कालक बाद आब जाकइ देखाइत रहनि दुनू मोटक बीच बहुत रौत गोबर लाटिने मिसरावल किछु मोडिआओल आ किछु छिड़ियावल पड़ल ।

ई सना-सनी बजरले रहैक कि तपो मुखियाजीके तेहो ऐलकनि एहि कुकाबक सुचना । पहुँचला स्थल गिरीश्वर मे । वास्त करौलनि सब टा । दूनु जटौक क्यान लेखनि । कती काल गुन गंभीर रहलाह । साधक कोहो भौपू सा आसमई कवलनि—
‘मुखियाजी तेल साह-पाक व्यवस्था करे जा कोइ हौ ?’ ओकरे अपन एहि घोषणासँ भौपू सा हलबिलिया देलनि ।

गुन गंभीर मुखियाजी ओइके कालक बाद आज्ञा शुरू कयलनि—“उपरिष्ठत गानक लोक सब, ई बहुत दुर्भाग्य बात अछि जे अपना देशमे एतेक एतेक प्रगती भऽ चुकल अछि आ विन्यास के एतेक अविवेक भऽ रहल अछि आ अपना नाममे एक रशी गोबरक बास्ते भाइ-भाइमे कपार-फूटय ?”

—कथ-कथ नै मुखियाजी, हरिचरण आ जियबन निशी-भातिन ।

क्यों टोकलकनि ।

—‘जेहँ । हमर कहै के मतलब अछि जे गोबरक बास्ते कहीं जड़ाइ हौ ? हमरा पता चलल जे एक दिन आरौ एहि नवका सड़क पर गोबर बास्ते किछु मोड़मे लभड़ा-मोड़ी भऽ चुकल अछि । ई तँ नीक बात नहि । नामक बदलाजी हईल अछि । लोक खुनिकऽ ईसैए जे कलौ गामक लोक एक चोत गोबरक लेन महाभारत मजबूत । ऐ तँ चेतबाक ताही हमरा पीर के । आखिर अपने पंचायत के परतौखा बचाव हमरे अहाँ कर्तव्य अछि नै ।’

मुखियाजी एक क्षण गुन रहैल केर बाद लजलाह—‘तै ई थड़ा जित्ताक बात नैब समझा । एकर समझान पुरन हएव जरूरी ।’

—‘बिबुध मुखियाजी । बड़ आवश्यक ई एकटा दोसर भौपू नइक उदगार छुटल ।

—‘हमरा अनेक एकर एकहि टा समझान होइत छैक ।’ मुखियाजी बजलाह ।

—‘तै की ?’ एकटा तेसर भौपू साक-जिनस जिज्ञासा ।

—‘ई, जे आइसँ एहि नवका सड़कक इलाकामे जतेक धालजाल गोबर करम सकय एक ठाम जमा बंधन जाय आ ओकर कोनो तेहन उपयोग कयल जाय जे भावक समाजक उत्थति कयल जा सकय ।’ बाइसँ तैह इतजाम करब जरूरी नहि तँ रोज-गोबर बास्ते पंचैती देखल । ई तँ ठीक नहि । तँ आब ई गाम पंचायत अधिकाक सम्पत्ति छैल ।’

—‘मुखियाजी, बड़ ठीक कहलिये । इतजामो कोनो कहिन नहि । रामजी राजतक छौड़ा सब जेनेरे बेहनाइत रहैत छनि । सँति बाटक ठीका हुनक दऽ देल बाहिन । गोबर बाल करनैक आ एकट्ठे ठीका पर गौंदा वनबाओल जाय आ एकरा बेचकऽ

जे आमदनी हो सकय पंचायत के विकास-कार्यमे लगाओल जाय ?’ बड़ उत्तम । एकटा अन्य भौपू चौधरि तसथैसमे व्यवस्था देलनि ।

—‘तै तँ एखत भेल नै । मुदा अहाँ लोकनिके बुझने होयल जे सरकार गाम-विकासमे तौमे बेहतक स्तर पर गोबर पैस’ योजनाके सफल करयबा मे बहुत तत्पर अछि । ताहू बिचारसँ हमरा लोकनि गाम बासोके नीचव कर्तव्य अछि जे सरकारक एहि ‘पुनीत गोबर पैस योजनाके’ जाग-आत तँ सज्योम विवेक ।

हमरा बिचारसँ ई गोबर संचय कानि जाकऽ आमीण गोबर जेब योजना मे तेहो बड़ योगदान करन । ते आइसँ इहेह निश्चय भेल जे सड़क इलाकाक गाम आ गोबर रामजी राजत जमा करवीता । ई संगति गाम-पंचायतक उत्थतिमे लागत ।’

मुखियाजी अंततः ई व्यवस्था देलनि आ मुख्यत भाये साक काट तय्यनि । महानन्द बाबूकेँ देखि एक क्षण कनी क्षिप्रियलाह फेर स्थिर होइत बजलाह—
‘अहाँ महानन्द बाबू ? अपने कखन आयलिये ? महानन्द बाबू खुन रहलाह किछु ज्ञान अछि देलनि । मुदा आजुक गोबरक तँ कोनो पंचैती भेल नै रहैक । हरिचरण जगताइत जेकाँ कहलक—‘तै तँ बावने मे नै । मुदा आजुक एहि गोबरक भी हिमाव हेत मुखियाजी ?’ बीचहिमे गोबर खटिधार चल जतेजित भऽ गेल—‘हेतै की ?’

हमर कान्तिश्रीक गोबर की ओरित ?’

—‘जबबंरती । हमरो छौड़ा गोबर जता कयलकए ओकर किएक नहि ?’

शिवजन दावी देलकै ।

—‘ककर बापक दिव छिये कि...’

—‘हां हौ, जतिसँ काज करै जाइ । छिः छिः । एता खुन लई जाव ।

मुखिया जी बुझीलनि ।

—‘कोना नै बड़व मुखियाजी ? मुफ्त मे हमर गोबर, जतय एकर छौड़ा हमरा छौड़ीके शायो कयलकए, ई अपने हमर कपारी फोड़ि देलक अछि आ ताहि परसँ गोबर ओकरे । ताहू रे तियाक । पगवान सब देखैत छथिन ।’ ओकर कोध जेना बिबला सँ दबावल जा रहल छलैक ।

—‘जेन तँ एकटा कर ।’ मुखियाजी तिलाप कयलनि—“आधा-आधा गोबर वृत्त रोडम बाँटि लिअ । समझा वास्त कर ।”

—‘तै किएक की ? आधा-आधा कियेक पंदावत । गोबर हमर छी आ हम एक रस्ती करारी नहि चेड देखै । जान दऽ देव मे बल सँजूर ।’ एक बेर केर ओ उत्साह देखीतक । मुदा बीचहिमे एक टा भौपू सा ओकरा धमकीलनि—

—‘बड़ नर नहि धतऽ । जिन दऽ देता । बुड़ि नहिहिन । केहेन दिव तँ

मुखियाजी कहलखुनेहें । सौंदि तै आधा-आधी । मुखियाजीक बातकेँ उठा देवहूक ले सीहर अखिबार तै छऽ ऐ गाममे ।

ओकर लाठी हाथ मे बेता तनाय लागल छलैक । महानन्द बाबूकेँ बसल छलैनि जे विचरत मुखियाजीक लोक छनि ओकरा कि कऽ गिसाफकेँ हाँकले जयलैक । विचरतकेँ नाम देके जयलैक । ओ चुनचप एक क्षण अपन कर्तव्य तोड़त रहलाह । शायत मुखियाजी पुछलछिन—“को महानन्द बाबू ? बेचार कहुलैएक ?” महानन्द बाबूकेँ कोछ आवि गेलनि ।

—बेचार ? रेग इस्लाम कबलिग इहाँ लोकनि । उमठ ओकर बेता ओकर घेंटीकेँ नारखक, गोबर छीव कऽ छोट देवक था बाप अपन ओकर कपार फोड़ि देलक, तेकर खाती अहाँ आविगत विचरत केँ इतम दऽ रहत छिएक जे बूढ़ बयलऽ । ई तँ अद्भुत न्याय-भेल मुखिया । गाम केँ तँ अहाँ लोकनि भुंवा देव आपसी सपडा करवा कऽ...

—“महानन्द बाबू ! बड़ पानिदिखत नहि जाइ । घनक एतथै । मुखियाजीकेँ एहन गम्भ कहेत एकदुरती संकोचो तँ भेल ? एकटा भौपू जा बुड़का महानन्द बाबू दिस । मुदा ओ स्थिर रहलाह ।

—“अहाँकेँ मुखियाजी भगवान छथि, पामीजी—जो हकूरीमे कि पर बाक अंपा सूलैमे आपानकेँ टोड़ रगत रहैए । महानन्द खाली भगवाने टा केँ भगवान कऽ मानैत छथिन ।

ई एहन बन्याय कयनिहारकेँ क्यो किछु कहि सकैए...बोचहिमे भौपू जा मुखियाजीक अतिरिक्त कफावारीमे लपकलाह महानन्द आकेँ मारऽ कि तावतहि हुनका कपार पर सोहाइ लाठी बगरख आ ओ कपहारि कटैत बेति रखलाह ठामहि ।

तकर बाद तँ ओतऽ धमाकान लाठी चलऽ लागल आ भयवह दृश्य उपस्थित भऽलैक । स्वाभाविक छैक जँ ओतऽ मुखियावादी आ मुखिया विरोधी दू प्रकारक पाने-भोक छल तँ भूख जनि कऽ लाठी अरिखल आ पड़ाहि लागि गेल ।

प्रात मेने महानन्द बाबू आ ओहि हरिचन पर वारंट कटि देलैक । मुखियाजी ई बयान देलखिन जे महानन्द बाबू दंगा करखलनि । समाज विशेषी तत्वकेँ रूपमे माधक ज्ञानि-अवस्थाकेँ मजद करैत छथि आ बेक-बेस कोरवाक पालिटिक्स करैत छथि, हुनका जेहतमे बाहर रहल समाज आ देलक भेल ‘हरिचरन’ ।

मुदा हरिचरण जे बेमान देलक ताहिमे ओ कहलकैक जे मुखियाकेँ वेसी तँ मुखियाक आना पछाँ-नाहरि ओलीनिहार कुदराहा सब खराब होइए । तेँ ओकरा सबकेँ पकड़ि छुनि देवाक चाही । पाछा देवल जयतै । कहू तँ महानन्द बाबू पर हाथ उठोलक कण्डखवा । बाँचि गेलाह तेहि तँ ओतऽ उठिकऽ धारैक बात जइतथि...

महानन्द बाबूकेँ पकड़ल नहि जा सकलनि मे मुखियाजीक बेचैनी बनले रहलनि बिहैक तँ हुनका बेर-बेर ई डर होइत रहनि जे महानन्द बाबू मुखियाक लेल उम्मीदधार होइ करताह ।

एहना परिस्थितिमे एहन कोनो शक्त विस्थापन तात्कालिक अल बी भऽ सकैत छैक मे अनुमान कयल जा सकैए । बीना पाका दिनमें विचरत रामजी राखक धिया पुता खाटी लकऽ सड़कक इलाकाक गोबर जमा करवावे तैनाथ रहैत छथि आ सड़कक गोबर विचरत नाम तखततथ आर भऽ गेलैक अछि जकर उद्योग बर्फील मुखिया, भविष्यमे सरकारक नीतिर भैम संघर्षमे कयल जयलैक आ गामका सर्वाङ्गीण विकास कयल जयलैक ।

ओतऽ नाममे एकटा कथवाह पसरल छैक खुब जोर से केहरा लोक हरिचरणक बयानमें जोड़िकऽ उठोलकैके जे “आठ कसकि भौपू खा” समक बड़ भरी छनि । ओतऽक बड़का ईश छनि आ तेँ मुखियाजीकेँ बेचारकेँ बेसी क्षम समकरे निकलऽ पड़ैत छनि । भौपू जा सभ लाठीक डर पनतुकान देके छथि ।

आ मुखियाजी महानन्द बाबूक खोजमे पुलिसकेँ वरावरि मगवि कऽ रहल छथिन । □

अवसरक लोक

महेन प्रसाद सा बेमेल-बैमेल खात बेर बनाओल 'बीथ-क्लेर'मे बाड़ी छीनि रहल रहिनि लखन 'भोहवा' समाचार होइत रहेक । एतएक खोजावल मन ठमकि गेलनि, किएक तँ 'आकाशवाणी'मे सभ ठा मनज्जार गंगा आ यमुना नदीक आधिक प्रकोपक छलैक आ लगभग एहि तरी-तटपर बसबिहार सभ ठा मगर दऽ समाचारमे कहल गेल रहैक जे फला ठाम 'गंगा खतराक' विज्ञानसँ एतेक छोट ऊपर वहि रहल अछि तँ यमुना एतेक ।

महेन प्रसाद आक बहुत रास सम्बन्धी सभ रहनिनि एहि छल गहरमे सँक छाम जनिनि विषयमे समाचार ई रहैक जे जबदेस्त खतरा बनल छैक आ कय ठाम तँ 'वाणिज्यिक' वितावनी दऽ देल गेल रहैक गहर छोटिकऽ सुरक्षित स्थानपर चल जाय-जाक लेल ।

सब समाचार प्रमुखतः आधिक प्रकोप आ शकर खतराक बारेमे रहैक । महेन प्रसादक अपने गहरमे 'गंगा खतराक' विज्ञानसँ बहुत ऊपर वहि रहल रहनि । मुदा अपना दऽ निश्चित रहि किएक तँ हुनकर घर गंगाक कातसँ बहुत ऊँचपर छनि आ हुनक घर धरि गंगा केँ अपनो 'करीब-करीब' खुटा खतराक विज्ञान पार करऽ छनिनि । तेँ अपना दऽ निश्चित, मुदा 'पटना-दिल्ली'क अपन बाहुबल सम्बन्धी सभक विषयमे काफी चिन्तित रहनि । मुदा, जिनै ठा कऽ सकैल छलन्हि । किएक तँ बखिनाँस रेल-मार्ग बन भऽ गेल छलैक आ दस थिलोमीटर पहुँचवामे पचीस किलोमीटर लय करऽ पाँच रहल छलैक लोककेँ ।

बाहुि अपलापर जेना कि होइत छैक, सभ बेर, कैंक प्रकारक शोभाशोक प्रकोप बहि गेल रहैक आ लोक ताहुँमे चिन्तित छल । ओहने कय माससँ लोक पाण्डुरोगसँ आतंकित छल । सम्पूर्ण अवतरीक एक तेहर लोक एहि पाण्डुरोगक शिकार भऽ चुकल छलैक आ कय ठा मृत्यु सेहो भऽ चुकल छलैक गहरमे, तेँ बेसी चिन्तित छल लोक । ताहि परसँ ई बाहुि जगित 'संज्ञासक' रोगक आरंभक लोककेँ किछु भारी वृत्तपलैक । गहरक कय दऽ सोहलामे पचास चुकल रहैक आ 'अफवाह' ई छलैक जे अस्पतालीमे 'रोमीशे' कोनों मरल गहि दैत छैक । रोगीकेँ लऽ कऽ टिटिहाएत रह । कबो बहि खुल । रोगीक प्राण चल जायत, मुदा डाक्टर सभक अपन रवैयामे कोनो अन्तर नहि

होयलैक, तेँ लोक आर असुरक्षित आ भयभीत रहल । खात-पान' उडव-बैमेल सभमे ओ भयभीत आ असुरक्षित रहल । बस्तु-जातमे तेँ दायक बुद्धि आर नीतिक । ओना, डाक्टर-सभक निजी चिकित्सक सभ बेस-अवस्था ! ओहो ओ लोकनि खुब गमल । समय पर अस्पताल जयबाक, बाईमे समय पर रहबाक हुनका लोकनिकेँ बिल्कुल जरूरी नहि लगैत रहनि । मंत्रीजी बहु भाषा आ अहिंसावादी लोक, तेँ अस्पताली सफा कपनिहार कर्मचारीतेँ लगाइत बाहर धरि सभ एक प्रकारक निश्चिन्तताक वातावरणमे जीवैत अपन अशुद्धक दिशामे ब्यस्त ।

ओना बाहुि आवि अरलापर जेना कि कय ठा सुतल' संस्था सभ मुरफुरा कऽ कठि-पट्टि आ 'राहत कारे' मे 'जूमि' जाइत अछि, कय ठा जित कमल समाजसेवी संस्था सभ जगित कऽ मुख्य 'गराहतकार्य'क संरक्षण जुमा सँ अछि आ कार्य करऽ लगैत अछि तेँ सभ चाहु भऽ गेल रहैक । स्कूल-कालेज सभक छात्र संगठन सभ सेहो सरकारी प्रेरणा वा आदेशसँ सक्रिय भऽ गेल रहैक आ 'दोला-बोहला' से रोटी, चिक्कत, दालि-पुरात कपड़ा सभ माँगि कऽ एकहुका करल आ अपन प्रभारी लोकनिक देखरेकमे तकर बितरल 'समारोह' मतलब—बाहुिबल क्षेत्रमे जा-जा कऽ ।

एकदर रेडियो पर, अखबार सभमे सेहो बरबरि 'स्थानीय बहो आदमी सभक अशिल आरखी' बल सभक अध्ययन वा मेटा-सिक्क, रणनेता आ महिला समाज सेविका लोकनिक वक्तव्य सभ बनाउन प्रकाशित-प्रसारित भऽ रहल छनि लगातार बहुत रास रूपक प्रसारित होइत रहैत छलैक बाहुिम बाहुिम छल लोकक इच्छा सेहो रहैत छलैक आ सुविधा प्रणय ददाधिकारी वा एही प्रभुति लोक सभकेँ जान-प्राणसँ बिन राति रात कार्यमे बाँड-बँटहा करैत रहबाक आ बाहुिबलितकेँ 'स्वाप्त' मुख सुविधा पहुँचाओल जा रहबाक खबरि सभ लगातार प्रसारित भऽ रहल छलैक आ मुनऽबला बुरस लोक सभकेँ मनमे आला आ विषवास जगैत छलैक जे कार्य भऽ रहल छैक ।

रेडियो वा अखबारकेँ समाचार सभक सब नामक बाहुिम बेरावल रहबाक बात कहैत छलैक आ लाखो स्त्री-पुरुष 'आल-बन्धा' आ 'मनेजीक' विपत्तिक कण्ठक जलकारी सँ छलैक जिनका सभक उचित व्यवस्थाक लेल सरकार तेँ अल्पमे बहुत रास निजी संस्थात सभ सेहो सक्रिय अछि । आ, लोक सभकेँ उपयुक्त स्वातन्त्र लऽ जयबाक बाले, एतेक नाक, तेँ एतेक ई-बी ओकर व्यवस्था भऽ गेल छैक । कयनो-कयनो देशक बहका-बहका, औद्योगिक प्रतिष्ठान द्वारा सेहो दस हजार पाँच हजार सह्य सहायता कोषक हेतु देल गेल राशिक दरम दर सचाँ होइत छलैक आ लोक हुनैत छल, कयो-कयो तेँ खुब आग्रस्त अनुमन करैत छल कयो-कयो मुनिकऽ बिरल होइत छल । आपस्त होइलला लोकक बहक छनि जे समस्ता देखवानी छैक वा एकरा वास्तो मानवे कऽ सकैत छैक सरकार से बहुत छैक ।

जो विरक्त होकर उठाहूँ वहि तब परिस्थितिक मोष्टीक आ सेधितार एवं सहायार सुनिकऽ हुनक तर्क छलनि जे आखिर ई वर्ष वर्ष-बाढ़ि अविने किएक छैक ? ई कोनो एहि वर्ष तँ अपनैत नहि । कनोक वर्षमें अकि रहब- छैक आ मोमें जनजीवन जेँ मभ वर्षे सहाय-सहाय कऽ पैत छैक तँ आखिर स्वार-चिन्ता किएक नहि भेलक सरकारकेँ एतेक चिन्त ? एहि भरौमें जेँ बहुत रास संस्था सब छैक, बहुत भिन्न देशक आ अपन विभाग सबक अनुदान सब भेटैत छैक बाढ़िपस्त लोककेँ सहायकार्य ताही सम्प्रीद आ विश्वास पर बाढ़िक समस्याक। मूल रूपमें जनआन पर किछु मेरचले नहि निरंक आ वर्षक वर्ष करोड़ो अरबोंमें राष्ट्रिय सम्पत्तिक सम्मानना कवल आइत रहलैक ?

पहिल अवसरक लोक बीरर प्रकारक लोकमें एहि प्रश्नपर ताराज होइत छलनि जे अहोनोकनि जे भऽ रहब छैक तकरा महसूस नहि पैत थोकेक आ एक टा अमर्गत प्रश्न डाढ़ करैत छी जाहिसेँ 'मिर्वा कार्य' में नेजी नहि आवि गये छैक ?

सोभित-प्रकारक लोक पहिल प्रकारक लोककेँ कहैत अछिथि—'अहिक नै हिसाब किताय तामि जाला अछि वर्ष भरिक जाय-बीसक वहि बाढ़िक सहायता कोषकेँ । अहिक चिन्ते की ? मुदा एतेक लोक-बाढ़िमें भसिबा कऽ बुकि कऽ गरि जाइत अछि तकर दुख वा चिन्ता अहिक किएक हो ? रातिमें सपरिवार अपन वस्त्राकेँ धुतार को कऽ माय-बाप सुतैए आ भीर भेने वस्त्रा, बाढ़िमें कतऽ घर-संगे बहा-यऽ जातथ मुँहमें समी गेल रहैत छैक माय-बाप बच्चा नहि पवैत अछि, भाय, बहीन, भबेजी कुनक तँ नैह समझा छैक । अहोरौकनिकेँ सततय तँ 'राहत कार्य' खुदा देखा भरिमें अछि । जतऽ ततऽ पाइ जटवैत छी तथाकथित आउटक इरेँ किछु खर्च करैत छिजेक आ विशेष संग्रह करैत छी । भऽ गेल । तँ अहाँ तब केह तँ ई 'सीजन' थिक । आनारक सीजन । जेना भदवारिने मन दिन बजारमें बोसक बोस छत्ता बिका जाइत छैक ताहिना बाढ़ि कि कोनो प्राकृतिक संकटक कालमें बहौ औकातिक व्यापार अवस्था तका बिबर भरि छैक जाइए... ।'

स्वाभाविक छैक जे एहन बाय-विवाचनं अगुआक स्थिति उत्पन्न भऽ जाइक । आ एहि तरलनं ताहि-गर्दीहि कहुनिहारकेँ समाज विरोधी त्याग वा तेथामे आस्था नहि रखबिहार, घोर नास्तिक आ जनविरोधी प्रकारक लोक वृजल जयवाक वातावरण बनल रहैक ।

एहने वातावरणमें भरि दिन वितलक बाद संव्याकाल महेश प्रसाद वैरल रहबि आंगनमें । कहीं नहि भऽ रहल छलैक । घोर उष्ण व्याप्त रहैक । बिजली अपना स्वाभाविक गतिमें पछिला सवा घंटासँ गायब रहैक भरि दिनमें अरिस्त ई चारिप बेर छलैक । महेश प्रसाद आंगनमें खुबले बेहे बैसल रहथि । बाढ़िक

विभीषिका आ सखा एवं सरकारी मुखकसाल कोडलापन पर भरि दिन जोष सभतं बिबाद भेल छलनि । सैह-ज्ञान सब बसले बुरिआली रहनि । सब विरक्त रहनि । ओ स्वयं बाढ़िपस्त लोकक वास्ते किछु करऽ जाबैत उपरहऽ मुदा एक ठो नीकरी, सोभर परिवारी अभाव, चिन्ता । तँ मन समोधि कऽ बाढ़िक सहायारेमें संतोष करैत छलह, यऽ सुख कोषिण । बहुत रास युवक सम्पत्ति रहनि, पूरा नगरीय कार्यकलापक सूचना रहनि जे कहीं मोड़सकाने कहीं संस्थाक कर्ता एतना संग्रह कलनि जेँ अगऽ कहीं नोहायक अछूर मभ-अमभ एक-वितक मजूरी बाढ़ि सहायता कोषकेँ दऽ देलकैक जे फसों में डूबी खोललनि... ।

एहि असंतोष 'संदा-संवेध' आ तथाकथित सहायता कोष पर हुनकर देखने, मनमें जीवा धधरा लागि जाति । पूरा समाजक विरक्ति अविश्रित धर्मज्ञान केँ सैनिकताप्रस्त जौक लोक एहि कल्पित तथाकथित समाजकी मोननमें हुनकर हुनक आतक्ति बेचैत रहनि । मुदा तबेध सभसंगे व्याप्त रहैक जेँ रोजभार जकाँ वातावरण । ओ एकसरे कऽ की समेत छलनि एही क्षम सुशुचनकेँ बैराल बेह पर लुपकैत पच्छड़केँ उड़यबा लेल नवीत होक रहल उठाहूँ तबने दू टा युवक अयलनि । बैसऽ कहलनि । ई दुनू युवक देखऽ-सुनऽी 'मैम'है, सुखर पावऽ मुदा सम्भीर आ अहिकी तरलक कथित-छथ । बैसी काल अइत छनि ।

—'की बात भुजुल ? की तब भऽ रहल छैक ?' महेश प्रसाद पृष्ठलनि ।

—'की तौक ? एहि समाजमें कखनक केह छैक को ?' ओ हण्ट छल । दोसर लइका सेहो अपन चुणी आ सम्भीरदान एकर सहयोग देलकैक । दुनू युवक मिय अछि ।

—'कोरवाक लेल ?' संखदार नहि पहलजह्य ? कहलगाथनं कऽ कऽ पूरा ओ इलाका बाढ़िमें डेरायक छैक एतेक लोक तथाहीमें पड़ल अछि ।'

—'किछु तबहौ नहि छैक ? बहुत रास सरकारी अनुदान सब चालू छैक । लोक उठा रहल अछि आ बड़ कोरसेँ बड़ि पोटिडिक सहायता भऽ रहल छैक ।' ओ आर चुनैत होइत कहलकनि ।

—'तो' एका भऽ कऽ किएक बाढ़ि रहल छऽ ? खाली 'कलौ' मोहल्लानें सुनली जे भूतपूर्व खुनिनीपेलटी सभासक्ति कलोक रास बस्तु टाका जमा कऽ कऽ राहत कोषमें देलनि अछि... फेर बीनती कहीं दऽ मुक्तई जे अपन संस्था चलिब महिला संघक कोषमें, ओही बैरलें बड़ सहाय छथि, स्वास्थ्यक विरोधक बादी राति चिन भाग-बीड़में छथि, मुनबोहै' जे ओ कार्यालयमें पयंत छुट्टी जऽ लेगे छथि एहि राहत कार्यक लेल समरिचार समर्थित छथि... ।

—'समर्थित छथि सरकारी अनुदान सब तबक फाँटी आ बाढ़ि निरीक्षणमें

आपस सेल बढ़का नेता सभक आठो । स्वास्थ्य सेहो खूब ठीकठाक छनि । अचानक स्वास्थ्य तँ छैक आदमीकेँ । आर्थिक भन्तःप्रान्ति, से पर्याप्त छनि । जीवन छैक आ आपन बुद्धि तथा समाजक वैयक्तिकी कुराम तँ प्रबल छनि आ जीवनक पुरा-पुरा लाभ छवयमे अपन प्रति समेत, मिन शुरुआत सहित खूब व्यस्त छनि । अगिला चुनौतमे प्रतिवेककेँ ठाढ़ी करौह ।

—‘एतेक बात तो’ किएक कहैत छः मुकुल ? किएक एत छः ? ओकर जोध भीक लगलनि महेश प्रतापकेँ । तेरो पुछलधिन—‘उचित’ जोध छैक एकर । जयराज चन्द्र श्वर देलनि—‘बहुत धीमेसी छैक सी से । बाढ़ि राहत कार्य भइ भल, मिनेट आ गोत्रक परामिट भऽ गेल । बहुत-बहुत छोटाछा आ बेमाली चलि रहल छैक । जे बेकारा बलि वच्चे पाक कात पेटिसेँ बेसयल अछि से तँ कागजी वायवी आश्वासन पर रहबै करत जायत प्राण नहि निकलतक देखै । मुदा स्थिति की छैक जे किछु सामान पड़थोली’ बाढ़त छैक त उँधकेँ संकानक छतपर छनि पड़ैत छैक चाहे बरबाद लेल पाउवर दूधे किएक नहि हो । कारण की तँ होलिकाटर तँ ओलहि छतरि सँछ । सेहो क्षिरण भऽ जाओ तँ बात । छतवाला महोदय एतेक जे जान हुनका ओहन ऊँच पँच मकान पीटि कऽ ठाढ़ कयने छनि तनिका एतही लाभ नहि, अर्थात् किछु बिस्वा सिस्कुटो आ दवाइयो नहि ? भऽ तँ सेल बर्षमे एक बेर तँ आगदनीक ई महालगेत बाढ़ि । नकरा निरर्थक थोड़ा जाय दिवऽ । आ फलस्वरूप बरि ओ बिस्कुट अवनिहार गेलिहारक स्वयंसेवमे बाहू लाफो सँगे जेटमे परसाइत अछि ... आ बाढ़य हम जेहूँ निवहेक अछि ।

धिनकार छैक । न्या कनिहार जोकक लेल किछु करबोको कोनो गुंजायमे नहि ।

—‘की बात की केरीक ?’ महेश प्रसाद पुछलधिन ।

—‘काहि सेलहुँ कचहरीमे जे केन्द्रीय बाढ़ि राहत कार्यालय छैक । एक टा पैघ फोडली, बढ़का देवूत, कुर्मी मभ आ टेलिफोन । पहिने तँ प्रतीक्षा करऽ पड़ल जे नयाँ फेटव । फेर एक टा सम्मन पठाऊँ गेटेक सम्भव प्रकारक लोककें पेरयब कोनो कोसर, कोठलीसँ अवधारित सिलाह । सभ अचिनो-अचिनो कतपुसकी बर्का हुनकार्य गण करैत छल । ईहो बात किछु बिचित्र आ रहस्यमयक बुझायल । खैर, ओ बेसकाहूँ देवूतार । कतहुँ से टेलिफोनकें बँदी बूझि पड़ैए हम जेतवाँ कालतँ ठाढ़ रहौ, बाजि रहल छैक । खैर-आध ओहिसेँ एकटा चम्पच उठौलनि बाँरा आ ‘हेल’ बजवाक कुपा कयलधिन ।

48 □ रागेश गुप्त

ओम्हूँतँ प्रायः जीवक सौम सयल सेल छलनि कोनो ठाम जाहि पर किछु सामान लादिकऽ पीरतँ की दिस जयवाक छैक । ताहि पर ओ कहलधिन जे-‘यो ही जीव है, दोनों बाहर है । अभी तो एक थंहा ‘बेट’ करना पड़ेगा’ एक घंटा में टेलिफोन कर लीजिये ।’ भाई राम हो जायतो तो हम क्या करें ? सरकार बाधन बेसी है नहीं अब यो यो जीन से इतना बड़ा बाढ़ प्रस्त-अवे संभालना ... । भाई हम कोहूँ है हमसे मतलब नहीं ... राहत कार्यालय से बोला रहे हैं ।’ बाँरा राखि देलधिन । कडा बिचित्र अछि लापन कीध आ निवतनतँ जेना प्राण चींथव लायल । मुदा हम तँ सेल रही राहत कार्यमे किछु गलतक सकिय कार्य करय । ओकराई गण केरीक । बरतुतः अधिकारी अचिनो छलाह जत निवसैत देवुनवर मानक बेस पैघ पतोड़ा सेहो राखल छलनि, ओ उलफाँत पर जयव देनिहार अचिनो प्रशासनक अधक कहलनि—‘अच्छा कहा । साहू सब जयकार नहीं किये रहते हैं । अरे, इतनी सेवा करना ही चाहते हो तो एक ठो ‘बीप’ का इन्तजाम नहीं कर ले सकते ? किसी से ले लो । ये बीप ऐसे ही हैं । सरकारी जीन मिल जायी है तो राहत-कार्य कर पाते हैं । बेहूने जीप । और यहाँ सरकार की हालत यह कि साथ से-से चाड़ी साथ दो जीन इतने बड़े क्षेत्र के लिये ...

—‘बीप दूसरी जीप गई है कहाँ ? क्योंकि पहली काही हो सबीर सरफ गई है, दूसरी ?

—‘सर, जमे जरा जान लाने सेवा है । देख नहीं रहे हैं मूख गये हैं सब । बेरायती के पास सेवा है ।’ आना तो होमा इतनिम मैंने थंहा पर बाढ़ टेलिफोन करने कहा है ।’

एक गम्बरक चम्पच, साहेबकेँ शिर्षत कहलधिन आ फेर हँ-हँ करऽ लगलाह । कहेव प्रमन सेलधिन आ खूब जोरसेँ पुँहक पात निवस लगलाह । हमरा तँ जेना, ओपिनक घोट, पीथिक रहि काय फल । कपो ओतऽ हमरा कुन गोटेक उपस्थितिकेँ महसूस नहि देल बाढ़ि रहल छल । ओ सभ अर्थक ईश-उट्टा मे मस्त छल । हारि कऽ हम ओकरा कोठलीमे पीस लेलिए । एहि बाततँ ओ सभ जेना चींका ।

—‘की बात छी ही ?’ एक मोटा पुछलक ।

—‘हम बाढ़ि-पीथिक लोकनिक बाँसे किछु कयने चाहित छी ।’ हम ‘साहेब’ केँ कहलधिन, आ आदेश लेबाक मुजबे डाढ़कऽ नेहहुँ । —‘हमरा काज दिवऽ ।’

—‘साहेब समेत सभ गोटे हमरा एहि बातपर गुराई-गुराई कऽ देखऽ लागल । फेर साहेब किधिन दिनक होइत पुछलक—‘आप किस संस्था के हैं ?’

—‘बी मैं । कोनो संस्थाक नहि छी हम ।’ हम कहलधिन तँ जेना हमर ई गण ओकरा सभकेँ बड़ अनौत बूझयली, अवसोहीत ।

— 'संस्था के नहीं हैं, तब फिर कैसे करेंगे कार्य ?' ओ पुछलक ।

— 'किष्क, हम असकर नहि कऽ सकैत छी ? काज करवा लेज संस्थाक होयब जरूरी ठैक की ?' हम कनी स्वखे स्वरे कहलियैक ।

— 'सो तो हे भाई । जरूरी है । हम आपको किस रूप में काम सौंप सकैत हूँ ?'

— 'एक टा कार्यकर्ता, एक पुष्पक रूपमें, आर कोन रूपमें ?' हम कहलियैक ।

— 'नही भाई, हम ऐसा नहीं कर सकतें ।' लखन केर ओ हमरापर जेना 'कुषा' करैत सहानुभूतिमें सुभाव देवऽ लागल — 'आप ऐसा क्यों नहीं करते, किसी संस्था में जूब जाइये और काम करिये ।'

— 'असम्भव । हम दोनों संस्थामें नहि जुड़ि सकैत छी ।'

— 'तब फिर, कोई अपनी ही अलग एक संस्था बना दायिए । सुविधा रहेगी ।' ओ भागी सुझाव देलक ।

— 'पुदा ई अलबत्ता विचित्र बात छैक जे हम चाहि रहल छी एना कार्य करी आ अहाँ सुझा रहल छी संस्था बनवऽ ।' ओ शयनहुँ हम ।

— 'लाचारी है । हम आप को कैसे रेकोगनाइज करें ? आप ही बताइये । हम आपको कैसे, किस आधार पर मानें ?' ओ खूब गर्भीर स्वरे पूछि रहल छलाह ।

— 'मैं हम अहाँके' की बता सकैत छी हमर एतने कहब अछि जे हम एहि परिस्थितमें अपन किछु सेवा देवऽ चाहैत छी ।'

— 'हम वृझते हैं आपकी भावना लेकिन इस लाचार है ।' ओ वजलाह आ जेना हमरा पर दया करैत आना कहऽ लगलाह — 'अच्छा, आप तो चिन्ताभी लगते हैं, ऐसा करिये, आप अपने कालेज से लिखा धर जे आइये प्रिन्सिपल से ।'

— 'जी नै । हम परीक्षा कऽ चुकल छी, कालेज छोड़ि चुकल छी । हमर एहि उत्तर पर ओ किछु चिन्तित भऽ गेलाह आ फेरी किछु सोचऽ लगलाह ।

— 'अच्छा, एक काम करिये । आप किसी बड़े आइसी से प्रमाणपत्र ले आइये तो भी काम...

विचित्र बात अछि महाशयजी । हम चाहैत छी काज करऽ आ अहाँ हमरासँ बड़े आइसी' तकवा रहल छी । स्वामाधिक छलैक जे हमरा स्वरमें आप उत्तेजना भरि गेल छल । हुनक मुख-मृदानें सुभाव जेना कि ओ वचनमें हमरा पक्षमें किछु आर मोवि रहल छथि ।

— 'अच्छा, आप एक काम करिये, आप नेहरू युवा केन्द्र मेंही एक प्रमाण पत्र ले आइये । वह तो आप ही जेना युवा के लिये है ।' हम तँ चीला कऽ आगि होइत रही । तँमो किछु सोचैत जिबा भेलहुँ ई कहैत जे — 'देखी, कोशिश करैत छियैक एक बेर ।'

नेहरू युवाकेन्द्र पहुँचलहुँ तँ अधिकारी महोदय पैच पथिपथी रोटी भरवा रहल रहथि, जे रोटी कपडा मोहल्लाक लड़की सभ फकीते रहैक । विभागीय कमरा सँन चुहासँ सऽ कऽ रोटी भरबै धरिक पुरा दूधक फोटी घीचि रहल छल आ फोटीने नीक बपवा लेल लोक वेजैत रोटी छोड़िकऽ अचिर वा ओड़णी टीक कऽ नवैत छल । फोटोग्राफर काय कोनसँ अधिकारी समेत एहि दूधक फोटी उतारबामे अपसरात छल ।

हम एक बितर समय देवाक याचनाक सँन लखन अधिकारी महोदयके अपन उद्देश्य कहलियनि तँ ओ खूब गर्भीर भऽ गेलाह । हुनकर ई संभीरता चाहि सोमा छरि बड़ि गेलनि जे ओ बड़ि दार्शनिक मुद्रामें अपन असमर्थता बसबऽ लगलाह ।

— 'देवऽ वीक्षा ! हमरा ओतज्ज जे लोक राहत काजमें संतप्त अछि तकरा कथक तँ एक टा निश्चित नुषी ठैक । आज आरों एहिमें बेसी लोकक बारमें तँ हम एखन नहि सोचलहुँ अछि । संस्था तो 'रङ्गल-लिखल आदर्शवादी उत्साही युवक छऽ मोरा तँ अक्सर भेटबैक चाहैत छथऽ । तीरे लौकिक सवृज युवाक लेल तँ नेहरू युवा केन्द्र छैक । परन्तु हमरा बड़ि अकसोब भऽ रहल-ए... एखन तत्काज ... तँ... ।' हम पूरि अबलहुँ ।

मद्देन इसाद चुप आ उदास भऽ गेल छलाह ।

— 'आब अहाँ कह कि बतऽ सही काज करवा ले अनावश्यक 'शिक्षा' लगावब जरूरी छैक ओतऽ बसो की काज करत आ कोना ?' चन्देकर बुझी आ क्षुब्ध छल ।

— 'आ' दोसर दिख संस्था सभ अछि । रोटी वेजैत-कालक आ वेजैत-कायक फोटो चित्रणामे स्वस्त अछि ।'

लोक जनसाधारणक एहि संकटापन्न हालत के अपना-आपना पक्षमें एहि सीमा धरि भजा सकैए से सोचलते रहि जा सकैत । पूजा होइत अछि । आइगी, सेवा आ समाज-कार्यक अङ्गमें एहन कमीना मेहो भऽ तर्क । तँमो ई सभ चलिबै रहल छैक । निमक्का भाज्यवाक छनि से बाड़ि तँ बाड़ि, मुदकि पर्यन्त भजा लैत छथि । अन्तर्य पूछी तँ मोहने लोकक जमाना छैक । 'वैतर'क जमाना । वैतर ! चाहे सक्षरा कीर्षा काज किछु होइत हो ।

— 'श्रीमती सिन्हा । इलाकाने बंधारीमें नुकायल छैक हुनकर व्यक्तित्व । आब काहि एहि बाड़ि-पीड़ित सहायता कोषक लेल, राहतक लेल की-की ले कऽ रहल छथि ? एक संस्थाक महान्वी वन्दित छथि । परमने कऽ कऽ धूमैत छथि लोकान तमनो विष्मती छरि जे ओ दलित महिला वर्षक संकट में कठिन कार्य कऽ रहल छथि । ओकरा लौकिक निवृत्तिके' मुधारख ओकरा सभक शीवकके' उठावने हुनकर शीवक परम ध्येय छनि । बाइ-काहिह हुनक परन ध्येय बाड़ि पीड़ितक सहायता कऽ चलनिहुँ ।

—है-है, दूसर बैठी कहि रहल छलिन । पछिसे दिन तँ ओ ओकर स्कूलमे आयल रहलिन, निवेदन करल जे अगिला दिन सभ विद्यार्थी अपना-अपना घरसँ कमसे कम छो-छोटा रोटी आनय जे कि बाडिग्रस्त क्षेत्रमे भूखल, नेन्ता-भुङ्का सभकेँ बाँटल जखनक आ सत्तेँ दोसर दिन हुँसोधि कऽ जोमनी लऽ गेल्लखिन । आब सोनू कसो १४-१५ सभ विद्यार्थी पहुँचल छल स्कूलमे । सब देह सभ अनुपस्थित होइक तँसो अठतरि सभ रोटी एकट्ठा भेलैक ।

—आरो जोड़िपी नहैल वान् । एकटा बड़ मज्जर पटना भेलैए । श्रीमती सिन्हा जे राहत-काज कऽ रहल छलिन तकर सभे दोसर उदाहरण नहि भेटत, बेजोड़ । चन्द्रेश्वर स्वस्वपूर्ण बिहूसी देत बाजल आ चुप भऽ गेल ।

—ते को भेलैक ?' महेश प्रऽ पुछलखिन ।

—श्रीमती सिन्हा एकटाखार स्वाधीन हाई स्कूलमे सेहो रोटी बना कऽ गेल छलीह । रोटी तँ हुँसोधि कऽ लऽ अपलीह । दोसर दिन ओ पुरान-पुरान कागड़ा गेल गेल रहलिन । यैह कहलुक तँ बात छैक । किछुक तँ शिक्षक सभ सेहो चुप रह्योम कलकलनि और अपना विद्यार्थी सभकेँ अनिश्चयक लोभनिक खबरि दियलक ई आग्रह करलैलकनि जे पुरान-गहिरल कागड़ा सभसे सेहो बाडिग्रस्त लोकक सहायता करनि । से-वैह कागड़ा सभ बाँडि कऽ श्रीमती सिन्हा लऽ आब आयल रहलिन । ओ जीप रोडिकऽ बरन्दापर प्यरो गलि कऽ जखने हुँसोहि कि बसो एक मोटे चिकरैत बाजल —बैह आवि गेली । मोर कुन्नाही केँ मार... ।' तखत आरो लोक सभ बाजल —बैह आवि गेली । मोर कुन्नाही केँ मार... । श्रीमती सिन्हाक बुझिये ने ने किछु अवलति । विद्यार्थी शिक्षक सभ जमा भऽ भेलैक । श्रीमती सिन्हाक बुझिये ने ने किछु अवलति । परन्तु जखन हुन्का-गुल्लो बऽलैक जा किछु छीहो सभ साक-साक श्रीमती सिन्हाकेँ परिचायक लखलनि, काँच-बैमान कहलकनि आ तुरन्त भाँति जाक लेल कहलकनि नहि तँ हुन्का खोडी-खण्टी बाँटि दियनि तँ ओ बड़ चवड़ा गेलीह आ जान पर आफत लोभिकऽ जीप दिस गइल लखलीह । भाँति नहि पवैत छलीह बेचारी तँसो बीइसीह कोनो करहै गाड़ी धरि लक्ते-फेते । पछिसँ हुनकापर चुन्ना-चट्टी आ केँस सटहा लाधल कोनो करहै गाड़ी धरि लक्ते-फेते । पछिसँ हुनकापर चुन्ना-चट्टी आ केँस सटहा लाधल कोनो करहै गाड़ी धरि लक्ते-फेते । पछिसँ हुनकापर चुन्ना-चट्टी आ केँस सटहा लाधल कोनो करहै गाड़ी धरि लक्ते-फेते ।

—अहो, ई तँ बड़ अनुचित बात ! एका नहि देखाक चाही । बेचारी एक टा मनी होइत बाडि पीछितक हेतु एतेक जान उपलब्धक मेहनति कऽ रहल छलिन लोक तकरा.....आखिर स्कूलक शिक्षक लोभनि कऽ रहलिन जे विद्यार्थी सभ ओन्ही सिन्हा सभे ई व्यवहार..... । महेश प्रसादजीक एहि तथ्यक सहानुभूति पर ओ हुन

तोटे एकहि सभ विरचित आ रहस्यसँ चिह्नित रहल छल । तखत चन्द्रेश्वर बाजल — 'परन्तु श्रीमती सिन्हाक रोचिका सिन्हाजी कार्य श्री कम्पे रहलिन सेहो सुनियी ।'

—'की ?' महेश प्रसाद पुछलखिन ।

—जे रोटी ओ स्कूल सभसे जमा कऽ कऽ अर्बत छलीह, बाडिने बहुत रात रोटी तँ अपने मनीव अभिभावकक रहैत छैक, आ जकरा ओ सरकारी जीप पर छलि-छलि अर्बत छलीह तकरा ओ बाँटि छैक अर्बत छलीह । परन्तु तकर खर्चा ओ जगत मन्त्रो जकर महामंत्री छलिन तकरा खासार्थे वेल्डैत छलखिन । समितिक कोषसे जे हजम कयने छलिन तकर रेकर्ड दुष्ट रहलैक कहल । ओहिठोक गटक त होइत रहैत छैक जे ताम्र समपार ।'

—अच्छा, ते कयलखिनहे ?

—तहि तँ की ? संयोग छलैक जे ओही स्कूलक एक टा जायदक दुका बिकसक केँ ई आनकारी भेटि गेल रहैक । ओ राता-राती एहि सुचनाकेँ प्रमाणित कयलक आ मोये श्रीमती सिन्हाक रोचिकाक कागड़ा जमा कऽ लऽ जाय गेल अवस्था रहलिये । ओ तैमार छल । ओ हूँकि देलकनि । रिवाइलकनि ।'

मना सोचय क्यो ! ई राहत-कार्य किछु लोकक व्यवसाय नहि तँ आर की ? ओ अवस्था होइत बाजल ।

—ई बात सत्यमे सत्य छैक कि व्यक्तिगत ईष्यो-द्वेषसँ नहि ?' महेश प्रसाद प्रश्न उठौलखिन ।

—व्यक्तिगत ईष्यो-द्वेष नहि । टोके छैक । सुनैत छी जे जे कि समाज मेविकसक ओहि संस्थाक अर्थका सेहो कोनो बड़ पैस प्रशासिकारी क्यो छलिन आ जानीय राजनीतिमे बूब सकिय शिलकर अपरहस्त छलिन ।' मुकुल बजल ।

—स्वयं श्रीमती सिन्हाक घरमे निर्पणित कयटा नेता लोकनिक आपत-पेन रहैत छलिन । तकर लाभ ओ चुप उठबैत छलिन । स्थानीय प्रशासनिक सुविधा पयथा गेल आ ककरो अर्पणित करवा लेल, रहल काजक लेल, अपन 'एस' समितिक लेल अनुदान जवैने । आर आब एहि सीजनमे तँ ओ एही सभ समाज-सेवक औचित्य के वेल्डैत देखिबोम भगवा रहल छलिन । स्वाभाविके छैक जे ई काम नेता लोकनिक सहयोगे प्राथमिकताक संग कयल जा रहल छलिन ।'

—'ई छलिन श्रीमती सिन्हाक रोचिका । बाडि करिह बाडिग्रस्त सभक सेवा कऽ रहल छलिन आ पुजी बड़ा रहल छलिन । पाईक पुँजी, सामाजिक प्रतिष्ठा आ राजनीतिक पवित्र पुँजी..... ।' चन्द्रेश्वर बाजल । महेश प्रसाद आ चुप रहलिन हलप्रथ । मुकुल सेहो चुप रहल । आब चन्द्रेश्वर सेहो ।

सोम साडे सात बजेत हैनेक। किएक वी रेडियोसो प्रादेशिक समाचार भऽ रहल छैक। आ, ताहिसे मुख्यतः ईहो समाचार कहल गेलैक जे पाला गहरक श्रीमती समाज सेविका किशोरावस्था एके विद्वत् रोड़ी बैठवाक, एतेक राम कपड़ा बैठवाक, साहसिक आ आदर्श कार्य ककलनि अछि। किछु निजी चरखो समक चर्चा ककल गेलैक जे सरकार आ जनताक मदति कऽ रहल छैक। अनितु ई संस्था सरकारक काज हलुक कऽ रहल छैक।

समाचार सोनू गोटे मुनि रहल रहल। तौनू एक बोसदाक मुह तकीत। महेश प्रसाद अपन गंजीस आ ओ दुनू अपना-अपना हाथक अखबारमे मगड़ उड़ा रहल रहल।

समय चन्देश्वर कहलकैक—“अजूका हडियन नेशन देखलियाक अछि?” महेश प्रसाद थूड़ी डीलीलखिन—“नहि। ओ पूरा उमरा कऽ हुनका खीसो कऽ गेलकनि। अहार छैक। बालदेन मेला कऽ ओ पड़लनि जे “राहुत कायक सफल संचालन आ समाज समाज सेवा लोकनिक सेवा साधना एतेक ईश ब्रह्म समस्तक एहि विभोषिकाक समाधान प्रस्तुत कऽ देबामे सफल भेलए।

महेश प्रसाद अखबार समेटैत चन्देश्वर के आइस कऽ देखलिन आ चन्देश्वर फेर ओहि अखबारसँ मन-भन करैत मगड़ उड़ल लागल।

—तखन की करै जवबड?’ महेश प्रसाद समस किन्तु पराजित सन कमे पुछलखिन।

—की करबै? चन्देश्वर निरास छोड़ैत बाजल।

—प्रश्निक निकालबै। मुकुल अकस्मात उत्साहमे बाजल।

—प्रश्निक? ताहिसे?’ महेश प्रसाद पुछलखिन।

—एहन यथापात्रिक सत्त सभक कच्चा चिट्ठा छानि-छानि कऽ लोकके चेतवैत रहबै। एतवा त कैए लेवै।

ओ संतुष्ट होइत चुप भऽ गेल। चन्देश्वरो चुप छल। महेश प्रसाद किछु क्षण चुप रहैत फेर कहलखिन—“बेजाब नहि।”

मुर्दा मुर्दाक भाग्य

हुमरा लोकनि मेहनत अमानत पहुँचैत रही, आ रिक्सा अस्पतालक हातमे बेचिने छल नि पहिल बच-बाक, सोही डार बाटे बाहर आबि रहल छैक। ताका। चन्देश्वर ककन जोड़ाओल, उदथा हडियन बीतल कचड़ी पर निश्चिन्त आपन मरल मगुस। स्मोथो भऽ कर्नल छलैक, मुसो। पाछो-पाछो ओहि मकक परिवारक लोक राम लोकाशुल। मुदा नयत भोकिसे डेर धरैत जकाँ—पछो।

रिक्सा पर बीमार पडिनी—हुमरा बच्ची—के एहि दुपहरि डेर भेल हैनेक। हुमरु गोटे एके बेर सोचलियैक आ कोनो तेहन बात सोचऽ लगलहुँ जे ओकर डेरा-यल मोलके आन दिश कऽ गियैक। अछनि मनमे धुक-धुक लागल रहल जे अस्पतालमे छैक, लगले कोनो आबि मुर्दा नहि भेटल आ ई दुखिताहि छोड़ी आर डेराय लागल।

ओहुनी ओ बेरो डेरायल रहल। हुमरा लोकनि अपने डेरायल रही। जे किछु लक्षण ई नयका प्राणवासी रोग मस्तिष्क-ज्वरक गुनल-बूझल छल, सँह बुझल लागल ते हुमराक अँकुरा रिक्सापर लागि कऽ अस्पताल सऽ गेल रहियैक। हुम एहि दुयारे खड़ा गेल रही जे हुमरा विश्वास कऽ गेल रहल जे वैह डेर थिकैक। यद्यपि सभक ई विश्वास छलैक जे ई रोग द्रुत बिहारमे नहिबै जकाँ अवलोक अछि। पटनामे एक-आध टा घटना भेलैक अछि। ताहि पर स्वास्थ्य मंत्री आ स्वास्थ्य विभाग समेत राज खानोक पैद्य-पैद्य डाक्टर लोकनि विचार-विमर्शमे लागल छथि। मुदा भागलपुरमे ई बीमारी एहन नहि पहुँचलैक अछि, से लोकक विश्वास रहैक। तौपी जेकि मनमे धुक-धुक बनले रहैत छैक लोककेँ ते’ ताही चिन्ता-आशंका दुयारे हुमरा लोकनि खड़ा रहल ओकरा अस्पताल सऽ गेलियैक। खूब माय-बर्द रहैक आरिहए सँ, बोखार आ देह दटाख। संगहि एकटा रद्द सेहो भऽ गेल रहैक ओकरा।

अस्पतालक हातमे प्रवेश करिने कालक ई दुप गेल। मन आर कोमादन करऽ लागल। ई एना किएक सभसँ पहिले सोझमे मुरदा भेटल?

खैर! ओकरा इमर्जेन्सी आ आइडेंटिफिके मेलाओल गेलैक। डाक्टर जांच कएलखिन—बिछाओलपर सुताकऽ पेट, जीह, आंखि आ पूछतछ।

पुनो बड़ा, तहि पबड़यवाक आश्वासन दैत खून जांचक तुझाव दैत दोसर रोगीमे व्यस्त सऽ गेलाह।

खुन आँच लेल देलाक बाद रिक्का पर पछिबीको नऽ कऽ वाली बगइची नीलैत डेरा चल जायि, ताही कार्यक्रमक सङ्ग हमरासोकोमि अस्पतालसँ बाहर होवकाक उप-
क्रम कयलहुँ तँ एकटा दोसर जग भाषा उतरवरिया बाँडलें—पछिबा तँ थिछु दोसर
प्रकारक कयवाथा ।

लाल कालमे मजाओल कुन आदिम विधिष्ट बनल । पाछो-पाछो धूप जैल ।
लोकमे सभ बाधारकतः सम्पन्न जगै । सभक आकुतिपर कुल शिवाकाऽ एकटा सन्तुष्ट
भाव । प्रोक्क कारिच कयल नहि । जयघोषा सम्पन्नताक सभ लक्षणसँ भरल-पूरल ।
बाजा-बाजा मेहो । पयसि मे जयकम अस्पतालसँ बाहर मुँक्य सङ्कपर रहैक । सभ
बाजा-गाजबला जयमन नहिछ ठाड़ रहैक जेना शीङ्कना मैदानमे प्रतियोगी सभ
फटवका छटवाक प्रयोग मे साकांक्ष रहैल अकि, वीडिकऽ पहिने नहुँ बसा लेल ।

पुरा अर्थी कुन शक्यतासँ सजाओल रहैक आ ऊपरसँ वसक मंडप जकाँ कपा-
ओल रहैक जाहिपर रंग-भिरंगक फल सभ थपि कऽ लगाओल रहैक । खस गहिवला
ओछाओम आ भावमयी तथियापर ओहि जवक बाया भऽ रहल जनैक । यद्यपि एकल
कोनो धूम धडाका रहैक नहि, मुदा देखलसँ एकदम दुसाइन जे समटा धूम-छडाका
जेना मुरवा मुँह वसने चुप छैक आ जे घडी मे बाजव शुरू कयलकैए ।

यात्रामे सभ नरक, बर्गक लोक । मीन-जुलस जकाँ रहैक । भरिसक समसँ
पाछो जे डू नीन टा फिएड-एम्बेसडर सभ चखरल अवैत रहैक देखी सब डाक्टर सभक
नहि, एही भाव्य कयवाथाक अंग रहैक ।

ओहि जवके सङ्कमे विस्थित, एकाएक घडीघण्टा घटवगल लनरैक आ बेंड
बाजा मेहो आसमान पर आवाज लखऽ लगलैक ।

कन्हापर समझाक शीरा जकाँ छटकीने एकटा मुँगीजी-प्रकारक लोक अपने
हाथ बऽ कऽ ओहि सोरी तँ एक मुट्ठी तुर, लावा आ पाद निकालि कऽ सङ्कपर छीटि
देजकै आ जेना छोटल महमकर पड़वा सभ लुछकैए, तहिना नंग-धरंग करीब गुरवाक
बच्चा सभ सङ्क पर खसीज-नईत ओहि पर जगटल आ पाद खुललक । अपना तुरक
कोनो छोट्टा सङ्ग जगडा कयलक, फेर कयवाथा सँग आगो बडि गेल एहि वमेवमे जे
अगिला बेर मुँगीजी पाइ मुट्ठीसँ तँ ओकरे हाथ लगलैक पाइ ।

जयघोषा बडि रहल अकि, घडीघण्ट बाजि रहल अकि । बेंड बाजा आसमनसँ कऽ
रहल अकि, आ अनाथ छोट्टा-छोट्टाक दोहरी मेहो बडि रहल अकि अवीक तने । सभक
एक-एक मुदा आशासँ जयनग-निहारन ।

आकि फेर मुँगीजी सोरीमे हाथ देलकीक या सभ जेना सौल रोकि कऽ बँवार
भऽ गेल । सभक डेनो सङ्ग जाइक आ मालिकक हाथमे रोटीकेँ देलैत कुबूर जकाँ
सभक ओखि मुँगीजीक हाथ पर लागल रहैक ।

मुँगीजी फेर मुट्ठी लुटोलक आ सभ छोट्टा सभ एक्के शान अवटल । ओकरा
ओ सफलैत, ओकरा थो । केकरो पता नहि छलैक जे आखिर पाइ करवा हाथ लगलैक ।
अन्तमे पाइ नाम साब रहैक । एक्केर मे संभवतः मुँगीजी दू चारि या नवका
दुपडआही लुटलैक आ भरि मुट्ठी तुर आ लावा...

एहि बेर एक या छोट्टा पाइ लुटलक । साइल आ ओमिश मे तनक जान
देकलैक जे खूब जोरसँ खाति पड़ल आ ओकर कपार सङ्कपर बजोरि नलैक । कारण
अचने ओ लुटओल पाइ लुटऽ कि ओही सङ्गे ओकरा देह पर दु-चारिटा छोट्टा मेहो
कुदि नैलैक । घन, ओकर कनारसँ जोखिन बडऽ लगलैक । मुदा ओकरा मुनल मुट्ठीमे
एका टा दुपडआही आवि गेल रहैक । ओ मुट्ठीमे दुपडआही पायिकाऽ बसल रहल ।
कपारसँ टपरेत खुनक ओकरा कोनो फिकिर नहि जेना ।

ओकर सती सभक आँखिमे तपानि डेप्पा रहैक जे बूझाही ओकरे हाथ थापि
गेलैक । ओ छोट्टा देहम परक घुरा लाइलक आ कपारक जोखिन पोछलक । फेर
बुपआहीकेँ पेटक जेरोमे सनिहवाकऽ ओखि घडीमे मुँगीजीक सङ्ग फेर अनमन रोटीक
प्रथायामे कुबूर जकाँ बडऽ लागल । उठल—मुँगी आ नवरि मुँगीक छोटा दिने अ-
डैग ताक पर ।

आँखिमे ई धूम आ कानसँ बाजाक, घडीघण्टक एवं हलना-मुल्ला दूर होइत
चल गेल । खाली चिमामे ओहि कपार कुदलात छोट्टाक चित्र जमल रहल जेकरा
देहमे घुरा लागल छलैक, कने छिलाफल सङ्क आ कपार फूटि गेल हाथमे लुटलाहा
दुपडआही रहैक ।

एहि बीच तेकर जयघोषा देखावल । मनमे एक सङ्क लेल चिन्ता भेल, सोच
पाहुऽ लगलहुँ, कोनो महामारी तँ नहि फैलल छैक गहरमे । ओल, किछु दिन पूर्व तँ
रहैक चखरल, मुदा आइ कोहि तँ नहि ? लखन एके दिन एतनी कालमे एतेक एतेक
जयघोषा किएक ? आखिर ओखहुँ की भऽ ललैत छैक एकरे ?

अन्ततलक ओही द्वार बडै एकटा छोटि पर मुर्दा नाखल चारि कन्हा पर बाहर
निकलैत । पुरा डीपलो नहि । पुरान बडोरने ओ मुर्दा कहुना नाथसँ मुट्ठी धरि
झाल । बुनू पपक उचारे ओकर ।

बडि चारि बड्हा पर ओ रहल, ते सभटा करीब करीब गंगा हाथसँ आ
फाटल सङ्गी तपर गेल चिककड तगछा बला लोकसभ । सभ लोकमे देहिआपल जकाँ ।
पाछो-पाछो एकटा-आखीक खी, नमदा पहिना आ तूथा छिट्ठावन केपकेँ अपनै, खनिजे
नवरे, कनैत-बिलाप करैत अवैत । एकटा पुरुष ओकरा सांगवना दैत । ओ बिकरैत
मुर्दाक पाछो-पाछो चल अवैत । जेना बाज रात्रिक जागनि ही । ओकरा कनको ते होइत
रहैक । ओ कयासाध्य मुर्दाक सङ्ग चलवाक केदामे जागनि रहल मुदा नाथ-लोक

किछु बेसिय तेज चलि रहल छल । एहि थायामे खुल छो मोटे । चारिटा कन्हा देनिहार आ एक टा कनिहारि, एकटा सभ्यता देनिहार बस ।

पुरना जोरवाला छापर वृत्त पर उधार मुर्दा । बरारी बिच तेजीसँ बिदा भऽ जईक ।

को करीक द्विदशमे एक क्षण छल रहिकसँ केर हन डाकघर दिस गेलहुँ । रिपोर्ट लेल एकवचन रहल । शाबल वृ टा परिचित बिच सेटि गेलाह ।

खूनक जाँचक रिपोर्ट एक अछे बेत । तखन बजैत छलैक बारह । एक बंदाक सभरवा । लास डाकघरसँ कावे कऽ आवी । एक टा डिफाक पोस्टमार्टम कोनिक अखन आवऽ अगतहुँ तँ पीने एक बजैत छलैक ।

अस्पतालक सीमा एहि बेर से अवस्था भेटल से हुइयेटा कन्हापर । स्थिति ई छलैक जे कोनो ता हुइयेटा लोक मुर्दा लेने आ ओकर चक्को सँहा जेना-जेना बनाओल गेल रहैक । मुर्दाक चहार कब ठाम फाटल-चोथल हरियर चदरिक कफन, कब ठाम दू उधार आ सभसँ बेसी ई जे मृतकक मुँह उधार । नाम सभक कपड़ा रहैक । एहि सभयानामे मात्र दू टा लोक । हठाथ, हकर्मत आ बिचलतासँ असोचकित जकाँ शय लेने आ दुनू निराधार एम्बर-आम्बर देखि रहल रहल । भरिसक एहि अति अभावक अवस्थामे कोनो घर-नखन्धी नहि रहैक । यहाँ ते कनिहार, ते कबो प्रवीण बला । दू टा पीड़ित अखल-दुखर कन्हा आ बेइंग अखल चक्को पर भाव उधारले गेल ।

हमरा देखनाक साहस नहि भेल जेसी । मन कोनादन बिरासतँ भरऽ लागल । तँ फुतिपेसँ बइलहुँ जे रिपोर्ट ली । देखिकऽ किछु कहम डाक्टर तँ ते वृत्त पढ़ी डेरा दिस ।

गेलहुँ तँ पता लागल जे जाँच कनिहारि डाक्टरनी साहब कतहुँ बेल छलित । रिपोर्ट वृ अछे धरि भेटल । जानारी घुट पड़ल आ पुनः डाक घर दिस बिदा भेलहुँ ।

अस्पतालक हाता सँ अहरेत सड़क धरक डाकघर दिस जे बेग बड़लहुँ तँ यम डेग पर बनगरह। गाछक तरमे एकटा कफनने लेनटावल बरख आठे-नवैक तथ्या उत्तरि-दक्षिणे फुटपाथ दिस कऽ राखल आ ओकरा अखल-बगल बहुत रास नवका पाइवाल फेकल देखावल । अपनिहार-नेनिहार ओहि शिशु मुर्दा पर पाइ फेकने रहैक ।

राखल शिशु-मुर्दाक टोक कातमे एकटा बूढ़—एकमात्र लोक बैसल । जे कनील, जे बजैत । नाम बैसल चुपचाप ।

58 ८ गणेश गुप्त

ओ बूढ़ ओहि शिशु मुर्दाक बिदा सेहो भऽ तखै छलैक, पैस भाइ, मिस्त्री, कबो ?

मुवा, ओकरा बहुत सभसँ देखनाक साहस नहि भेल । काले-काल सुबहसँ काल एकटा बात अवश्य आयल भाषमें जे ई बूढ़या कानि किएक ने रहल अछि ? एकर आर लोक सभ कतल छैक ? एहि सच्चा केँ कतया काल सड़कक कातमे पाड़ने रहलैक । पाइ लऽ कऽ ई मुर्दा की करत ?

काले-काले अगाँ बडिकऽ एक क्षण ठाढ़ रहलहुँ । एखनी सड़क पर तुरक छोट-छोट हुकड़ी सभ-सामूतिया बसतसँ अधिकाकऽ एम्बर तँ उम्हर कऽ रहल छलैक । पूल सभ पर रिकशा, उम्बर, लोक बलि गेल थैक के बिचाफल, सड़कमे सटल । कोनो मोटर भूजरे तँ ओकर बसत सँ तुरक हुकड़ी उडिआइत आए ।

बेर-बेर पढ़ी देखैत एल अन्य कदमो दिमागो विचार, तथै-चित्तकी करैत जखन पुनः दू सजबाक मन-से अस्पताल दिस गेलहुँ तँ लक्ष्मकातः अस्पतालमे एम्बर देवाक साहस आ धैर्य नहि छल । एतेक कम मनसक भीतर धैक-एतेक रंगक शय-सामा देखिकऽ मन खूब उडिगल भऽ गेल छल, मुवा रिपोर्ट आबबक छलैक तँ लायबो जरूरी छल । तँ अवेलाकृत ओखिके अखीनमे गाड़ने अस्पतालक अहातमे बैसलहुँ । लज्जी-अजीब वातावरण । नहिमो चाहैत कानमे शकरो आतनाइ, ककरो छतरी-फाड़ एकासी पड़ैत रहल । डाक्टर-नर्सक उडिवाक स्वर । दुर्गन्ध करैत घाव पीजुक भरल लाल-पीकर तुर आ गट्टीक कपड़यो आ इवार्क दुर्गन्ध तँ अखल वातावरण मे केर अवेश करैत हुइल खूब कमगोर भऽ रहल छल ।

अस्पतालमे प्रवेश कएल कि एकटा काली माटि-धूराते लेटायल कब वयसक पुरुष अस्पतालक दुमि पर रोपमे बितल सुवाल देखलियैक । एतेक प्रचंड रीज मे एना भऽकऽ कोनो अनुचक सूतल रहल स्वभावतः अचर्यजनक रहैक । ओतेक नहि सोजैत आगाँ बडली आ खूनक रिपोर्ट लेबऽ गेलहुँ ।

रिपोर्ट बहुत छानवीनक बल भेटल तँ ते खैत हल निकलहुँ आ अस्पतालक अहातेमे बगटेर बला ओहि सभ्यणी डाक्टरकेँ पुर्जा देखीलियनि तँ विरचित आ उपेक्षासँ बिदा करैत कहलनि—‘आज नही ; डेरा में नही । जहाँ का कान वहाँ । (अर्थात् आउट डोर अस्पतालक कार्य अस्पताले मे) काज सुबह आठ बजे आइयेगा... घर में कैसे चले आते हैं आपलोग ?’

एहन तात्कालिक बीमारीक अन्वेगा सँ बढावल सब मस्तिष्क लेने हम काहिँ आठ बजे धरिक लेल अपमानित अनुभव करैत बिदा भेलहुँ । जाइ यदि कीस दऽकऽ देखीते रहितियैक तऽ एना नहि ने चुरचित्त । यद्यपि कोनो डाक्टर अस्पताल मे जाठ बजे नहि बैसत । कइ बेल हमरा कहि देलक आठ बजे अइ गेल किन्तु हम जाठ बजे नहि बैसत । कइ बेल हमरा कहि देलक आठ बजे अइ गेल किन्तु हम

मुर्दा मुर्दाक भाव □ 59

जन्त छी जे ओ ओहि समय पर कयनपि ते रहत । काहू बेरक अनुभव कहेये । शरीर तम टोहि-टाहि करैत रहत डाक्टर बाबूक जोती बता नहि ।

हम हारक, भित्तिन छे ओहिने वेगक आगि बसीत पर, बाट पर गइने अस्पतालक हातासँ निकलऽ लगली तऽ कहियो चाहैत मैदानमे फुरा बला लोक दिस गजरि गेल । हमरा मने जे ओ लोक रीद में उठिकऽ आव कतहु छाहरि में बल गेल हैत । मुरा आखरये भेल जे सुकल रहल आ ओही मुद्रामे निश्चिन्त, ओहिना भित्त ।

मगल में एकटा कमरठ ठाड़ रहैक आ होस्टमार्देम होयबला अस्पतालक जोडलीक देवालक छाहरिमे पाँच-छऽ टा टनदम रिकसा बला जकाँ लोक सब ओही धुनैत चिन्तित ठाड़ रहैक । ध्यान गेल ओ रावणमण करैत रहैक—मालूम नै, कयनी अर्थत डाक्टर बाबू आब कखनी एकरऽ पोसमावन करत । भेलऽ । आरकऽ पूरा चित एहने चल्त गेलऽ । को बोझ के भिनवही आरक की चरऽ में जाइकऽ वेवें साइ लय ?" अजनिहार भित्तिन आ दुखी छल ।

तखने वेवधियैक जे एक-दु टा डाक्टरनुमा लोक आ एकटा पुनिक संगे पुनित-इन्स्पेक्टरनुमा लोक दनदनायल निकललैक तँ ओकरा पाछी ओ पाँचो छओ ठाड़ लोक देखी अवलैक ।

ओ सभ लोक मैदान दिस आयल । आ ओहि चिंतन पड़ल सुतल लोककेँ मेरिऽ ठाड़ कऽ गेलैक ।

हमरा बेगी देखवाक धैर्य नहि छल । अन्दी-तँ-अन्दी अस्पतालक हातासँ निकलऽ लगलहुँ में जेना धरैत नहि बडय । तथानि अस्पतालक हातासँ बाहर गेलहुँ आ सड़क पर अयली तावत गजरि गेल किछु आगि बामा चित ओहि कमरठ पर बड़क गाढक नीचा जवऽ हाक-हाल धरि एकटा अपंग दाही-भीछ आ चरल बला ओमकी बैसैत छल । ओकर मुमा लोकक आगक लेख बला काई लोगमें उठा-उठाकऽ ओकरा ल्यीक हाथमें घऽ दैत छलैक । ओ लोकक भावक पड़ित छल । तखन ओ अपंग कनाहु बोतखी तरमे पजेश देऽ कऽ ओहंगा कऽ राखल मीनार बसामे में कोनो-ने-कोनी सडोम मुझवें छलैक निराल लोक के । बक्तामे निकालिकऽ दैत छलैक आ लोकमें दान-दक्षिणा नैत छलैक । लोक ओहीठाम उल्लेख खिचिटी कपड़ा सँ लगेबल ओहि-बक्का मुर्दाक बगल में बुध-बाब जानत बैसल लोक—इन्स्पेक्टर अगल-बगल अधनिहार-गेनिहार लोकक फेकलाहा पैसा सबकेँ समेटि कऽ गति रहल छल ।

बाप-बेटा

विश्वनाथ एक टा गान । गानमें कोनो स्कूल नहि । जे डाक्टर, ते पक्की सड़क । बाहर मधुबनी सेहो दुरलभ । गान बाबा के सब मीसिम में बड़ कष्ट । बाबू बर्मी वा भदवादि के तँ आखोर, समस्ता में जाइक । कमलाक बाड़ि तनेक अवैक जे भरि गोथी केँ पड़ाइत बाड़ नहि सुनैक । सेतमे लागल कश्मिर सब बड़ा जाइक । दरबजे-दरबजे बाड़िक फनि हुत्की दैत रहैक । आइनि में 'ज' क' कोनहुँ टा सीधा हुलुफ बाहर में अलग परामेव । लोक केँ अन्न अद्वैत उपास पड़वाक परिस्थित आवि जाइक ।

भरि गामक विद्यार्थी के भरि-भरि बाँड पानि हेलेत कोस-भरि चलिकऽ मधुबनी स्कूलमें पड़ऽ जाय पड़ैक । विद्यार्थी सभ एक ओर जे स्कूल बाबू से जखन खोज गेल, घलऽ कऽ जाइक तखन पुरि कऽ गाम बाबूक । घर आवि कऽ जे भेटैक ते कोनहुना दू कदर बाबू आ हाथी पर हाथी छोड़ैत पाइ पाँचिसे षोडशे बालदेव विद्यनाथ कतहि जे भिलासँ ओषड़ जाय । पोथी फतरा ओहिना एसखे रहि जाइक । डाकविमें एतयो धैर्य नहि रहैक जे पोथी सड़ केँ सखिया क' राखि ली-तखन चुकी । एह बिस्तर गामक सैकड़ बचानथे परिवारक रहैक । असौरपर आ आंगनमे पहिवा बऽ कमल-ओछाओल लाहिपर अलौकिक विद्यार्थी हाथी छोड़ैत वा सुतल ।

रमानाथ सेहो गामक बानि विद्यार्थी सब जकाँ मधुबनी आ कऽ बाटसन स्कूलमें पढ़य । ओकरासँ छोट दू भाय बहिन एक टा बहिन एक टा भाय । ते हुनु एखन स्कूल में नहि पड़ैक । पक्षि बहिन जमाने दाइ कम्पेदेर अपन भाब सब विद्व दानव के हुनहुँ पड़व गऽ । मुदा ओतेक दूर आ क' सेहो क' जातिक तड़ब संभव नहि रहैक । गाम में कोनो स्कूल छनैक कहाँ ?

एक दिन रमानाथ गोथी बाँधैत, हाकी तर हाकी छोड़ैत पठिकपर ओलहि गैल छल आखोर विविधाक कर्नेल टेमोक अखिर प्रकाशमें बकिथी जाइत रह्य । सब भावक ओपिआओनमें रहैक । बीच-बीचमे चुहिये तरस जोर में कहै-जे सुनि नहि रहिहै बीजा । भागल लमचिया गेली । जे पड़ी ते छहरखैए । मुदा रमानाथ के ओहि दिन बड़ चकनी बुझाइक ओ भावक बात सुनितहुँ सुनऽ जकाँ लागल । तबतहिमे ओकर बानू अंगन अद्वैत पुछलथिन—'बाइ बूनि पड़ैत अछि जे रमानाथ बेसी बगल अछि । सोने रति अंधाव लागल । बेसी पड़ाइ भेलैक अछि बाइ की ?'

—'बाबू, जानकी कियेक नहि पड़तै ?' जबाब मे रमानाथ एएह पुछलक पिता से ।

—'कोना पड़यो ! गाममे से कोनो स्कूल छैक नहि ।' ओ कहलथिन ।

—'तँ ओ हजारा सँग मधुबनी नहि जा सकैत अछि ?'

—'कतहु होइ से । लोक की कहत बेटी जाति के मधुबनी पढ़ावइ तऽ ?' ओ लाचारी देखीलथिन ।

—'पड़यो कोनो अध्यापक आत छैक बाबू ?' ओ कहलथिन ।

—'से तँ नहि छैक हँ । परञ्च बेटीक विषयमे ओएह खुसदाक चाही एहि समाज मे ।'

मुदा रमानाथकेँ अपन पिताक बातसँ संतोष नहि भेलैक । ओ मुम-मुम रहल ।

ताबत पिता देलचीपरसँ लोनामे पानि डारि, असौरसँ ओधती दिह पयर कऽ सोशऽ लगवाह । तखन रमानाथक पटिपार आबि एक कातमे बेसैत, अँतनीछा सँ हाथ पयर पोछऽ लगवाह ।

—'बाबू ओ, आइ हजारा विज्ञान, मास्टर साहेब बेचपर ठाढ़ कऽ देलनि ।' रमानाथ किछु दुखी स्वरें बोलल ।

—'किएक, बेंच पर कियेक ठाढ़ कमलखुत ?' ओ पुछलथिन ।

—'किताब जे नहि कीनल गेलए एखन धरि ।' ओ कनी रोइमे बाजल । फेर पुछलकनि—'किताब कियेक नहि कीनल गेल ?'

—'हाथपर रखिपा नहि आपल ते' । आबऽ ईह हाथ मे तँ किन वेवह ओ शरोस देलथिन ।

—'जहाँक हाथमे कर्पया किएक नहि अछि बाबू ?' पुछलकनि ।

—'थार ई सब की पुछैत छह तँ ?' ओ कहलथिन ।

—'बाबू ओ, अहाँ मधुबनीमे घर नै कीनि सकैत छी ?' ओ पुछलकनि ।

—'से किएक ?'

—'मधुबनी कतेक दूर छैक । हमरो एकटा घर नहि बनाइ सकैत छी अहाँ ? मधुबनी राखि कऽ नहि पढ़ा सकैत छी अहाँ हमरा ?'

—'कत' से बोझ ! मधुबनी डेरा 'सखस' कहाँसँ संभव होवत हजारा घूते ?'

—'मे किएक ! आ 'रमेशक बाबू घूते कीना होइत छनि ?' ओ पुछलकनि ।

—'ओ संघ धनीक छथि ।' कहलथिन ।

—'आ हमरा लोकनि !' रमानाथ पुछलकनि ।

—'गरीब ।' पिता जबाब देलथिन ।

—'अपना सब गरीब किएक छी बाबू ?' ओ प्रश्न कयलकनि ।

—'बेटी वाली नहि अछि, उपजा वाली नहि अछि मे, मे बाहरे कोनो कमीश अछि तँ । कतना कऽ गृजर चढ़ैए । कतना कऽ पड़ा रहल छियं ।'

—'रमेशक बाबू के बेटी पवारी छनि ?' ओ पुछलकनि ।

—'अबस्के थिने । ओ तँ जमीन्दार छथि, दू सप्ते बीघा सेतक जौतदार, गामक सबसँ धनिक लोक । हुनका धनक कौन कमी ?' कहलथिन पिता ।

—'हुनका एतेक सेत आ धन कतऽ से आबि गेलनि ?' ओ जिज्ञास कयलकनि ।

—'बहुतरास उपजा वाली होइत छनि । जीमोक साठ बिकाइ छनि । बड़का बड़का बँसबाड़ छनि, खरहोड़ छनि, मे सब बिकाइत छनि । बड़का बड़का पोखरि छनि तकर सखान सौठ हजार हजार डाकमे बिकाइत छनि... ।'

—'मुदा ई सब अहाँ के किएक नहि अछि, बाबू ?' ओ बीचहि मे रोक्लकनि ।

—'सब के नहि, मे रहैत छैक एतेक रास बस्तु ।' कहलथिन ।

—'सब के किएक नहि रहैत छैक तब किछु ?'

—'एहि दुआरे मे मात्र किछुए गोटेक अपन धनक बसे, अपना जमा पूरैक तगति सेँ अन्कर बस्तु जात के बखल कऽ लैत छैक । तँ बहुत लोकक हिराक बस्तु मात्र किछुए गोटेक कन्नामे बनि अबैत छैक । आतक धन बित पर बाँका कऽ केनिहार स्थिति धनिक बनि जाइत अछि बाओर जाकर धन बित आतक कन्नामे बनि जाइत छैक से लोक भऽ जाइत अछि गरीब ।' पिता खूब ज्ञान भऽ कऽ ओकरा खुसओलथिन ।

—'धनिक केँ सब लोक बड़ मानैत छैक के ?' ओ पुछलकनि ।

—'ई, से किएक ?' ओ पुछलथिन ।

—'रमेशो तँ हमरे सगरे पड़ैत अछि । ओ अपन कएटा पोथी हेराय लेलक अछि । मास्टर साहेब ओकरा बेंच पर ठाढ़ नहि करैत छथिन । कहियो नहि । ओ तँ दूए डेनपर डेरा रखने अछि । रहल कऽ सवासे बनि अबैत स्कूल । हमरा तँ पयर बड़ दुखहत रहैए । आ तँपो बेंच पर ठाढ़ होअऽ पड़ल ।' ओ दुखी भऽ कऽ बाजल । पिताक आकृति प्रोधा लाचारीसँ उदास भऽ गेलनि ।

—'ओकरा किछु कहलनि से उर भर नहि छनि ? धनिकहा सेँ सब डेराइत अछि ।' पिता किछु पृथाक स्वरमे कहलथिन ।

—'कभी मेल देराइत छैक लोक-धनिकहू सँ ?' ओ पुछलकनि ।

—'बूझा देखहु काहिहू । आइ मन बड़ थाकल बूझाइत अछि । कनी एक रती पड़इ दैहू ।' कहने भिला ओही ठाम काठमे पड़ि रहलथिन ।

—'अपना सब कहिना धनिक होखव ?' ओ जिज्ञासमे पुछलकनि ।

—'मे किएक ?'

—'स्कूलमे हमरा बड़ जोर सँ भूख पाणि जाइत अछि ।'

—'आ काज जाइ छऽ तइयो ?' ओ पुछलथिन ।

—'मे तँ मधुबनी गुमतीए तक पसि जाइत अछि ।' हमरा पाइ कहाँ रहैत अछि । अहाँ कहाँ रहैत छी पाइ ? काए टा विद्यार्थी त अपना संगेमे जलबै अनैए । भूख खाइत रहैए । तहि त बेबीमे पाइ रखने रहैए । कीनि कीनि काँ चिन्तिया तइय कि बिनकुट छेड़इत रहैत अछि । हमरो बड़ मोन होइत रहैत अछि, बाबू ओ ।' वेडाक ई बात गुन कऽ बड़ कचोट भेलनि हुनका । मुदा ओ किछु बजनाहू नहि ।

—'बाबू ओ, अपना सब दिन एहिना गरीब रहव ?' वेडा अन्तर्गतहि पुछलकनि । हुनकर ध्यान हुननि ।

—'नैन । सब दिन कतहु एहिना गरीब रहौ ?' ओ बूझओलथिन ।

—'कहिना धरि रहवै ?' ओ पुछलकनि ।

—'हमरो लोकनि सब दिन गरीब नहि रहव । हमरो सबहुन दिन फिरत ।' ओ बूझओलथिन ।

—'अपना कबहुन दिन कहिना फिरत ?' ओ पुछलकनि ।

—'फिरवे करतैक दिन । कबहुन नै ।' ओ अनो सोझाइत कहलथिन ।

—'कोना दुई धियै त अहाँ ?' ओ पुछलकनि ।

—'हमरा बाप कहने छलाह ।' ओ पान्ते सवरे कहलथिन ।

—'ओ कहने रहथि ?' ओ केर पुछलकनि ।

—'कहने रहथि ते दुबक बिन पीति जाइत छैक तँ सुखक दिन कहैत छैक ।' ओ कहलथिन ।

—'कहिना ?' समाचार पुछलथिन ।

—'जल्दीए ।' कहलथिन ।

—'तबो कहियो ?' समाचारकेँ पिताक उत्तरसँ संतोष नहि भेलैक ।

—'कहिना तँ भूख बीबा केका पढ़ि-लिखि कऽ पैग भऽ जयवह ।' तब भूखगुक शानी कऽ जयवह बखन ।' ओ बूझओलथिन । संगहि सन मस भरिक लोक राखने मेल भऽ जयवैक सचने ।

—'धरि बीअमे मेल । कोना कऽ भऽ सकतैक बाबू ओ, एतैक जगड़ा-झोटी होइत रहैत छैक से ?' ओ चिन्तित होइत पुछलकनि ।

—'तखन जगड़े ते रहतैक अपनाने ।' जखन सब लोक पढ़ि-लिखि जयवैक, सब गीठय बात के बूझऽ जयवैक, सब के ई अधिकत आबि जयवैक जे जगड़ा केला सँ ओ लाभ, बलिक एकमे रहला सँ लाभ छैक, तखन सबटा संझटि-खतम भऽ जयवैक ते । जगड़ा-कहाव ते सरनुए लऽ कऽ होइत छैक ते हजो ? ते तखन सबके जाहि वस्तुक बेगता छैक से भेटऽ जयवैक, कभरो सँ वस्तु जयवैस्ती छीनाहू नहि जयवैक, हजाल तहि जयवैक ते अपनामे जगड़ा वेत किनेक होतैक ?'

—'मे कोना हूवैक बाबू ?' ओ पुछलथिन ।

—'जेना धरि होलमे इबार ते एकहि टा छैक । सब ओहीमे सँ पाणि भरैए शयता धरि । कहाँ ककरो सँ जगड़ा होइत छैक ? एकहि इबार सँ अपना जकरत धरि सब पाणि धरि लैत अछि । दोतराकेँ अपनाहू कहाँ जयवैत छैक ?' ओ बूझओलथिन ।

—'तखन लोक किएक ते बूझैत छैक बाबू ?'

—'जगड़ा सँ एहि दुवारे ते होइत छैक जे नाममे दु-चारि गोटे केँ बजारी-बजारी धान राखल रहैत छैक, ओहिमे चुड़ा जयवैत रहैत छैक आ दोतर दिस नामक बेबी लोककेँ धिया पुता जमासँ पर्यन्त पड़ैत रहैत छैक । एहो मोनी धान नहि दैत छैक । तखन जयवैत पड़ैत लोककेँ तकलीफ होइत छैक आ तामस उठैत छैक । तामस उठैत छैक आ तखन मोन मे लड़ाइक भावना होइत छैक । ई सब विषय पड़ला गुनला पर बूझै मे अथैत छैक ।'

—'पढ़ि-लिखि लेजाल जगड़ा सब पान्त भऽ जाइत छैक ?'

—'जयवै किने । जिझाई भेटैत छैक तँ मनुष्यक आबि खुजि पड़ैत छैक मनमे विवेक अवत छैक तखन ओ सबटा बात आ परिस्थितिकेँ नीक जकाँ बूझऽ जयवैत छैक । आ जखन मनुष्य अपना बीषक बात आ तामसकेँ डीकसँ बूझि मेल ते संझटि किएक जाइत छैक ?' ओ बजलथिन ।

—'छैक से लोक के कोना बूझऽ जयवैत छैक ?' ओ पुछलकनि ।

—'जेना कसो दुखित पड़ल । डाक्टर बजाओल गेलाह । आला लगाकऽ जीब कयलथिन । रोगक लक्षण पता लगा कऽ ओहि रोगकेँ छोड़बलाक औषध लेलथिन । रोगी औषध खयसक आ रोग छुटि जाइत छैक कि नहि ? आबनी निरोल भऽ जाइत छैक कि नहि ?

—'मुझ अपना नौआ तब बुझित कहा छथि ; सब नीके ना छथि ?'

—'छथि रोनी । रोग की छैक ते बुझलहुक ? गरीबी, अज्ञानता आ अपना लायेने आन्तर भा कऽ अहिमे मतभेद आ लपटा ।'

—'ते एकर कोन ब्याह ?' ओ पुछलकनि ।

—'जाती बनव । विद्या पढ़व । समाजक दरिद्रताके' लोक-जीवनक बिभेद के' स्थापन करव ।' अपनेहि मुख आ मुनीताने लइकाके नहि रहि कऽ अपना दोलनेवा-नौआके' मुख मुनीताने नेहो ध्यात राखि कऽ जीवन पावन करवाक स्वभाव बनौलाय । बुझलहुक बातके' ? पूछैत भिना आपन बजलबिन ते 'विद्या सब किछु बुझ-मुझा बेत छैक मनुष्य के' । कोनो समस्याक जड़ि कतऽ छैक आ को छैक ते बुझा दै छैक । नीक जकां पढ़वऽ लिखवऽ त अपने बुझि जपवहुक । तहिं मत लगाकऽ पढ़ैत रहऽ ।'

तावत भानस क' गेल रहनि । स्त्री ओलहिं सौर कुपलबिन ते वाप बेटा हुनू नोटव छति कऽ छाव भेल बेलाह । लख इहतिहि जेना नाकने कोनो पंथ पैसि गिरैक । रमानाक बुझलहुक । आपन कस्ट्रोचक बाउरक पंथ सोडैत भात रहैक । भात पर नेकड़ोक दानि । कोनहुना भात दानि कऽ दुनीन कऽर सीईत, घट-घट दानि पीईत आ बिसल रहल । नाकने गरम भातक भभकीत भात लगीत रहैक । छुच्छ भात आ सेबाहीक नमिरोह दानि । ओ बेसन होइत उठल आ हाथ धोअ लागल । माय कतबो कहलबिन लाइ, ओ नहि बैसल । ओकर मोन केर देने रहैक ।

ओ अन्तःपनका कऽ सुतऽ लामल । कतेक काल छरि बिडटा कपलक । निन्न नहि होइक ।

कएमास पतिभुक्त एक आ बात मोक प्रबल छलैक रमानाकने । एक दिन ओ रमेजक आँगन गेल रहैक ते रमेज खड़ा रहैक । आपन मकबौआ बाउरक भात आ छिकलावा दानि आ नीमन तरकारीक हुगन्धि जेना ओकरा सीसे बेहेमे पैसि गेल रहैक । भरि आँगनमे सुगन्धि फसरल रहैक । एह क्षण से ओकरा हाक आ मोनमे पैसि गेल रहैक । ओकरा आश्चर्य भेल रहैक जे एहन सुन्दर बेलाह के पर्यन्त रोग छोटि कऽ छति गेल रहैक जे 'ते नीक लवैत ।' उठैत छल । दुपक भरखो बाटी ओकरा पुर नौ लागि कऽ उठति गेल रहैक । मुझा एकी रती अफसोस नहि ।

रमानाक मोनमे सेहू दानिक समकक स्मृति पैसि गेल रहैक आ भूख से ओकर ओत ऐठल जा रहल छलैक । निन्ने नहि भऽ रहल छलैक । कएटा आन-आन बात मोनमे मुड़ऽ लगलैक अपना ओखि आ हृदयमे लखन ओकरा अपना आ रमेजक फकी आर देखार बुझाव लगलैक । रमेजक कदबा-लत्ता, जूता-पैतावा केहन सीध आ मुन्दर रहैक छैक ? लखन कि ओकरा अपना एकहिं टा पैद-हाक सट पर

कार्य करैत छैक । पहरमे भूला परैत नहि छैक । ओकर छोट बहीन आ माय बिलभेर मुगल रहैक । ओकरा 'बोकातिके' कहाँ छैक नीक कपड़ा-लत्ता । ओकरा मोत पड़लैक जे बाबूके' बेहो ले कटने बिचल बम्ब आ मायक बेहू पर ते ओ कहियो आइ छरि बड़ नुआ देखनहि नहि छैक ।

ई बात ओकरा अइ खराब लगलैक । एहमे नहि, लखन कि रमानाक अपना चरने करवाक रघुनाथ लामक धिक्क मुता दऽ सोचलक ते हुनको नीकीक बोएह हवा । लखन परजुराम, भाइ परिवार दऽ सोचलक, जपालन्द पंडितजीक परिवार दऽ सोचलक, सतवा आ नेपला दऽ सोचलक सबहुक बच्चा चिड़ी पहिरने । धरौ बकरी चर्यात गुजर करैत, कोनो बाबूक महिमबारी करैत जीबैत अछि, हुनकर बेहैत छैक खाक । एकहु टा छोडा-स्कूलक मुँहो नहि देखने होयत । गाम खवासिजीक काज करैत छैक । शान हुरवाही धानिहारी करैत छैक, जाइ गरीब खुनखे देह करैत छैक ।

एकर उनटा, गाम भरिमे माघ किछु धर छैक जे केहन मुखमे रहैत अछि जे उच्छा होइत छैक जे जाइत गोबैत मनई जीबैत । आर लखलावा गीते गीत त बहुत कऽ बिलिपौर करैत ।

—'एत किछु छैक ? एकहि नामक लोक सबमे बेसी छरीमे लोड किएक ? आ हु-चारि टा लोक धनीन कोना भऽ जाइत छैक एहि प्रश्न पर सोचि-सोचिक ओकर बात मसिक्का पीर-पोर होअ लगलैक ।

रमेजक बाबू भरि दिन गत जइँ दकईत, कटानमे शतरंज पक्षामे हुनो डटा करैत रहैत छथिन । आई छरि कहाँ कोनो काज करैत देखियअनि । तैवो केहन मंजाने-सब बस्तु जेटैत रहैत छनि ? हुनकर आख ओकेक ओरे से खटैत-खटैत आक देने रहैत छथि । तैवो हुनका बड़ बहुत त सुखी रोटी । सिक-साँत रोटी खाइत-खाइत जानवर आकत । भात जे भेटबो कयल ते ओहु कटौतड़ा बाउरक भभकीत भात ।

ओ रमानाकने ओएहु मोन नहि गेलैक रमेज अलङ्कारक एकवोआ भाध दानि, तीवन तरकारी, हेरावल दुध । एक बिस मतमे पतरल भोजनक ई सुगन्धि आ दोसर बिस भूखे ऐठल जा रहल आइ ।

ओ करोड़ पर करोड़ बदलैत रहल । राति जेना खोत बाइले हुइक । ओ घामे नहा गेल आ देह चरहक मुँदराही रंजी के खोलि त फेर सुनबल लेटा कऽ जायक । मुझा ओकरा बुझावत रहलैक जेना लखबिबायल छैक, जे घडी ते जोड धरैत । कथन बेतक ओर ?

□

रखवारी

गहन हवा बह रही है, ओह नामने तेहन किछु होएव अवश्यवाची छलैक आ पुरान अनुभवो लोक, जेहो किछु आब बचल छथि, नाकमे नोसि मुकुंन आ तरहरी-पर जमाबुन थपकैत बेर-बेर ई कर्न करैत छथि—जे भक्षक दया बिन-दिन खराब भेल आ रहल छलै। जानि ते भगवानक की वक्त छनि ? कहो होइ छलै एहन दंगा-फसाव ? मामूली मतभेद किछु भेलो कएलै तँ पंचैतीसँ आहर धरि नहि जाए पड़ैत छलैक । कोनो दलानमे किवा बेसीसँ बेसी दुर्गास्थानमे तब तसकीवा भ' जाए छलै । दुनू पक्ष शान्त । अपन-अपन काकमे लागल । भाबिला-मोकदमा तँ केओ पृथाक डारे खोचिती नहि छलै ।

आब तँ एंव लोकनिक ओ हावत रहल नहि । उचिते ने । अखन पंचैतीस मुँह देखिना मुंगवा परसल केत तँ निसाक की होएलै ? आ जखन निसाके नहि भेलै तँ कधी पंचैती, की कोट कचहरी ? पहिने पंच लोकनि एना गहि करथि । उचिते । लोको पंचैतीक शरण जाइ छल । आबुक पंचैतीक होखति सएह । गरीब लोक जेवो बतए करथो ?

एक तरहँ प्रलान करैत शिवनन्दन चौधरी अपन तान्हटा दलानक जाया छुट्टोक स्थानपर खाये खोरीक बेलत सन बनाक', खडाम जहिरने रहति रहल छबाइ ओ बसितो आ रहल छलैह ।

जेहन गामक बलावरण आइसो हाइ छैक, कचिया हातुपर आन बड़बाब' जाइत-आइत धनुषा पुष्टि देवकै—“फोन बात भेलैए काका ? फेर किछु भेलै कि गाममे ?”

—ये तँ की ! हम बचाइ भ' नेछीह' रे ? आब से की पूछै छै, जे किछु भेलैए । रातिए पछवाड़ि टोलमे नै बसि गेल रहे ? तूँ चँसराबिए मूति रहल छलै की ? ओ पुछलनि ।

—सत्तो । काहिह खेलेसँ माथ बड़ टनकै छल, से दिन सेने-मीने पड़ि रहल छलहुँ । सेवो की करिाहुँ, हे मडुआ रोटी करियथी खिन्नक इच्छा, इच्छे कीन ? ओ भाबल आ जाए लागल ।

—से की कहै छ' । एखन तँ बुल' जे ससल गाममे सएमे पंचादमे अरक बिलगी बसा रहल छै, इएह करिकवा अन, मडुआ ।

बड़ धूना करै छलहुक तूँ सब कामका पोक बाटिपर अहुरसँ आन उपजाक'

खेएवक जतनामे । हौ ! इएह मडुआ नेना-भूटकाक जात बचौने छह । देखिहक अगिला साल फेर खगर बाध मडुआसँ पीटल रहलहु । उपाये की ? एना कोरी ताने साल इश्वरक कोप देखलहुक ? कखनो कुब' पानि । कखनो धरतीपर दूत'क ओल' धरि इबारि फाटल । एहनोमे बहू मडुआ कि अरुआ । हपनि-हपनिक' जाउ, ते तँ तेना भूटकाक सँगे मरि जाउ । शिवनन्दन बजलाह ।

—नै । आब काका तेसरो एकटा जाइ छै । ओ बाबल ।

—से की हौ ?

—रघुनाथक पुरा परिवार जकाँ गाम छोड़िक' कसाइक तेलपंचाय बलि जाउ । ओ बाबल ।

—ते ! धनुकुटोलीक मेहो कलेको परिवार ने बलि गेलै सितीमुडी, जलपाई-मुडी, आसाम ? काका खोजनि ।

—मुदा जे कहियी काका, मडुआ रोटी खाइपीक' अपन मडैय आ एहि राटिके' छोड़िके जेनाक मोन नै करै छै । जानि ते कोन लोक गाम छोड़िक' ओतेक दूर बलि जाइए । हम तँ धरि दिगक हेतु कोन धरि मधुवगियो बलि जाइ छी तँ मोन दोगल रहैए । ओ बाबल ।

—ये की करबहुक ? केओ कि सबसँ गाम छोड़िक' जाइ छै ?

—को करए ? गाममे सेतमे बोनि नै भेडि पवै, लगतार रोटी पकए लगै कखनो काहिने सब दहा जाय । आबिथ सोझाँ नेता भूषछै मरण लगै तँ मनुष्य की करए ? मरबातों भीक तँ ई' छै कबहुँ बलि जाए । जान तँ बचतै । हौ जान छै तँ जहाइ छै । शिवनन्दन काका बजलाह । जाइ तँ अट्टोके सोच' पड़तै । ओ बड़कीटा किसिम होइलनि ।

—हम तँ काका नै जेवै । चाहे किछु होव । गाम छोड़िक' जेवै ?

—कहिया धरि नै जेवै ? कीडीक मडुआ बहिए सधती ताही दिन सोच' पड़ती । सोपमे जीशक आन कोनो उपाय ? ओही पुरता रेट पर मजुरी । आब सेहो नहि । तखन ? शिवनन्दन पुछलकै ।

—कोन उपाय ? ओ चुप रहि गेल । सरकार मजदुरी बढेलैए । जे राखि सब छथि ते आव रहिते ने छथि जे हमरा लग काज सहि अछि । आब मिथ काज ? उपाये की ?

—नै छै । तखन तँ इ-चारि-दस लोकक गाम छी—ई गाम । हुनके रहत । बाध एहि उमेरमे जखन हम सोचि रहल छी जे कबहुँ निकलि चली एहि गामसँ तखन तौँ तँ एखन जुझल छह । माथपर कर्जा आ परिवार छऽ । मजुर अटैत नै चेतब' तँ नै ऐ पार रहब' ते ओइ पार रहब' । शिवनन्दन चैतीतीपर ओकर बड़ आर सुनि गेलै पेट दियकै ।

"अच्छा कोछा ! तबहु वहीबा अपने मे बिदा भ' जाय वत' विस' कविबा
 बेर पड़ै रहि जायत एहिना । ओ हृदयद्वारा जय जायत मे जियनभरन पुछवविन,
 मोहर मेधिक टमकन एखन की हान छह ? के त' कह्यो न' केनह ।"

—अरे, पेठक जबाबा सब ठीकक' ई छै, काका । एखन तबए जे ठीक अछि ।
 ओ जयन आ विवजानन मुसाफिराइन जियनको जयन गेल आयू ।

आमहुरा पछवाइं जेनाक एक मोटे जेत पित्त जेहल अबरनै । जियनतन
 काका जियनमान अदान खरखरईत रहैत खरखर आ काहि रसिक पछवाइं टाक
 जगड़ा आ टगुकाक सम्बन्धमे जोखैत रहलाह । एक दिन आर एही गान छोड़लख
 सब घर टगुका आगत छल जे तबहु ताक जोषक कारणे काम छोड़िक' जायत छल ।
 ई जोषिक' जे ओहिछाक खूब लोक मजुरी भेटत, ते' लोक ओत' लोक अहाँ जायत
 कहिरा । ताही जोषम जायत सब । मजा तूरे जे ।

—मेहो की अधलाह छै ? ते' अछि जे खूब मुकस', जालित' ओत' नै चाहत,
 जखन ओकरे सोझां किछु लोक आराम आ सुख-यात्रिस' जोखैत छथि । हुनकर मज-
 बेठा लोक एहिरो-ओईत छति त' ई लोक ओकरे सभक प्रष्टा होइत छैक जे हुनहू' सभ
 त' कहिरा रहि सकैत छै, अमन-परिवारक संग । आ एह बातमे जत'सँ कहल जाइ
 मुझैत छै लोक ओहिपर चलि पड़ैत अछि, बाहि जात छोड़िक' जहर वा परदेस । ई त'
 एकदम स्वाभाविक बात छै । लोक नै अछि ई । एकरा रोकल नहि जा सकै छै । रामल
 जेवाको नै चाहिरैक । ए पर प्रबुका पुन रोह गेल छल । कतेक कातक बाद वाजल
 छल—कहै त' छह सोलही अता-सते काका । मुदा तैयो हुनक नहि मानैत गान
 छोड़वाक बेल । ओमा तौ त' बुझिने छह जे जेहो पढ़ह कट्या जेन ठापुर बाबू बटाइ
 जेने छलाह मेहो ओ ए बेर छोड़ा लेखनि ते' ए बेर त' ओहि थोड़को सत उपजा-जारीक
 आधार समायी । की कल' आ ते' जसोत ओ अपने आवाज करियि । मेहो नहि ।
 परतो पढ़ल रहि गेलनि । मुदा हमसस छोगि जेलनि । ओ बुझी छल ।

ई सब एखन आर चलैत छनुरा । आब'त आर तेज'सँ सोषवा दुलवाक
 गहरति आबि गेल छैक । जियनभरन बाबू ई सब सोचैत आ रहत छलाह कि ओमहुरा
 नवीन आपत आ बहुत कोष आ निराम वाजल खानक—ई जामु जे ओह, वडका
 जाति दाही बाँध । ई त' खाली ओकरा सभक संग रहैत नै जाइ ओकरा सभक संग
 एक धारी-वाडी मे बिनाइ जाइक आ एकसँ एक पदपंथ करैत रहैए । ओ त' धातुक-
 बादव समसँ मिलल अछि आ बाह्य-प्रबुरक-खेलाक काज करैए । ओ त' एहन कनीन
 भ' भैल अछि जे सब ओकरा सभक चोखड़ी मे उठैत बैसैत नहि अछि, ओकरे सभक
 आरी मे भोजनो करैए, सोढाने गमियो निबैए । कहू अता एतेक तैफिक बंकि रहैछि

ने हुनकर चेष्टा कहैत अजाति भ' जेलनि । ए दुआने ते' जे मूर्ख छै, पड़लक' जियनको नै
 ओ । अछि-कुई धरिण विचार नै । ओ भावना जकां जाइते जाइ छल ।

—नै पढ़लक'—जियनको मे रोहर बात लोक छह । मिथा त' बहुत जरूरी छै
 जीवन आ लोक समाजक हेतु । हरैक मनुष्यक हेतु । मुदा पठितक धेरे जेना त' छै
 हेतु ? ओहो मजदूर अछि सामक मजदुरी क' क' जीवन बिबैए, लोक पठितक क'
 क' क' जीवैत नै । आ ओकर सब सभो मेहो मजदुरी क' क' जीवन बिबैतै । ते'
 दुआने ते' माय ओकर पुतक परिनिधि एक छै, काजमे दुतक जायियो एक छै ।
 अम-मोतिहासक जाति । ते' अताक' किएक ते' दुस' छहक तौ सभ ? मुसक बकरी छह ।
 पठितक चेष्टा जेने ओकरा जीवनमे पढ़वा लिखवाक' की अवसर भेटलै । बाबू ते'
 कहिराह, पुरहिताइमे कोनो तरहे' मुसक करै छलियन । मोम नै छह, वसाइमे बिता त'
 भति जेना एही नाममे । सब जने छै । तैयो एतेक दिनमे जातिक विचार नै एहि सुपने ।
 तो सभ एहक संग करै छह—एतेक प्रभिस'मुसी । ई देखिक' अजबे लगैए । ओ
 जयन कथकक'हइ दबैत बजलाह—बंकि जात होइए ।

—बाहू छै जहे मुझ, जखन त' आहूषक छै । ओ फेर छह एक स्थान
 केवक ।

बहो मुकस' छह मोहर । हम कलकत्तामे 25 साल जीवन बितावे छी । कतेको
 समामे लोक तरहक लोकक बीच घुमल-फिरल छी । ओत' आब एहन अहाँ नै होइ
 छै । ओत' आज लोक सभमे असली चेतना आबि गेल छै, ते' कमसे कम जातिके ल'
 क' ओहिछाक कोनो मतांतर कि अमड़ा-मताइ अरिसके देखबहुक । ई, अमता वर्ग के
 ल' क' छै ।

—सनि ?

—एहू कि जेना—कल-कारखाना मे मजदूर काज करैत अछि, ओकरा
 सभक हितमे जे बात छै, तकरा जेल सब मजदूर, संगठन दलक' आ एक क' क' जइत
 अछि आ जीवैत अछि । अपन अधिकार त' क' छोड़ैत अछि । किछक त' एहिमे सम्पूर्ण
 मजदूर वर्गक आओर समाजक जति काज करैत रहैत अछि । ओकरा सभक मित्र-
 माजिक आ सरकारके सुकए गइत छैक । जखन कि ओहि संगठनक मजदूरमे कोनो
 एकहि जातिक लोक रहैत छथि ? मुदा ओत' ओहि संगठनमे हुनक अपन अदर कोनो
 जाति नै होइछ हूँ सभक उदेख एक संगठन जेने सभक स्वाधीन जति होइत अछि ।
 आ ई बात मुसक चाहो । किएक तै साममे रहैत हमरा आज कतेक शर्प भ' गेल, हमरा
 काव ई बात साफ-साफ लगैत अछि जे गरीब सभ अम-बगिहार सभक जियनमे ते' नै आगो
 बढल कि एक त' आहूँ राखलैति ओकरा सभके' बढका क' छोड़ि देने छै । कखनो
 जातिक नामपर लड़वा देल जाइ छै । त' कखनो छमे कि कखनो भापा-ओषीक सामपर ।

जखन कि ई सभ समस्या बनीटी अछि । समाजक किछु स्वार्थी लोकक मनगइल समस्या । लोक सभकेँ सुखक चाहिऐ ।

—बनीटी मानै ?

हो ! भाषा आ धर्म आदिकेँ मनुख जीवन रहि सकै छै ? जीवाक लेल जाद्वैक धार्मिक-मानि । तकर पले नै ।

नवीनक चेहरासँ लगे लगे जेना ई लखी ओकरा मनकेँ स्वीकार नै भ रहल छलै । ओ कनेक सफल रहल केर देग साँझत पूव दिना मे चलि गेल । भरिलक गुलाब झाक घर दिखै ?

एखन छोड़वेकान पहिने ई छटना घटल छल कि ताबत पश्चिम दिशाक एक पेरिया पर दू-तीन युवक गप करैत आ रहल छलाह, जकरा शिवनन्दन काका मुनि सकथि—ई शंभूआ छी बागमटीलोक जागुरु । दोसी रहैए । मुदा जाद्वैक-मानि नै मानैक ठग रहैए । ओना अछि इहो कट्टर जाद्वैकवादी आ ओकरा एकर सबक भेटक चाहिँए । ओहुना ई संभव कोना छै जे ओ अपन जाद्वैक सेवाएत दोसर जाद्वैक संग ई । तकर ओकरा उल्टू संक आनि मुनि क' ज्ञानापीसँ हमारसभक बीच पछीलक । भरिलक ई सोचिनो जे ऐ जाद्वैक बहुत लोक ओकर भोक्त छै आर. ओ ओकरा सबक लेल ठीक-ठीक जामुनी क' सकैत अछि । ओ सभ प्रयास बहुत चाक नै तथापि कोजिज कएलासँ सुनबा जोन अजैत गेल छलाह ।

शिवनन्दन केर मँचमे पड़ि गेलाह । कहल बिबिध छै एखन असली रंगताल ? शंभू स्वभाव आ परिस्थिति दुनूमें ओकरा सबक बीच उडैए-वैछैए ओ कोनो जामुन नै । बरि ओकर जाति-विरादहीक लोक ओकरा मुख आ छोटका लोकक संग उडवा-वैछवाक कारणेँ पृथग्वै देखैत छथि आ जानिबोही मानैत छथि । ओ गरीब सेहो अछि । सेवाक-परिवराक लाघत धरि नहि । तेँ अपन जातिबला सभमे ओ माथसँ एएर धरि तिरस्कृत अछि । मनुक निषणक नहि तेँ कतहु कोनो लोकसँ तेँ भेटि सकै छै । ओहुना कतेक गोटे त' पड़ल-सिखल अछि । तकरे सभके कोन लोकरी भेटि रहल छै आधार-विचार, पूजा-पाठक अन्वयत सेहो नै छै जे लोक ओकरा वापक स्थानपर पुरहितार लेल स्वीकार क' लेथि । तुलमे बखन काम उमेर छलैक, एक पैच लोकक कैक महीसामेस एकटा पीछिया ल' क' पोतैत छल । छोटपर बेसि क' चरावए । बात काटि क' आनय-खुआनय आ दूध दुहिक' बेचए । कतेक मनेक खर्च निकलि अबै छल । पंडितजीकेँ सेहो मदरि भेटि जाइ छलन्हि । ऐ तरहेँ दुनू साँझ दूधक आमदनीसँ ओ परिवारक ओढ़क आर्थिक प्रदवि क' दैत छल ।

एक बेच जखन महीस शाकिन भेल त' शंभू जान उपरि क' ओकर सेवा कयलक । जत' तत' नै ओकर नामक शाय धरिँ हरिवर पास काटि-काटि क' अजैत

छल आ महीसामे खुशाल पोतैत छल । ए सेवासँ महीस बेग बुधगरि निकलनैक । बिपरी पाड़ीए तरे । इहो खुनिएक बात । जखन बस दिनक शाय महीस शुद्ध केनै आ दुहल जाए लगल त' एक महीसिया जालटीन भरि क' दूध । लोकक आँखि काटि गेलैक । ई छोटका छोटका कसाल के सेवा केवल महीसक । ओहि तेन रामस राममे ककरो महीस एतेक दूध नै दै छलै । आ एकर समस्त गाममे कतहु अर्वासाने कतहु ईप्यमि चर्च भेलै ।

महिनिक मासिककेँ सेहो कहीं दुखल गेलै । ओ ओकर मोचमे स्वार्थ भरि गेलै । ओ कोनो तरहेँ महीस पोसिया छोड़ा केबाक योजना करए लगलाह जाहिमें महीस पोसिया छोड़ाकए अपन घरवर्गपर आँखि बेथि । मासिक अपन पहिले जखन चाहे छै, त' तकर अनेक रस्ता होए छै । नै किछु कुराँ त' इएह आरोन लंगाक' कि दूध बेचनि ओ मनुकरी करैत अछि—बेदनानी करैत अछि, तेँ महीसक हिसाब क' क' ओ छोड़ि दै महीस । चाहे हमरा अपने दूध कीन पईए । तेँ मासिक महीस छोड़ि लेताह । ई बात मुनि क' ओकर बाल मन धकलै रहि गेलै । ऐ ठेर ओ सोचलक जे दूधसँ जे पाई जमा करल जाहिसँ एक आर महीस कीनत । छोट सब महीसक घर बनायत आ ओकर भाप के कुटिनीसिक' जे गुजर कर' पईत छैक, बाबूके बेराम रहलो पर स्थान क' क' जे घरे-घर दूध-राठ करए जाय पईत छनि, ताहि सवसँ छोटो भेटि जेतनि । मुदा ई त' दोहरे रुप सोझाँ आबि गेलै । ओ भेट करए गेल महीसक मासिकसँ क' कथा-चुन' पड़लै—देखबामे छोड़ा छै आ हमरेकेँ चालाकी । दूध बढसानी करै छै ? मासिक ओकरा अपटलक ।

—जाबयि भगवती ! मासिक एक चुनक बढसानी नै करै छी । अहाँ अपने दुहवा लेन कक अपन पारमे । शंभू नेचनियाँ करै जानक ।

—किछु नै ! हमरा आव दूध दुहवाव' पड़न ओझियाँ । ई नै हेनो, हमरा कैक गोटे कहलक अछि बहुत दूध होइ छी महीस के । हमरा घरमे खबरा राखि क' बैथि छै । महीस आव' हम अपनहि राखब । हिसाब भ' जेथी तोहर ।

ओ केर किछु कह' चाहलक त' मासिक छपटि देखलिन आ कहलनि—पुरहितजीकेँ कहियहुन भेट करताह साँझमे । काहिह महीस हम अपन घर पर ल' आनब । मासिक उठि क' हुनलोक भीतर चलि गेलाह । ओ छोड़ा लगभग कतिने अपन घर पहुँचल कीनत किछु कहियो नै सकल भाए-बापकेँ । मुदा ऐ चोटक वाय ओहि दिनसँ ओ बढल लागल ।

ओ जानक गेहनतिसँ पीठपर बैथि-बैथिक' जाइ-बरेसाहमे पसर चराक' पोसल गेल हुलाक महीस के बढसानी क' क' ओकरासँ छोटि लेल गेलै आ गाममे किछो एक गम्बो मासिककेँ नै कहलक जे अहाँ ई अन्वयत क' रहल छी, ऐ सेवाक संग आ पचैथी

लकने बैसाएन जा लकने । लकने ओ कुलनक जे नामने आव ओकर अपन कियो नै छै । नाम-दान मेही दुकोलकी—“जाय रह्यो, माथिकक बसु छै ओ ओ मेरी । ऐमे तू की ओ सरी छै ? हमरा नामने नै छै ।”

—बाह, पालनेवा त' हम केही । गतिन भेल, विश्वास हमरा ओहिठक । ओनिक चारु कुओलियो, हम । परेनिये हम । त' हमर केना नै जेय । हमरा नाममे विपक्ष नै । अहाँ के सोन नै जे कहत आपन रहए ई मरीम । कसाई रामे जेबैत रहति त' अही कहतिनि जे हमरें बैसाके द' दिमी, चरान्त, पीतल, लालक रहत । तखन ऐमे रहति ओ महीम, आ कथन सोन वैसाके, दधमरि भ' गेलनि त' ओन भ' गेलनि आ अहे हमरा ओन आ वरमान-वनक' महीम लीनयो क' त' गेलह । भगवती अकर एकर डक देविन ।

एही बीच जखन धनुकटोरीक किछु लोड़ा गभनै आ ओकर खगुरिया छलैक महीम चरान्त ओकरा राबत ओकर गभक' कहलैक त' एक सोन एक गोटेक मान कहलक—कहू, हमरा दूदा-महीम अछि, एकटा लोही सोन । हुनू हमराय नै सम्हए जेनु बापरा नय बैसल । ओ सावि गेलनि ।

तेपर दिन महीम दरखवापर आवि गेलै । आब दही एकटा भगतक गप भ' गेलै । कहतु होइ ? धानुकक महीम कवी ब्राह्मण नेता पोरिका लै ? ओ पुष आबि गेलै ? आ धानुकक एह्य साहज ? ओ एही बाबे सप्तत ब्राह्मण टोक के गीता देखवए गाहैत अछि आर किछु गहि । आ पुरहित महीम घुस आवस करिष । एक आम्बोलन सन नमि पढ़न आ सोभ के ऐ महीमस हाथ धोअ पड़लै । महीम घुसव पड़लै ।

—ई किचि छै ते धानू ब्राह्मणक महीम पीसु त' ओ खोलिक' लड जायत जे ई बडमान अछि । धानुकक महीम पीसु त' एहू सब गोटे अह' लगलह जे ब्राह्मण भ' क' धानुकक महीम पीसल ? की खराबी छै ऐ मे ? आ केर ई सब के होइ छनि एत' बजनिहार ते जा अहू—किछु मामि छै छी ? ओ बानक' सक' पीसक । ई सब की हमरा केताइ दइए ? एको लौककरेटी जनै छी हम छे बसतकर रामक ?

—सावायने रहि क' सत पड़ै छै बेटा । एहन लो नै बुझयोही । पीध हेम त' लुझयोही । ओ बेवम शान्तिले बुझौनिश्चित ।

—तुदा ऐ तरहे हम पीध-बीना होव ? हम त' पहिने नरि जायब बाबु ।

—एता किछु वनै छै ? एतत हुनर दुरहिताइ जे अछि । पितर भरीक देखिनि ।

—तुदा अहाँ दुकोल छी । कहिना धरि पीधव ? तकर वाद ?

पुरहितकोक' एकएक सोन दइलैत जे अपन पैघ बेटाक सेहो एक मामूली प्रजनक जहाज ओ के डर' सकलत आ कुछ आ अभायत' पक्षडाक' एक दिन ओ लोक पीघ चुनिपनि सब' बलि गेल तकर फनी नै जायत । डेढ़ बरिस बाद ओकर एक पोस्काट-एनै जे ओ

होइयो भगवतीयाक मान कर' जायब अछि । अगिला घामयै दु टा टाका भास-नास ओ दिनका पडैतनि । एहन वरनाहा टोक-टोक, तप नै जेल अछि । सेनाइ-भरिन्द खाए ओ आ मुर्तेमे एकटा ओछामेले सेहो भेटल अछि । ओर आ लोकमे काहू सेहो गोबेले अटैए । कपड़ा सेहो अछिला घाममे देताह ।

ई सब कथा शिवनाथन कथैत छथि आ अहूि गंधुक आहुक गोबिनि मेहो । ओहू आही भयहावना आओर अभावमे केता-केता दुख न भित अछि आ नाकक गुहा संवदनक एक क्षणियाली सबस अछि । ओ नामक राजनीतिक संतुलित क' राखि सकैत अछि । ओ संवदन सजित रहैत अछि आओर नामक केतुनी राजनीतिक गतिविधमे ओकर महानि-अवगुणित एक प्रभाव होइत । ते' सोन ओकरा जल्दी छोड़ै गहि । ओ गतिवीक छि जे ओकर मक्की विश्वासक महीम खोनि गेल रहति । ओही ओकरा प्रत्यन क' क' राखै चाहैत अछि, आ आइकाहि ओकरा प्रत्येक दरखवापर जाहक लेल छुल जाइ छै । एहू नै जे ओ कतहुत उग्रवी, उग्रवी, दुयक' भ' गेल अछि । नाम संवदन ओ जीवतक अनुगत नाम, नामक परिधिनि सब ओकरा एक अछि द' देने छै जे ओ सब अछक ईग बुझ' लागल अछि आ गतोक अल ओकरा दिनारने बाक भ' गेल छै । ओ नामक राजनीति बुझि गेल अछि आ अवनिके तकने अनुकर गहि गेल अछि ओ ।

रहरत, बाबू, बिबातके ल' ओ घाममे जगहा होइत रहैत छैक । बजनी भारि छथि बेबापर, कवनो कुसिपर शीति केता नर कवनो भाग-जालस' जमान कता केता पर । ते सबके लसकामे ओ कुशल नातिन जेल अछि । ओ अहूिना घाममे अडयामक व्यवस्था केता होइ, भोज-भातमे, शिव बिजलीक ऐ नाममे नेहोमिस कता सराहील जाय, ते सब धरि ओ बहुत क्षमरता ओ दुगलतास' करैत अछि आ लोकप्रिय अछि ।

बुझियाही तेहो ओकरा निषादके क' रहैत छथि । एहीमे हुनका अपन बडमान आ अविषयक कुताक सुरक्षित सकैत छनि । ते तरहे जनु घामक कतिन व्यवस्थामे संतुलनके दुक अछि । मुदा विवाहसपर एहि सन्तने कि ओ आहुक एहि घुमे लसक' देखि जखन जखन राजनीति बलि रहल अछि, तखन ओ जाति विरुद्धी राजनीति किछु क' रहल अछि । दोसर जाति बंधक सनने किछु कहैत रहै ? ई आरोप ओकरातर ओकर लक्षकथित स्वजातीय समक छैक । आ दोसर के लोक छथि, ते भने हुनका लख लख बीना प्रमाण रहि छनि, तखनि धनु के जायस मानैत छनि ।

तनु भरि नामक विभाजित विषयादमे दुगुंरि रहल अछि । आ ओ एहि निवन्धनके बुझैत अछि । मुदा तेहन तत्तापुन भातापुन नामक रहै छै ताहिमे

ओकर कोनो उपयुक्त आ ठीस अवसर भेटे ई छै जे ओ लोकके वास्तविक स्थिति आ अपन मोन बुझा सकए ।

सामक राजनीति, उपरस संभुके मान्यता देइयो क' भीतरस ओकरा बारेमे ई विश्वास आ संदेह दुनु पक्षक मोनमे बनीने रहैत अछि आ एहिमे लोकक स्वाभि सिद्ध होइत छैक । संभु एहि बातसँ सेहो अनभिज्ञ नहि अछि । मुदा ओकर अपन बुद्धि ई कहैत छैक जे जातिवादी संघर्ष बिल्कुल थोड़ा समयक हेतु शक्ति अछि, आ ओहिमे वम नहि छैक । जाति दुहएटा होइत छै—'अनिक आ गरीब' ब्राह्मण, क्षत्रिय आ वैश्य, मुदा ई सबटा लकीचला छै । ओ अनिश्चित, शिक्षित सब लोकक सौझा पड़ोसी मानक एक बड़हीक उदाहरण रहैत अछि जकरा कोनो महान ब्राह्मण सेहो आदरसँ नमस्कार करैत अछि आ वरजजा पर बैसाक' गौरव अनुभव करैत छथि । कोना ? ई जाति किछु छै न' ओलेक प्रतिक प्रभुत्वशाली रहियो ओ निम्न जातिक अछि, ब्राह्मणक घर ओ कोना बैस सकैए ?

दोसर दिस अपनहि भावक बोझ ब्राह्मण भिन्नमंगाके देखैत अछि जे काद-अच्छा सब किछु पाँच आ सेवक लेल आचार अछि । ब्राह्मण टोलमे 'ल' क' मुतहर टोल धरि भीख मँगैत अछि आ कमाल त' ई अछि जे अधिक मात्रा आ उपलब्ध ओकरा ओही टोल सामने भेटैत छैक । जखन कि अपन ब्राह्मण टोलमे बेसी लोक वृत्कारिए दैत छैक ।

ओ ब्राह्मण अछि भीखमंगा । ओ की अछि ? ई खब नुछ राजनीति छी । जे तीन चावल पाँच साल धरि देउपर राज्य कइवा जे' जननीय अछि, आ जखन गरी छिनार्य मँगैत छैक, तखन जनमे छै ई जाति सौधर्यक राजनीति । भिन्नमन्दन सेहो एहि तथ्यके नीक जकाँ जानि गेल छथि ।

ओ वदबड़छ छथि तबीनक सब मोन पादि क' आ फेर दइलस नगीत छथि ओही बेचैनीमे । मुदा एकर आसका हुनका जनल रहैत अछि जे ई बात एतबै नहि अछि । राम एकराए किछु अधिक नाल, आ मंभीर वास लागल अछि, आ एहन जखन राम लागल अछि त' किछु जे किछु केनैत । जे किछु बहुत बेसिए अधवाद् भेलैए । हुनक आर्णक्रमे अनुभवक एक परिणाम परंपरा छलनि । जे ओर होइत-होइत अंदाज लागि गेलैथि । किछु लोक बाध विराज' भाएल-भाएल एतह आ कोनो तरहेँ हम नीत बजनाह—'बड़ अनर्थ ज' गेल । दुखहरणके गारि देलक' । अइह सुनलक, लोकि—दुखहरण ? ओहि गरीब ब्राह्मण लोकके गारि देलक ? से ? कोना ?

हकमैत संवधिवा राजन । बड़ास्थान बला सेतमे ओ कोयारि पाईम छनाह तबमे उधर भर न' एक लै सोटक हमेडी एल । धेरि सेवक । पतिने लाठीमे रेंगा देलक तखन ओशरिने खण्ड-खण्ड क' देलक ।

—की ? हुनकर मुँह खुल रहि गेलनि ।

—हँ । ओ कहलनि ।

—मूदा किएक ? के छल ओ सब ?

—कहादनि मुधिपाजी अपने हँसैरक भागू-भागू छनाह, आ गारनिहार के हुकुम उएह देलनि हँसैरके । बेचारा दुखहरण निकरोल रहल, छटनटाइल रहल जे किए गारि छै हमरा ? हमर कोन अपराध अछि ? ओ जननी केनोह ? मूदा जखनमे केओ कहैत रहल ई वाहन बाँचि न' पावो । खण्ड-खण्ड क' बड़ी आ गाड़ि बड़ी एही क्षम । आ इएह भेल । बेचारा संभु सेहो भाएल गेल ।

—की संभु ? से कोना ? एक गोटे अतहव भीनैत पुछलक ।

—गेल रहए ओकरा सभके बुझवए । पला कर्ण त' बीड़ल-दीड़ल गेलै । कह' लगल किए अपड़ा करे छ ? दुखहरणके किएक गारण आएल छह ? तहीरर हँसिडी बला सब कहलक—'एकरो गारि ई । जातिबाइ के मदति करए आपल अछि । हँसैरिमेसँ एक गोटे बजल—'हँ कही छलियो जे जे ई सार सेहो एतेक दिनत हमरा समक पक्ष लेवाल बंग तबै छल । भीतरसँ अछि पत्रका जातिवादी । कटुर अछि । वाहनक आगुल छल । हम न' कहू छलियो ।'

संभु दोरसँ मुदा विना उत्तेजित भेने बुसैरक—'रे भाइ ! बात त' बुझक तो छल । विवेकस करहु, तो' सब, तो' सब अकरा गारि रहल छिही, लकरा किए गारि रहल छिही ? ई गरीब की बिगाड़लकए तोरि समक । ई बहुत सज्जन आदमी अछि । ई कोनो लटपट न' रहैए बेचारा । अपन लेल कोहि दुख अछि ।'

—ई हमरा जातिके गारि चढ़लक । एक युवक लाठी उठवैत दोरसँ बजल ।

—ई से न' क' लकए । एकरा आइ धरि केओ गारि पड़ैत जे सुनलक किछ । तोरा संदेह भेलौए जे ओ गारि न' पड़ैत होत । संभु आत्मबिरक्तसक सब नेहारा करैत कुहास' चाहलक ।

—ई पड़लक । आ हमरा जातिके गारि चढ़लक । हमसब एकरा न' छोड़वै । ओ नहि मानलक ।

जे एक दिस दु बेहथियार लोक-दुखहरण आ जनु दोसर दिस लाठी-फरसा गिडान मेने लए लोक । गारि खादि गेलै । अखहाज निरपराध दुखहरणक लहस छथि पड़लक क्षामे ।

ए घटनासँ पुरा हुलास भेल गेल । आ उत्तेजनमे ओ सतेक जातिवादिताक उत्तेजनाक रूप ल' लेलक कि बाध अस्तित्वक हेतु ई फिसले क' गेल, उचित रूप जे पला हुनकर अछि कि हमरा समक । रहू कि भूख भल । राम दिनक बकलकसँ ई लोक अछि जे तब क' लेख जाय । आ दु जातिके क्षामे पद अहुर जकाँ संगठनात्मक नियंत्रक

पहल कहत जाय लगल । आपनने तनावली एक-एक क्षण बाइक पाणि जकां बहैत आ रहल छल ।

ई सब किछु बातें बिहिमे जनमि रहल छल । आ ओही वितक आरंभमे, आओरो संभार बंधू मुख लोकनिके, जाहिमे हुनू पक्षक लोक शामिल, छलाह—
‘छलाह राति एक अंशक केने छल जाहिमे तब बर’ चाहे छल जे अखनमे जातिपातिक रूपमे छे हन आंगसी भेदभाव आ अकारण बदलाक भावनामें तपसा रहल छी जे चर्चित नै अछि, कोहलीकनि आ एकरा खुसक चाही हमरा सबके । मानक के नै जनेत छे ओह आदमी के ? किमो भिकाइत केने ?

दुखहरण जेहन पुरुष छल गारि नै द’ सकैत छल । ओ बहुत तरहें दुखवाक कोशिस केलक । दोसर जे एहन बेसी केने तै ऐ ‘चातकी’ देहा देही मानक जाहिमे—
गारि पहलके तै हुनका सबहुक सोझी भाकी संभय कहल जाइत । जालीस देहाक सभमे एकर समाधान हमरासभक हेतु बड़ महल पड़ैत आओर अछलाह असर हुएत । रामपर आकाश अचि जायत । अहाँ सब खुस परिस्थितिक मंहीखा, बिकरला आ भयकरता । अवसर लेओ प्रपंची अस्वास्ती ई अकबाह उड़ोख अछि । एकरा पाछु कोनो बड़का बहवड़ी छे साइम । चिति जाइ ओ ।

मुदा जेना कि आशंका छल, ओकरा सुहर तै नै पराजित, मुखियाकोनि अपन जेसबाधारणमें ई मनवा लेतमि जे बंधू आखिर अपन आत्मिक पक्ष लेलक । ओ हमरा नमक हमरदे नै अछि । आ कखन भिरण्य करामे सफल क’ गेलाह । निश्चय केने ओकरा सारल जाय । चाहे नै होइ ।

ते रातिश्रम गपक कतेक-कतेक सूचना शिवनन्दन कका के छलमि । आ मोने मोने शंभुक सभ प्रपंची कवने रहल जे ई सब उचित होक पर ई कोशिस केनेक अछि । मुदा जखन ई घटनाक अति गेल तै हुनका कइ श्रवण लगलमि । जेना बिपदासो नै होनि । ओ ओहि व्यक्तिमें प्रकृत्यनि—मुखियाजी अपने रहल हँसही जे क’ ? ओ कहलक हु गोट कहे छथि, अपनहुँ छलाह । एक दू शीटे कहे छे—अपने नै छलाह ।

बड़ शिवनन्दन ककर मुझा उटलाह ‘ई तै गोल सटोल गप भेल । अहाँ डेरल निग छी । सफ-साफ कह’ । ते पर ओ व्यक्ति मेहो मुझा उटल—डेरएव किए ? हुन ए जेमेवने नै कह’ चाहे छी ।

शिवनन्दन कका सोचब लगलाह, आखिर एहि घटनाक जड़ की छी ? तुरत ओ किछु बुझि नहि सकलाह । ई जेहन जातिक-झगड़ा कोन उद्देश्य ? ताहपर दुखहरण । ओ बेधारा तै शी बुझल जाइत अछि, नामो । ओकरा संग एहन अस्वाय ? मास घुमि गेलत बिनाग ‘सोचि-सोचिक’ फिरीसान भ’ गेलैत । तखन एकाएक हुनका सोन

पड़लनि । ई, लगभग सास दिन पहिले मुखिया दुखहरणके ओ ‘लेत बेधि बेव’ कहने रहैक । मुखिया चाहे छल जे ओ दुखहरणक लेत ‘कीनिक’ बनता फोटोमे मिला लेत तै ओकर फोटो पैच क’ जेतैक । ओरिग आदिक व्यवस्थाक करत तथा खुब लोक फासिल लेल करत । मुदा दुखहरण कहने रहैक एएह ओकरा आहार छे, धियापुताक जीवन छे । ओ जमीन नै बेधत । मुखिया पहिले तै नरमीमें केर समझी देत कहत छे जमीन बेजि देव, ओकरा मिश्रि देव’ । दुखहरण लीसो नै मानलकै । हम अपने परिवारक आहार बेधि देव क’ रहने कोना ? ते पर मुखियाजी तमसा गेलह । ओ धकर श्राव स्वभावतः दुखहरणक बंधू बनि गेलह । आन कोनो बाल बहि मुसलमि दुखहरणमें बदला लेबाक तै एएह जातिके गारि देवाक बात ओकर अपराध प्रचारित क’ क’ अपन मानाक जनमत प्राप्त केलनि आ एक निर्दोषक संग एकेक पैच अस्वाय क’ देलनि ।

ई समयत बात शिवनन्दनक माथमे एकाएक घुमि गेलनि । ओ ओ दुखहरण ओ बंधू के बारेमें सोचिक’ व्याकुल भ’ गेलाह ।

दुखहरणक इलाक खेतमे पड़ल छल आ हँसहीक संग सभ ओहि आसबै भागि गेल छल । शिवनन्दन चिन्तित छलाह । आव एगो एकरोमें भवानक सिलसिला आरम्भ होएक पुलिसक । समस्त नामक तवाही । ओहिमे सभ गुप्तताह, से हुनने नै छनि हिनका लोकनिके । ई पुलिसिया सभ ब्राह्मण आ धानुक वा चमेल नै वृजत । ई सबके लुटत एकरा सभके सभ किछु मुअमल लने छे । एहने निज होए के सब ।

तखने हुनका भेरी जे बंधू मरण नहि । ओकर प्रण सभने छे । ओ अचि सकैत अछि । मुखियाजी आ अन्य किछु लोक मानुमान क’ लेने छथि । ओना पुलिसिके ते घटनाक कोनो खबरि सुबब गारि नै छैक ।

शिवनन्दन कका बुझारीपोने तलक उटलाह—ते मुखिया सव ! जे ओकि सकी छी शकस तै बँचपथाक उपाय कर’ । अस्वभाव क’ बाही । अपन बंधुक उमेरक संग ए नामक उमेर जोड़ल छी । चुनै जा ।

तखन किछु गोट शाकल आ जोशमे खेत दिन बहललाह आठ-नाइ क’ क’ । मुदा एहि घटनाक पश्चात शिवनन्दन कका मेहो अपने आसनिमे जातिश्री घोषित क’ देल गेलाह ।

□

एकटा रह्य सातु बेचनी उर्फ रस्ताक खिस्सा

जेना कि होइत छैक । सन छोट-पैच सहरमे । साल-डेड़ साल पर । कएक बेर छवो नासपर । यदि कोनो आना-प्रभारीक अवनी होइत छैक । नव प्रभारी सत्ता सम्भारैत अछि । जेना कि होइतहि रहैक छैक । तँ छोट कि पैच सहरक भौवटियाक पुरा कन उलट-पलट भऽ जाइत छैक ।

सड़क कतवहि सँ एगिल ताड़क समकोला आ फाइन-चोटल स्थाविक बत्ता छाहरि कवल परक भ्रम भर, तोड़ि-फोड़ि कऽ फेकि-फाकि बेल जाइत छैक । आ चौबटिया पर एक कतवहि से पैसक भंगल बुझा जुता सोबैत-सोबैत एक आधे एंडर का कऽ अपन छोट-छोट रैजकी सन-सन रंग-बिरंगक चमड़ाक टुकड़ीबला मैलहा जोरीके हड़बड़ कऽ छुसि-छासि कऽ कंध करिये आ कत्ते-कत्ते अपन खबटा भुत्ता मरमतिक मुरंजाम समेटि कऽ पड़ाइए कोनहुँ थान ठाम । ... वा बत्तीक जाकरीके पटिया जकाँ पजरा गेटल पीआपर बिछा कऽ कोनो रेडीमेड कपड़ा बत्ता छोट छिन कपड़ाक बाँकनके एकहि मोटरोमे बाँहि कन जोड़ि कऽ टाड़ होइत बात विरोधि कऽ मोहरावऽ काँये सोझाँ हाकिमके जे खाँको हाकिमेट, चोड़ा बेरत आ मोट-मोट गुता-पैतावा पहिरने भरि टाड़ तमाकुल सुसज्ज कटा सँवैत खूब जोरसँ सिखरैत रहैत छैक—'री हरमजदा सब, ई मड़क छियै कि मुतापज बजार ? एना जे तोरा सब तड़ककेँ हट बना कऽ धेने छेँ से सार सब बल, भरि राति सड़वेँ हाजतमे तखन सोझि हेबे' । बल ... बहान ... ।

—'हाकिम ... ।'

—'चोड़ मावर ... ।' किजका ओडरते दोकानि किमा है ? बताइ ... ।'

ई सख्तदार आवाज सभटा अनुनय-विनयकेँ प्रचण्ड विहाड़ि जकाँ उड़ा-मुड़ा कऽ तहस-तहस कऽ जाइत छैक । अर्थात् ओहि खेचड़ीक चनक मोची, गनी, रेडीमेड-दोकातदार, रामप्रसाद, भूज-भरद्वाजी बेचनाहरन तऽ रिजवाबला सकल लेक आ सातुक दोकन घोड़ि कऽ बैसमिहारि कमली मायकेँ ई अनुभव होइत छैक जे एना ओख भुवार नहि । आज ओख भुवार ? सब अपना-अपनी आऽ बोज बस्तु समेटैक उपक्रममे चिंतित, उदास आ हिरासत भोतिवायल कोन एक-दोसराकेँ देखि किछु-किछु करैत-थाहैत रहैत अछि । सोझाँमे दू-तीन मोटे खाँकी हाकिम-पेटवला मोटेल तमाकुल भुकरैत हाकिम सबक गारि-कश्मल आ ऊँच स्तरसँ, अनेदो भ्रम होइत रहैत छैक जेना कोनो जर्मर टुक पर बालु खवायल होइ आ मे सोबे बाट पर भंगति कऽ चींकार कऽ रहैत हो । हाकिम सब प्रत्येक बेतानीकेँ नजर ... बहान ... बाबानी दैत उगलैत रहैत अछि ।

— 'तुरन्त भागी । डिरेक्टिफ जाग करता है । बाग के जमदारी मे बस लिया है । जहाँ एक्के ठो एसीडेंट हुआ कि सब चले जाओगे भीतर सार लोगन ।'

सति चौबटिया सक्त । अवगन ओहिना दुस्र जेना बीच-बीचमे दू-चारि बिनक बेल हाडिग पार्कक सोझाँमे पटना जंक्शनक रेल प्लेटफार्मक उत्तरवर्धिया खाती जमीनक भऽ जाइत छैक जाहि ठामसँ खानाबदोशक टोल अपन कम्बूक, तिबकी उखाड़ि कऽ कतवु बहि गेल हो । देखलापर उखड़ल खुदी सकल भूर, फूटल बर्तनक टुकड़ी, बिथरा सब, बोड़ीक जेप टुकड़ी, बेसक बोका, कोयला भा छातर, घोड़ाक तीथ, दू चारि डाना साइर-मोहर पर बुधकल कोआ ... ई दुस्र, कोनो पैच छोट सड़क चौब-टिया का सड़क कातक कऽ सकैत अछि । मुदा हमर खिस्सा भागवपुरक अछि । ओना खिस्सा गुरु भऽ गेल अछि पहिले पारिक पहिले शब्दसँ । मुदा आज जियऽ असल खिस्सा ।

ममलै हड़बिरदो । पड़ाहि लागि गेलैक । किछु लत्ते-कत्ते पड़ावस, किछु सामान समेटैत कात धरा बेल । ओकर टुटनाही रेंच आ छिट्टा पविमा, गिलास, चाड़ चौकीक दिक्का आ बुधक डेगकी सब टुकपर लबा गेलैक । फुटपास बेधिय । सड़का टुकपर लडा कऽ धानामे जमा होलैक—कमली मायक सातुक पविमा सेहो बाहिरपर हरिपर लाल मेरवाई भौलल छलैक । स्वाभाविक छैक जे ओ चौबटिया करीब-करीब मुर्दघड़ी बनि गेलैक । यकि मिनटक भीतर बसल गृहस्थाँ मुर्दघड़ी । कमली मायकेँ ओकर घेने ओकर बाटि-पोच वर्षक बेटी देसयल जाइ ! बादके सफाई ।

— 'हाकिम साहेब, बेहे हमरऽ जितनी छौं । ई सत्तू । घुसक देव । हमरऽ बाब सुतक मरी बयतै ... । गोड़ नई छिपी ।' कमली माय अनुनय कयलकैक ।

— 'जोड़ हुरामजादी । इहे इटा कऽर देव । गैरकानूनी काम करती है और मुँहों बलताती है । चलऽ बाग । आज बुझाई ... ।'

कमली माय तकर बाद बीच बनि कऽ ठाड़ि ।

तहिना आनक मोची ठाड़ ।

तहिना रामप्रसाद भूखतवा ठाड़ ।

तहिना रेडीमेड कपड़वाला गनी ठाड़ ।

तहिना चहबला ठाड़ ।

तहिना बुखिया सपरिवार, जे सफाई-तफाई कऽ कऽ तुरते अपन सड़क कान-बहिक खोपड़ीक सोझाँ बैसि कऽ हुक्का छैनहि छल कि ई काँच भऽ गेलैक । सभटा उखाड़ि-पुखाड़ि कऽ बराबरि कऽ देखकैक । ते ओहो सपरिवार बतीर कऽल जोड़ि कऽ बाड़ । जेना राज दरबारमे गेली होइत रहल होलैक कहियो ।

आधी हाक बैठ बना हूँटरधारी मुठरा और बना हाकिम समक सोनी ई कहवरी लभल छल । लोक, टपटप, रिभता-माड़ीक आवा जाही ओहिना छनैक । सब जसो सामान हुक पर आवल गेल । किछु पडावल सभटा छोड़ि-छाड़ि कऽ से हाकिमकेँ बड़ बुधियार लोक बुझवलनि । दिन बसा जवैक थोड़-बहुत सम्पत्ति छोड़ि कऽ, भागि गेलाह हाकिम सकल पक्षमे बुधियारी छलैक । जसो भैरव आ हाकिमक जवाबदेही किछु नहि । ओ तँ सभटा निजो सम्पत्ति भेलनि हाकिमक । बाँदि-बूँदि खपताह । एहिना रात बलैत छैक ।

खैर ! ई कहवरी कतवा काल तकर विशेष जानकारी नहि, मुय मंडा भरिक बाँदि आदमपुरसँ पंढाघरमे मिलनाहुर सड़क दू-तरफी मुँयबुड़ी बनि गेल आ पंढाघरक छहुरदेवालीक घेराके बसो कतहु नहि । सातुक एधियावाली ने क्षमली माय, ते आन बसो बीकावदार । तिवहु सन क्रम । तथा तिवहु जे पूरे-पड़िमे गेल मुहम सड़कक कातमे किछु दूरस्यो बसवतलमे जे रंगी किंकहारि काँदि रहल छलैक सेहो बसवत मुयल जा सकैत छल ।

एहि घटनासँ बहुत रास लोकक दैनिक जीविका आ घर छिना गेलैक, मुदा ई सब तेहन कानूनी दंगल भैलैक जे जनता जनार्दन ने सँ ककरो आपसि कसबाक साहस नहि छलैक । थोना विरोध करवाक साहस तँ गैर कानूनीयो रहितैक तैसो ने करैत बसो प्रत्ये । आ एहन सँ सहुबहि दंडिक निवचक खिलाके रहैक विषय । खैर, कलोक बाद लोक तेनाहुन चुना कऽ हाकिम सबकेँ लुओलक जा सलाह बारि कऽ बीड़ी हरीलकनि आ नैतिक समर्थन भे कहलनि जे—एहि दोकानदार सबक बसते जनताकेँ बड़ कष्ट छैक । अनेरे वाद छेकने रहैत छैक । “कलौ दिन फिम वेणव जाइत एकटा सभान्त सम्पत्तिक रिक्ता धरका लागि गेलैक” तँ “कलौ दिन एकटा इसकुलिया बच्चा पिचा गेलैक” आदि समर्थनकारी गवाही बयानसँ हाकिम साहेबकेँ मनोबल बड़ाओल जाइत रहल । हाकिम मनोबल पारिभासतिक भाषाकेँ ओर जोर करैत रहलाह जा सभटा अपराधीकेँ तेना दुतकारैत रहलाह जेना ओ सब जीविका लेल दोकान मेहि बयने रहल, ककरो हस्या कपने होइक ।

फेर कोना की भैलैक पंढाघर जीवटिपापर मे बहुत मोटेकेँ नै बूझल, मुदा दोसर दिन ठीक अपना समय पर, कथ तँ नहि, मुदा छिनावल दोकानदार मे सँ दू-तीन थो अपना-अपनी कऽ ओतऽ उपस्थित छल । पुरना बमरु भोची । एक कात बसल मन्दुआवल, चित्तावन । भुजावला, चित्तावन बीड़ीकेँ सोंटने जाइत जेना ओकरा एहि बताक पते नहि होइक । ओ तेसर कमली माय ।

पंढाघरक चतुसरावला चौकता खोड़ीपर उत्तर पट्टीमे बैसलि रहल । चुप । बेटीकेँ नीचे मे एकटा फल्लाही कपड़ा बिछा कऽ सुता शे रहैक । जेना किछु ने सोनैत,

बहुत किछु सोचैत ओ चुप बैसलि रहल । एतऽ कऽ चुपचाप बैसकि विगत पुराने ओकर गोर-नार-मुँह जेँक बनि रहली उत्तर शिखर मुला रहल छलैक । वन कि गाड़े बस, सएहु बजैत रहल छलैक ।

पंढाघरक जीवटिपापर पंढेक बाहु रोठ दिसनै एतेहि आकाशवाणीक माड़ी कण्ट रहैत छैक । बसु मय आबि-आबि कऽ चढ़ै छैक आ जाइत छैक । कानहुरी दिससँ एकटा बड़का वन टाड़ रहैत छैक तबोर कीमेजक । ओहो लोक सबसँ मरैत छैक आ धुनि कऽ निकलमासीयला रहल थऽ जैत छैक । तकर बाय एएहु छोट-छिन दोकान आ ताहियार गरीब पुरवा वरैक गहिकीक भीड़ ।

बाइ किछु नहि । मे चाहुक दोकानपर, मे कपड़ा दोकान पर । ओहि काँटे सवारी लऽ जाइत सब रिबजावला एक मजर ओमहर देखैत बड़ि जाइत । भरिसक चुपहरियाक भीजनक कोनो ज्ञान जगहु सोचैत जे कतऽ जायब बाय लेल ।

कनसी मायकेँ एहि स्थितिमे बैसलि-बैसलि बड़ी काश भऽ गेलैक । जसो क माय । दुरन्त छटपटी भऽ जाइत छैक । सुतलि बेटी करोट बयललकैक फेर भेकि ठाकि कऽ ओकरा सुनौलक । आ किछुए बल मोचने होयत कि ओकरा लगमे एक गोदे बाइकेँ कऽ टाड़ भैलैक—बायक गम्छा धोलि कऽ मुँह कपार पोछैत । लग आवल आ पुछलकै—“की होखी कमली माय ? बाइ कि लोककेँ सूख नै जायत ?” कमली माय चौकलि आ ओकरा देखलकैक । भरि बाँधि तोर । हवोटकार । मुय चुप ।

—सोनी मे टाड़ निबसयाम फर्कैत बुझ । आकृति कडगर, केश सौदल । एखनहुँ पसेनासँ बीजबकपार । एक रत्ती थकम कापल बिहूनी आकम्हापर राखल समष्टा । बयल पंचोत्तक धक मे ।

—“की बात होय ?” ओ चुप चिनेहू आ चित्तासँ पुछलकै । स्त्री मूढ़ी तुका कऽ जेना थपन कनगाह रोकवाक जेण्टा कयलक । जबाब किछु बड़ि देखलैक ।

—“बात की होय ?” बतावऽ ती ?” ओ किछु गंभीर भऽ कऽ जिनियाइत जकाँ पुछलकै । स्त्री चुप रहलैक ।

—“बड़ा सोमिकल बाल । पुछै छियी जे होयऽ छी की ?”

—“दोरियो भर सनुका छीनी कऽ लय गेलऽ । रच्छकषा ने । एलेडी गहि की केँ तँ छिलने छलिय ?” ओकर स्वर कथममुँह छलैक ।

—“बुझिय । पूर बेकिन । बड़ा हरमकषा होइ छै ।” ओ मुयक मोझकेँ मोहना लागि कऽ आबल ।

—“सारऽ कोय नया बहली होइ कऽ अपलऽ होतै बाकू की ?” बेकिन ती कमली माय एकदमे बेकूक छऽ । आये एतना दिन होय मेहली दोकानीपर बैठल, अभी तक भी ती कसने एतना बरी कऽ रहैऽ छऽ हे ? मुँहमे बोली नै छी ?” ओ मुयक कमी मोहित जकाँ छलैक ।

—'ओकी ? तनी टा तें बोलसियें जे हुमर बच्चा भुखड़े मरी जमतः' ...
एहनास खराब मारी देलकऽ खचवइ ते जे.....'

—'गारी ?' भुख चौकीत जकां पुछलकी ।

—'नै, अच्छत-फूल ! अपना तें भाय-बहिन छै तें हाकिमकेँ ! आरु तों' ...
.....' कमली भाय जेना कोध आ विवशतातें अनुरोध करैत बाजलि आ चुप भऽ गलि ।

—'हम्म की ?' भुख पुछलकी ।

—'बाह दिग तें बेसी बेसी दु बजे छलीं तोरा भाय ले आवै मे । काहू की होखही ? अम्मे म करलै । अयलऽ रहतिथऽ तें हम एतना नै नी.....' ओ कामऽ लागलि पहि बेर ।

—'बहू बेटो कऽ लगली काने । औरत जात ! बड़ा मोशिल ! अरे कानवारी जोयन चर्च छै । लगली काने । औरत जात । रे जवना कामती रहवे औतने आरु कनैतो सोयऽ ।'

—'हम्म औरत जात.....'

—'बूची मरऽ । औरत जात । की होलै ! हाय तोर नै छी ? आँख-कान नै छी । औरत जात ! तोरा सिती जनम भर एहने भोगवे कहीं ई छिली ।' ओ बौबहिमे कहलकै तयारा कऽ ।

—'की करसियै हम्मऽ ? तोरा तें आनऽ छलीं' काहू तें कहीं बीजिहैऽ ।

—'कहू बीजिहै' । केवा भला । कान आँखे बले एक ठो सचारी बिली बेदे चम्पा नगरऽ के । फेर क घूरलै चारु तरफ, बिपहरी भाय अस्थान, जेन मंडिल । कहाँ-कहाँ नै..... होय गेलै बेरी भूख भुख लागि गेलै । चौबसियै हिन्हे खाय लीं । ओ एकवच चुप रहि कऽ जेना अकलौष करऽ लागल ।

—'आरु हम्मऽ की जानऽ गेलियै जे ई सब काब होतै । बहलऽ अयसियाँ ! ककरौ बापके भोकर की ?'

—'हम्मरै करमऽ के लिखलऽ । आरु की ?'

ओकर एहि बातपर भुख चुप भऽ गेलैक । ताबत हुवाक एकटा तेज सोंक उठलै आ रिक्शा बुझऽ लगलै । भुख बीड़ कऽ गेल रिक्शाक अकने रसारिकऽ रस्ती कसलक, एक कोल कऽ छऽ कऽ कऽ आ फेर घुरिकऽ चलि आयल ।

—'जवऽ ?'

—'हम्मऽ की कह्यो ?'

—'बावऽ सगुका तें लगीवही की ?'

—'कहाँ तें ?' सरपुआ हाकिम नै सत्यानास करवे देलकऽ । ओकरो दिनकर दिनाचार सत्यानास करवे करलै । एक ठो अक्का के जेतना सतावे छै ?'

—'दिनकर बिनानाथ के फुरकत नै छै कमली भाय जे हुनि तोरा बास्ते हाकिम के कुछ करत । बेकली नै जयती तें एहने तंग करती' ।

—'बड़ मोशिल ! तें हम्मऽ औरत जात की करऽ पारियै ?'

—'कायऽ की करऽ पारियै ?' ओ कोधिल रहलै । फेर भाय होइत कमली के देखैत पुछलकी—'एकरा की होलऽ छै ?'

—'होतै की रात तें कुछ छुपने नै छै । जानिये-बूची कऽ गुलाब देने छियै । जागली रहतै तें कुछ खाय ले माँगवे करतै ।'

—'तोरा कुइरा ? बाप ?'

—'जेना सालुमे नै छी' । देखे जरी जाई छऽ । कहिया नै चलऽ गेलै हमरा छोड़ी कऽ अपना बेठा सब कत । हमरऽ केँ ओ यहाँ है दुनियाँ ?' कबेक लोहछि कऽ बाजलि आ उदास भऽ कऽ चुप भऽ गेल । ताबतहि खूब जोरसँ एक ठाढ़क हीन बैलक के लसली छँडि गेलैक ।

भुख के घुमल छैक सब किछु । ओ बीड़हि उठल आ बिदा भऽ गेल । हल्ले घुमले छलीक तें पुछलकीक की ? किचकिचयै गेल ?

मिन्ट पाँच के बाद ओ खलीफानाग वाली सड़क कातक गहूइ भुखक कोथरक छोड़का होइत मे सँ बोदे मुहूँ-कबड़ी कीरवे, दोनमे जेने पहुँचल आ छोड़ी केँ दैत कहलकैक — 'ये' । छोड़ी ओ धायलै रहलै । हासि कऽ जैत बिहूसलि आ बाप लागलि ।

—'तो' केहे नै बाप छऽ ?' ओ कमली भाय के पुछलकीक ।

—'हम्मऽ की खयबऽ ? हमरऽ भूख मरी गेलऽ' ...

—'धुत ! भूख मरी गेलऽ । जानी । जेना बेटे मरी गेलऽ होय ।' भुख बजलै । आ तखन जेना ओ बलजोरी फाँकऽ लागल ।

—'छिवा, एहनास खराब कहने बोले छऽ ?' ओ समसाइत बजलैक ।

—'तो' ? खाइत पुछलकीक ।

—'खयने छियौ । आइ तें विचित्र होलऽ । भोर-भोर लखना नै तेना जिद्द छली देलकऽ जे चार बड़ा विस्कुट आरु चार गिलास परमेसर अने चा पीई पड़लऽ । बड़ा बेज्जान छै-लखना । मानवे के करतौ ।' कमली भाय खाइत रहलै ।

—'आइ की करवै हम्मऽ' —ओ पुछलकी ।

—'मे की ? जे करै छलहै, जे करमे ।'

—'बैठे देतऽ जैन ठाँ सनू ले के ?'

—'ओकरा बाप।' युवक कहलकैक—'गलती करतहैं' एक ठोका मुँधाइ बित्तिस तखनीये ओकरा सिना की। और आबस की? फेर सँ बुरु करै लै लागल।

—'आब पुनी?'

तै पर युवक चुप भ' गेलक। छोड़ी खयबाने मस्त छल। खामल भऽ गेलैक तै अभ्यस्त भाव सँ उठि कऽ एक कात छरछुराहत कल पर गेल आ आँबुरे-आँबुर मसि दीतक। और बोड़ले चुनि आगल। युवक तमछासँ हाथ मुँह पोछि देखक। ओ बित्तिस रहल एम्हर ओम्हर लकैत जेना समधान लगे दातमे खसल कुँड़ी रहैक जे तकला पर भेटि जयनैक। अनयोचहि उठल आ कहलकैक कमला माय चलऽ। अभी हमरा हाथ चलऽ।

—'माय गे! कहाँ? तोरा साथे हम्मे कहाँ जयबी?' ओ डरायल पुछलकैक।

—'जेना डेरसखई जेना साथ छिकी हम्मऽ। हरजा की छै एकरा मे?' ओ पुछलकैक।

—'बाप बोड़ रहने तो?' आब हरजा छै नै? हम्मऽ तोरऽ के? तोरा साथे जयवही, तोरो की कहती?' ओ डरायल कम लायलकि बैसी छलैक।

—'लगे। बड़ी डर। की कहतै? आब कहते कहतै? हमरा रेवधा पर आबिर जनामो सबारी बैड छै कि नै? भाड़ा दे बिहऽ तो'।

—'जनाती सबारी आब हमरा मे की फेरक नै छै की?' ओ बजल। युवक संभोर भऽ गेलै। फेरक तै छै।' ओकरा बाप एक भग चुन चुन रहल।

—'कहाँ तै जयतिहो हमरा?' ओ जेना मिलायल होइत पुछलकैक।

—'आब सऽ ओकरा बाते की? कहाँ कामे वास्तै ली, और कराबय बला तै हम्म की तोरऽ? हम्म की कमली के वात छिकी?' ओ चुप छलैक।

—'तोरा खराब लागी गेलही। गंगा माय किरिया हम्मे से धोड़े कहने छलियै? लो तै बल्लो गोस्ताय गेल्ले। हमरा तकदीर छै फुरलऽ।'

—'फेर वैहें तकदीर। बड़गही भाय ई तकदीर दो भी गजब बात छै। करती ई कोय भला काम नै, लेकिन आवसी अचमऽ दोकान दोरो काम-धन्दा छोड़ी कऽ रूतै रहलऽ। तकदीर'—

—'आब की? तकदीर नै तै की? हमरा की कसूर? कमली बाप असी कोस शाम तै लामो कऽ यही पटकी देलकऽ। थैमे है अभगलिया के धरो देलकऽ आब कलक जगल कऽ छोड़ी देलकऽ। एतना बड़ऽ। एतना बड़ऽ शहर। कोय कहाँ अचमऽ तै जान-पहचान नै! जनानी आज! हमरा की कसूर छै? केहवा अचछा तै हम्म नाममे मालिके कन चीका-चलन करि कऽ गुजारी करे छेली, बड़ा दुबार सँ, बड़ा मनास कऽ बड़ी जानी कऽ समुद्रमे छोड़ी देलकऽ। हमरा कसूर की! कोम कहाँ नै। ओकरा। ओकरा

जात। इ धुककी जिम्मेवारी। ओकरे रहतिमा तै कहियाने धरारी बाट जाय के धैली कहतिमा' संगेमे। हमरा की कसूर? ओ कनतमुँह भऽ गेलैक।

—'तकदीर नै तै आब की?'

'युवक ते संगे सिखा सुन ते अंत धरि दुखल छैक। जयन-जयन ई मीनी तकलीक से पड़ैत छैक तै कोयो लाले बिसा दोहलैत छैक। युवक धैर्य सँ सबस मुँह छैक। ओकरा मानक तागति बड़ब लेल दलो केर मुनस बिसा केर-केर मुँह छैक। बरु बेटलो सबारी छोड़ि कऽ। मुदा आहरतपर बैतचैत सेहो छैक। एखनो सैह भैलैक।

—'ऊ तब मानतिहो'। लेकिन कमली माय, ई बतऽ के अभी तक तो जिन्दा छऽ, थैली भी कए जरिस के होय गेलही, ई सब केना होनी? बतावऽ तऽ?'

—'अन लो, तोरऽ उनकार हम्म'— ओ फातऽ जयलैक।

कि: छि। हमरा ई कहना नै छैलऽ। हम तै ई कहतिमा के आवसी अपना तागसँ आब जहो, जे लोक सिनी के बीचमे जीव छैक ओकरा तागसँ जीव छै, बड़ी छै अग। बड़ा तै गेलै तकदीर। लेकिन लो जे दोकानी पर बैसलै के के कहलकी? तोरऽ बाप-माय ते दोकान करले सेहो कहियो?'

—'कहियो नै?'

—'तौ बैठलो। जकरत होतै तै। सराय की छै। लोक के-मजूर रिवाज-आ सिनी के जकरा कोय घर नै ओकरा सबके खिलावा आब अचमऽ बेटी के परवरिस करना एकरासँ बड़ आब की बात छै? ई बात तऽ तौ खुदे करी रहली छऽ की कमली बाप करी जाय छै तोरऽ?'

कमली माय चुप छलैक-किछु उपकारसँ, किछु बित्तिस।

—'आब तै सेहो आसरा जयन।' ओ हतासल वाबल।

—'केहू? केकरा लो बाप के लगील छै ई धंदा-रके चौराहा?'

—'सब उजाड़ो-मुनाड़ी देलकै तै आब की!'

—'फेर बली जयतै सब कुछ। आब कुछ अच्छे हालत होतै।' जेना किछु मोन पाईव बो कहलकै—'बाप छो' कमली माय, जगह बड़े छैक, लेकिन तौ एकदम गुरुमे घाममे बैडी छली सन लैके—हे बहो, येन ठो।' कमली मायक आँख ओकर आंगुरक संकेत बिस गेलैक आ समकि जेना उठलैक—सते ई बात भी कोना बिसरि गेल छल जे एकवेर आरी एहिना भेल रहैक आ तकरा बाप ओ छाहरिमे जगह पावि गेल छल।

—'ठीके छै। एक दू दिन आब एहने चलतै। फेर'—

—'तेकरा बाप।'

— इतिहास होना चाहिये। अबरी कुछ बचका संसद आऊ अन्धे इतिहास होना चाहिये।

—की करवही? आऊ तोरा जकरत की संसद करे के। तो तऽ दोफान करे ने छऽ रिक्त बला के की बिन्ता?

—'की बिन्ता? हमरऽ खोई घर उठाड़ी देलऽ गेल त हमरे बैठल रह्यै? हे रात दोफान, चाह आह बिस्कुट दोफान, वैदे सिनीमे रिक्साबला, टेकाबला मजूरऽ के रसोई घर। तँ हमरा सिनी के रसोईमे से रह्यै तँ खपव बाहो? रिक्सा खीचवै आगवपुरा मे आऊ खप के जगह बाराहाड?' ओकरा हवरमे कोय आ संकल जकाँ भरल बुझावत छलैक। एक क्षण ठहरिकऽ ओ फेर बजलैक—'अनी सबके, हमरा सिनी सब के ई बाय मालमे नै छै कलसी माय।'

—'की?'

—'जे हमरा सबके रसोई घर उठाड़ी देलऽ गेल छै। मालम होतै तँ सब एक जुट होतै। एक जुट होतै तँ केस दोफान खोजै से छियै ने होतै। नै दिवऽ तीक एहीन ठी—कहाँ भी बियऽ। देतै केना नै? आखिर हमरा मजदूर गरीब गुरबा के गुजारा करे के कुछ जगह चाहियऽ की नै? हमरऽ की देश के लोग नै? हमरो सिनी के तँ जगह चाहियऽ।' ओ तमतमावल छलैक।

—'तबऽ जगह छिनये केहँ करे छै हाकिम सब?'

—'बडभानी करे छै। ई बईमानी ओकरऽ एही बास्ते चली जाय छै जे हमरा सिनी मिलि जुलि कऽ नै रहे छियै। अपनागे सगडा करी जे छियै।'

—'केना रह्यै मिलि जुलि कऽ? सब तँ अपनाऽ हिसाब लगावैमे लागलऽ छै। हमरा बेजबत करे छै हाकिमे तँ सब खनी गुमाय के ई छै ओकरा सिनी के हाथ पर...'

—'नै छै अकिल कमली माय। बुझाई आपने। बलिक बुझना चाहियऽ हे बात-बिचार जे आइ तोरा भारी देलछी। काल्ह ओकरो जगानी बेटी के बियऽ सकै छै।'

—'केना। हुनतै सब नै?'

—'बुझतै। बुझतै लग लागतै, सबके एकट्ठा होयले लगल। एकजुट। एक जुट होयले जैना ई जे हमरा सिनी यदि तेयो। कहँ कामजोर पड़वै कि दोसर मोहला आऊ बलाका के हमरे एहनऽ लोक सब हमरा साथे आबी कऽ हमरा वास्ते लड़तै। लेकिन कोय भी लड़तै तँ एकऽ के बास्ते नै कमली माय। अपना एहनऽ सबलोक के पहिले आपसमे एक जुट होय ले आपनी लखनिमे है हाकिम भी तोरा पर जुबुम बंद करलीं।

नै तँ एहने चलतऽ रह्यौ। आइ तोरा पर, आइ हमरा पर, परसु लखना पर। सब पर।'

—'लेकिन हाकिमे तँ लटो भोजी-भोजि कऽ डराय घमकल छै, भारी पड़ेछै ओकरा कोय डर नै छै?'

—'डर नै छै केहने कि ओकरा ई बात माझुप छै जे हमरा सिनीमे बायली एकता नै छै, हमरा तनी मे पड़लऽ लिखऽ कानून के बात जानै वाला कोय नै छै। अकली हमरा सिनी सफदीर के मानिकऽ सब कुछ बाढी-गुला गही नै छियै। अ सब जानै छै जे हमरा सब ओकरऽ कुछ नै बिगाडऽ सकै छियै, केहने कि केन जोखने नै रहे छियै। नैहे बात।'

—'तो ई सब केना जानै छहो? के बतावै छी?'

—'कोय-कोय परिजरे सब। हम तँ रचना भी हाँकी छी आऊ बुझयलऽ पड़लऽ लिखलऽ परिजरे छऽ तँ ओकरा तँ कुछ-कुछ पूछि कऽ सीखै भी छियै।'

तावते एक टा मैल कुचता-घोती कला सज्जन युवक के मोर कथलकैक—देखलक कि चोटहि ठाढ़ भऽ गलैक। अणाय कथलकैक आ दोड़ल ओकरे दिश। तेर किछु रूप भेलै। युवक घुरि कऽ कमली माय लग लायल आ कहलकैक—'दस बीस मिनट से आवै छियौ। पासे से हिलका पड़ैचाय करी कऽ। हिलीये हमरऽ कुलजी, कमली माय।' ओ कल जोड़ि प्रणाम करैत ई जानकारी देलकैक। अनायासे कमलीयो मायक कल जोड़ल गेलैक। ओतऽ से ओ सज्जन प्रणाम कथलखिन। युवक हाठकारि कऽ गेल। ओकरा ओतहि रहे लेल कहि कऽ हुतका बादरपूर्वक रिक्सा पर बैसीलक आ खूब जमाह से पायडिल चलीलक। स्टेशन रोड पर बड़ि गेल।

करीब पंटा भरि मे ओ घुरि बसलै। आ खाली अपन मुसली दऽ गण करैत रहलैक जे ओ कहैत छथिन निजर मन, एकजुट होय जो। बात बुझहीन, अभाव नै गहै। बेजहीन, दुनिया बललौ। मुसली के कही नै—'बाल मे बल्ला। मबरा बच्चा ओकरे। भरि जगलक मजूरक परिवार ओकरे। ओ जेना युवक कर्चा करैत-करैत बिभोर भऽ गेल। कमेक कालक बाब बाजल—'मुसली सँदे, बोसै छै। अपना मे मिलि के अपना गणि लै की बिना अधिकारी कन जो, तँ सुनै छौ तँ कमिशनर कन जो। ओहो नै सुनै छौ तँ एहीमडँ बाराहा पर परिवार के परिचार बैसै जो। हिले नै। लटो तँ लटो, बन्नुक आह बिगिरलम से की करे' नै। कहँ कि हमऽ केना रहियऽ? हमरऽ परिवार केना रहतऽ बहै? ओ इशजाम करऽ, हममे काम करे वास्ते तैगार छियौ। हमरा सब तैगार छी। हमरऽ इतजाम घराबऽ।'

साँस में बीगड़-बीगड़ तपड़े सबके एकट्ठा कपल गेल आ केर बैसार भेल। छोटे मोटे सहो, भीड़ भेलैक। खाली वहीं डहा धारी सब सेहो उहो कइ चल गेलाह। सब तप करैत गेल जाहि मे मुरही पुष्पी बोकानदार सँ लइकस रिक्सा बूझवर धरि छल। आ सब एता बेर-बेर अपन दक्षिण बनायब आ जकारल जयबाक तबस्ती के पहिल बेर एतक समीर भइ कइ सोचलक आ तब कथलक जे ई योजनाइ बन्द होइबाक चाही। तुरन्त बन्द होइबाक चाही।

सब पहिल बेर एक रंग सँ एतक उत्तेजना आ निर्णय लेबाक भावना मे एक ठाम जमा छल। मोरे ओ प्रयत्न बनलैक। शिक्षा अधिकारी, कमिश्नर ओइस जइतक।

भरिसक येहु किछु बात भेलैक। चंदावर जोराहाक एहि बेरक ई सकैया बधाई फूट चैकिंग, तब सबेँ सोझाँ अइलैक। एतइ धरि लम्बा चार बजो छाहिर कइ ओ छोटका बोकानदार सब, अपने-अपन दीवाल लगाएलक। जाग फलक व्यवस्था करैत गेल आर तकरा बाद कएटा जिका पदाधिकारी, धाना प्रभारी, पुलिस अधिकारी सबक बदलीयो भेलैक, मुश्क ओहत अभावपूर्ण फूट चैकिंग नहि भेलैक। आव कोनो संकट होइत छैक कि सब मधुमाछी जकाँ लुधकि जाइत छैक।

बोड़ दिन कमली माय सायुक बोकानक कात मे चुपलि रहल। गर्मी बड़ तीख रहैक। लोकक आवा जाही कम। खानिहार सब लभभन वा चुपल छलैक। एक आध टा बीड़ी सीटि रहल छल। काब धरत रिक्सा आ जायत, साही कम मे बैसल कयो तनाकुल चुनबैत, कयो माक माक मे सरकी सँ बचवा वास्ते गरुछा के सम्हारि कइ लपेटैत।

कमली माय नै खयत रहल। भूख बड़ी फाल सँ लागल छलैक। ई कइ लोड तँ खा लेक, छिपली धो कइ राखिये दिखैक तँ छा लेक, आवि सोचैत भूखले छल। कमयो तीव्रक अमलमे भरिसक। एक टा बाबू के छत्ता ओइने जाइत देखि कइ कमली माय पुछबो कयलकै। छीक तीन बजे छैक।

—'कहाँ रहलै ई।' एक रती चिन्ता भइ गेल ओकरा। एहि चिन्ता मे किछु कल आरो बीति गेलैक। केरो ओहो समय बीति गेलैक। पर एक के जाइत पुछलकै—'साइ चाँर। अब ओकरा खूब चिन्ता भेलैक—'की होलै? कही रिक्सा तँ नै धक्का लागी गेलै? मोन तँ ठीक छलै। फालू त ठीक रहै। कहाँ राती त नै बेमार पड़ा गेलै?'

बास्ते एक टा छौड़ा जकाँ रिक्सा वाला आबिकइ कहलकै—'मौनी, जाने छइ ओकरा तँ रिक्सा साथे घाना मे बन्द करी देलै छै।'

—'आर्य' ? ओ बराबरत। 'केन्हू ?'

'मासूरी एकठो गोटर बसा के मोटर के चुतइमे एकरइ रिक्सा के रिम बाँधि गेल आर जरा-सा दाग लागी गेल। एतने बात पर।'

—'आवइ। ओकरा जेल मे बंद रहै ले होतै? के खाव ले देतै ओकरा?—' कमली माय जेता युवक रिक्सावाला बारत गहि, अन्त बेटी कमली वास्ते छटपटा गेलि हो।

—'हमरा जरा देखाय देवहे तँ, कहाँ बन्द छै?' कमली माय बिमली कयलकै।

—'जिलाबडी नी। बनिहइ। पंच बजे मे। एक्ठो दुठो टाका भी दे ले होतै वहाँ।'

—'मिलै ले देतै तो?'

ओ छोटकी तरानू बढधारा सँ साबू तीलि कइ अलनुनियो रिक्सी मे बैसकै। ओ सतनिकइ गोली बजा-बजा भीड़ लागल।

कमली माय केँ एक-एक छन असह्य छलैक। हजर-दुवर पानि देलकै। समेटलक आ बगलवला के थोड़े फास बोकान देखइ कहि तंगे लगलैक।

बड़ साहस कइ जखन बागड गेल त बड़ जोमाइ लम्बा कइ ओकरा बंद करइ देलकै हाकिम सब। लग गेल तँ बकारे ने फूटलै। फातइ सभर्य। कमलियो फातइ लगलै।

—'बैठे काने छइ? ई राम एहने नाटक मजाक छै। सब ठीक होय जयतै। चिन्ता के बात बिलकुल नै।' ओ विहूसि रहल छलैक।

—'चिन्ता के बात नै? हमइ मरी रहलइ छी थारू... तोरा...'

—'बिचित्र बात कमली माय। आय गोमेँ कुछ नै कहलौं।' केन: ओ खोजबैत पुछलकैक।

—'हमरा सँ रैह कहय वास्ते आवा आओ गेली छइ। बोड़ दिन भी त हमें बाही लेल कहने देखियौ।' ओ कटाक्ष मे विहूसि रहल छलैक। कनेक चुप रहि कइ पुछलकै—'आइ हमइ तोर कइ?' ओकरा व्यंग्य पर खूट खोलैत ओ मोड़ल टाका ओकरा दिख बढबैत कहलकै—'ई राखइ। तोरइ बाँकी छली के हमरा लाम। दे ले अयली छी।' ओ मुड़ी निहुरा कइ कानूव रोकि रहल छल। आ लज्जित छल। मुड़ी निहुरेनहि कयलकै—'आवइ ओ होतै?'

—'कूतछ नै।' ओ गिफिकर हुँसलैक। रसिया के हाथमे लैत ओ बजलैक—'अबल दोस्त के काम करने छइ तँ कमली माय। अतल। बख बड़े चाभी सँ ई लाला खुतभी आ हमइ बाहर आबी जयबइ।'

—'सच्ची तऽ।' ओकरा जेना विश्वासो ने भेल होइक ।

—'तब नै सँ झूठ ?'

—'हमरा बड़ी डर लागी छै आरु चिन्ता' ।'

—'कोय काम नै करे के, ने चिन्ता करे के ।'

—'कपाली माय आवऽ हमरा पंदा सँ निकलना आवी भेलऽ छै । आबऽ हम छूट के रस्ता चीन्ही भेलऽ छियै । चलना आवी भेलऽ छै ।' ओ बड़ उरसाइ मे छल ।

ओ टुकुर-टुकुर बनना दिस तकीत कमली ओ माल प्युबि कऽ हुलार कयलकीक आ कमली माय के कहलकीक—'कालकऽ जाया लोरे रसोइ मे खयवहो, थिन्ना नै ।

ओ आत्मविश्वास सँ बिहूनि रहल छलीक आ कमली माय विश्वासक अतिरेक मे बलियो रहल छल आ ओकरा जे मोरो पोछि रहल छल ।

□

श्याम अंकल एहेन कियेक छथिन्ह ?

श्रीलोक गेट के बाजल आ दुआरि पर आबैत आहुति के निहारत मीनाक्षी के पुरा विश्वास भऽ गेलैक छै आनंदुक आओर किपी नहि पशाम अंकल छथि । केनाइ खोलसक ओकर अनुमान सही निकल लय । आठ-बस बिनका बेर घनवर दाढ़ी बड़ीमे, शैल चिन्त कुर्तानीजामा पहिरने, हाथ मे एकाटा साधारण अटेची आ चिप्पी पर चिप्पी साधारण पुरनका चपल के धारण केने श्याम अंकल उपस्थित छलाह । हुनकर पैरी दुबैत मीनाक्षी के बिन लगलय सभावि ओ एहि किया हेतु अपना के तैयार केलक । परन्तु ताहि नै पूर्वहि श्याम अंकल 'खुश रहू आजा' कहैत घर मे प्रवेशकऽ एक कात अटेची के ओधरजेत शोफा पर धसि गेलथिन्ह आ अंगठी मोड़ करऽ लागलथिन्ह । —'गमनी के मञ्ज देखय छियी ? पापा कतऽ गेलथुन्ह ?'—घर मे तहि ककरो दोस्र अंकलक प्रश्न पूछब बाजिव छलैन्ह ।

—'ऊ सख थोड़वे काल पहिने निकललैय पै । कतेक बाजल बलि ?' श्याम अंकल खुब जोर सँ हंसऽ लागलथिन्ह तऽ एकाएक अखिरस भेलय मीनाक्षी के—'आ श्याम अंकल के हाथ मे बड़ी कहां छैन्ह ? ओ स्वयं ई पूछि अंकल के कष्ट रहलैन्ह कहै ।' ओ चउल, सीपार पर जा कऽ बेवाल बड़ी मे तनवे देखि आएल आ श्याम अंकल सँ बाजल—'यह थपटा भरि भेल अछि हुनका वून गोदे के घेना । १-धले तक धुरि आवय जाय जेलाह ।'—'कोनो बात नैय । तो निके छेने ? घर मे सभ किछु होक-ठाक अछि ?' मीनाक्षी मूढ़ी बोला देलक, 'ठीक अछि' कहैत श्याम अंकल घरक खभ सामान पर अपन दृष्टि बीड़ावय लगलाह । अचानक भीत पर हाँसल कैलेन्डर मे बानरक फोटो देखि कऽ बाबि उठलाह—'अच्छा बेटी ! ई फोटो सोहर पापा सँ बहुत मिलय छी नै ?'—मीनाक्षी के बड़ जोरक हँसी लगलय ठीक पैह बाड पात एक दिन मम्मी सँ कहैत रहथिन्ह—'ए फोटोक सख श्याम सँ बड़ मिलय छै ।'—आहि पर मम्मी कहलकय—'हमरा तऽ अहाँ—'धुन के सभक किछु चाहि नै लगय पै । हमरा तऽ ऐ फोटो के आधा शवल श्याम दाबू सँ आ आधा अहाँ सन लागल । ऐ गण पर ओही खूब जोर सँ हंसऽ लागल छल आ ओकर पापा गंभीर भऽकऽ बड़बड़ाए लागैए रहथिन्ह—'पता नैय पढ़ाह कतऽ अछि बाइ काहिह ! एतऽ एही तऽ दु-खीन महीना भऽ गेलय ।'

ई बात सन पहिने ओ बाजलि—'पापा अहाँ के बड़ पाद करय छथिन्ह किछुवे

दिन रहिते तऽ वहाँ के खूब चर्चा होल छलै-ए । अंकल ऐ बेर वहाँ बहुत दिन पर एनी कलऽ रही एहे दिन ?

—अबाम अंकल एकटा दीर्घ वक्त लेलबिहल । हुनकर गुजमंडल पर तँ हाव ओ भीम भाव बिबीम भऽ गेलै-ए । एक्का धरि ओ अंकल कि पाबिसी तक लेल नहि पुछने रहै-ए । ओ छटाछा गेल । उठल, चाह बना अनलक । चाहक चुस्कीक संग अबाम अंकलक मुँह पर हाव धरि आवल रहै-ए—‘अरे, तोहर तऽ कमानक हाव छी ! एतेक बढ़िया चाह तऽ तोहर सम्मिगो नहि बना सकथु-ए । ओना बूझल छी बीआ ? तोहर मम्मी के चाह बनीनाथ हमहूँ जीखी ने छी । मुदा तू तऽ हमरो गुन ।’

मीनाक्षी अपन प्रसन्न मुनि चिह्नऽ लाबल । ओकर इच्छा होय अंकल सँ किछु किछु पुछी । परबब की पुछी, रहि पर ओसरा जाइत रहै । आँटीक बारे मे पूछि सकय छल मुदा हुनका देखना तऽ गुन बीति गेलय । बच्चा सब कऽ पूछि सकय छल । ओ दूनु तऽ एखन बड़ छोट-छोट हेतय । पोरकें साथ तऽ मम्मी दूनु भाव लेल स्वेटर आ मौजा बुनि के अंकल के तऽ जाय लेल देने रहै-ए तऽ अंकल रकमा पसारि देने रहबि-ए—‘हम एखन घरे नहि आ रहल छी । बाहर कलऽ-कलऽ उधरे किछ ?’ आ मम्मी कहै-ए—‘कोनो बिबटल-बू-बिबटल तऽ अछि तऽ जे अहाँ के ठेला करऽ पवत । एकरा तऽ जेबाक अछि, चाहे बेना तऽ भाव ।’—ओ ना-नुकर कइये रहल छलाह कि पाप बीसे मे टपकि बूझबि-ए—‘की जमाना आबि गेलय तँ । आज गवहो मे बिब्रोहक भावना जाबि रहल छय । दिन-राति बीआ उठवय बसा, एखन कहय है ‘कोना कलऽ-कलऽ उठाएब बोझ ?’

—‘अहाँ हिनका आओर पानि जड़ऽबिबो-ए ।’—मम्मी लमचाइत जाबि उठल-तऽ तऽ हिनका जाइये बइतै-ए, चाहे घोडा बनि कऽ तऽ जाबि आ कि गवहा बनि कऽ तऽ जाबि ।’

‘आहा-हा ! ह्व घोड़े ठीक छी । हमरा आशीष जकी गवहा तऽ नहिये बनाउ । ई बेचार गवहा तऽ अहाँक सेवा मे लगले रहैत अछि ।’—एहि पर तब गोटे हँसऽ अगलाह आ एही बीच अंकलक अइ मेहो टुटि गेलै-ए ओ दुनु ओशी भाव लेल स्वेटर तऽ जाय लेल तैयार भऽ गेलाह । मीनाक्षी के मन भेलय ओही दूनु भाव के बारे मे पूछै-ए मुदा पूछि नहि सकल । अंकल प्रश्न केलबि-ए—‘एखन तँ की कऽ रहल छल बीआ ?’

—‘पड़ल रही, परतू सँ एक्काम के अछि ।’

—‘जा ! तखन तऽ तोहर बहुत नीबसान भऽ गेली । पड़ गऽ बूझ गेहुनाति तँ पड़ आ नीक रिजल्ट आब । जो... जो उठ !’—मीनाक्षी उठि गेल ।

मीनाक्षी अपन रुम मे पड़य के खूब यत्न करय छल परबब मन पड़ाइ हेतु

स्थिरे मे होइक । रहि-रहि कऽ ओकर दिमाग मे ध्यान अंकल नाथऽ लाबलिन । ओ देखि रहल छल के बाइबल कमक खोला पर अधलेखल अंकल अछि मुनि कऽ किछु सोचि रहल छल । अछि बस छै-ए, मुदा गुनल नहि छल । जलाइ पर बड़ मेहो ककनल भऽ रहल छै-ए । ई अंकल बड़ विचित्र बीब छल । आइकालि तऽ आरो विचित्र भऽ गेल-ए अछि । हिनका सँ सँने रहै-ए कहल जा सकय तँ आने छल । मम्मी-पापा तऽ और हिनका लेल आने छल परबब पला नय आटी । हिनका कोना सम्भारत देखि-ए । छोट-छोट बच्चा आ अंकलक विचित्र स्वभाव, तँ पर तँ स्कूलक नोकरी ! ई तऽ अनि कही हुनके जे कोना सम्भारत रहल छल !—मीनाक्षी सोचि रहल छल ।

आइ मीनाक्षीक दिमाग मे अबाम अंकलक स्वभाव हिनकोर मारि रहल छल-ए । ओ चाहय छल जे जानी, अबाम अंकलक स्वभाव एहेन किबै छै-ए ? ओ सदियत एके रंगक चकारी किबै ओइने रहैत छल ? स्वाद नैत उदासी आ बिबिगी के लुत्ती बजारत जवासी, बीआपल जवासी या हारल जवासी, मिला-जुलाक बस एके तरहक हँसत उदासी ! प्रसंगवण अपन मम्मी पापाक कुवा सँ बीक बेर अबाम अंकलक उदासीक बर्णन केने अछि । ओ दुनु-कर उदासी सँ प्रसन्न जुड़ऽ चाहैत अछि । मंभीर उदासी, बड़ल दाडी, अत व्यस्त वस्य आ की-कहाँ वन बडबड़ाय सब के बीच सँ बूझ चाहैत अछि । परबब कहियो सफलता नहि सेटलैक । ज्ञान भेला छत्ता सब स्थिति मे कबाम अंकल ओकर समीप रहल छबि-ए । बोरा में पैत कनहा पर वसवस तँ तऽ कऽ बिस्सा सुभय के गण्य हो आ साहिल चढ़य के, फुकना कोनय के बात रहौ या चटपटी बर्क, सब लय आयः सभटा स्थिति मे ओ हुनके खोजने अछि । हँ, एहँर दू-तीन वर्ष तँ ओकरा बूझ रहल छै-ए अबाम अंकल ओकरा लेल अनबिहार सन भेल जा रहल छल । ओकर मन उबिसा भेलैक । उठल, पैस बुलिहवा पजारि, चाह बनातऽ लागल ।

—‘दोवारा चाह अनलें, लऽ हमहूँ सँह चाहैत रही । तोहर पड़ाइ सँ तऽ हज्जा भेले हेतो ? की करबीही, हमरा तँ सब के सदबिब हज्जा सहुऽ पड़लै-ए, जन्म लेते माय मरि गेल । लगले बाबू जी मे हो चलि गेलाह ! तऽ मे हज्जा, खीन्नु सहोवर भाव के पैतक सम्पत्ति मे हमरा नामे तेहो बखवा लगबऽ पड़लै-ए तऽ सब की मे हज्जा । पड़ाइ मे एम० एम०-की बड़ कलात घेने कोथ कलाक के नहि देखक हज्जा । मोटा-मोटी पैह बूझ जे हमरा लगमिते काह दिस हज्जा-हज्जा भेल । तँ तोहर पड़ाइ मे हज्जा भेलो तऽ कोनो बात नै । जो जाय पड़ गऽ । नीक सँ पढ़िहँ । परतू सँ नै परीआ छी ?’ हँ मे मुड़ी डोलबैत मीनाक्षी चलि गेल ।

कतबो प्रयास करैए मीनाक्षी के अपन पढ़ाव मे ध्यान सदाची परबब ओकर मन अबाम अंकल दिखि तँ दोसर दिस बुरखे तँ करय । रहि-रहि कऽ बस एके टा प्रश्न नाबि

उठे के स्वाम अंकल एहेन किई छविन्ह ?' गुन-गुन में लापसे छल एतने में श्याम अंकल ओकरा लग उतरिबल भऽ कहलखिन्ह—“की पड़्य छै बीआ ? हमरा तऽ मने नहि लागैए । एलबम कतऽ छी ? जा-कनी ओकरे उलटा भऽ मने बहारी ।”

मीनाक्षी हड़बड़ा गेल, ओकरा ठीक सँ ध्यान नहि छै जे एलबम कतऽ राखल छै । ओकरा मम्मी ओरिवा कऽ राखने रहल छै । ओ ताकऽ लागल-लाख पर रोक पर, अटली, पेटी, सभटा ताकल। सुन केही नका भेटल। एतने में अंकल पुछलखिन्ह—“बीआ कोनो तबका कैसेट कऽ नैप एली ? यदि नञ त कनी वएह कैसेट तना दे । मन बड़ बेचैत अछि । सुनऽ चाहैत छी ।”

वएह कैसेट माने बेगम अख्तर के पूर्वी, फेर रेखमा के 'हाम रम्बा दिख नहीं लगता' । पूरा बातावरण जेना कागऽ लागल हो । ओ बोहरा सेहरा कऽ कैसेट गुनऽ लगताह । ई हुमकर पुरान स्वभाव । फेर बीजे ने पुछि बैसलाह—“की बीआ एलबम एखन तक नहि भेटली ?”

—“खोजि रहल छी अबास ।” कहैत ओ आलमारी खोजलक । बेखब में मम्मी अपन कपड़ा के बीच में तुका भऽ एलबम रखने अछि ओकरा निकालि ओ अंकल के के देखल आ बदला में हुका सँ भरि-भरि छिट्टा आशीर्वाद गुन-गुन जी, 'हमरो औरवा कऽ के जी' लेलक । संगहि हुनकर आवेज जे 'ओ आब पड़ गऽ परीक्षा छी तोहर । खुब मन लगाकऽ पढ़क जाही ।’

श्याम अंकल भाव-विभोर भऽ सोका पर बैसि तन्मयतापूर्वक एलबम उधारिकऽ फोटो देखऽ लगलाह । ओहूर मीनाक्षी के मन पड़ाय पर सँ छविआ लेलक । ओ अंकल खर आविकऽ किछु गप्प करऽ चाहलक । झाड़ंग खम में अजिने देखैवै अंकल सोका पर चित्त भेल पड़ल अलबम के उधारने छाती पर राखि कऽ सुति गेल छल । हुनकर दून छाथि सँ तोरक टपार बहल छैन्ह जे 'आब गुआ गेल छनि । स्थिति देखि ओकरा बड़ बलमंश भेल त ओ सोखऽ लागल परखल ओकरा कोनी पाहू नहि भेटलैक । ओ अंकल के छाती पर सँ एलबम उठा, ओरिवाकऽ अलमारी में राखि देलक । मम्मी-पप्पा के बांछ में देरी भऽ रहल छलैक । ओ सुलभाक प्रयास करऽ लागल । मुदा श्याम अंकलक ई अजीब दंग सँ सुति रहलक स्थिति आ आखि सँ बहल तोरक टपार ओकर मनोदशा के शकशोरि देलकैक । ओ बेस गंभीर भऽ गेल ।

घर में अजिने जखन हून्, मोटय श्याम के देखलन्हि तऽ दून के मुँह सँ एक संघ बहरेलक—“ई कखन एलैब ?”—मीनाक्षी किछु जवाब दय ताहि सँ पूर्वहि मम्मी

अंकलक कभार छबिका देखलक जे कहीं बोघार तऽ गैब आनि गेलन्हि । बाहिर एतेक जल्दी सुति रहलक प्रयोजन की ? दून मोटय अंकलक विषय में सोच-विचार करऽ लगलाह । ऐ मुनछुन में रह्ये करैब जे भोजन लेस हुनका उठबैन्ह की नहि, ताबे में मीनाक्षी बाबि डरल—“कहय छलाह कतेक दिन सँ मुतलहुँ पै नय, एतऽ नींद आबि रहल अछि-कतेक कठिन स तऽ बुढ़ा सलाहस खुलिबैन्ह पै ।”

भरि राखि मीनाक्षी के नींद नहि भेलैक । कष्टमंछी में अजिने श्याम अंकलक स्वभाव अनुवाह रहैक । बड़की टा रतत जेना तेना बीतल, भोर भेल । मुदा आहि, रे, बा ! झाड़ंग खम एना खाती रहल जेना राति में एतऽ कोप रह्ये ने होय । ओका ई गप्प अछि तरक लोकक लेख कोनो तबीन नहि रहैक तथापि मीनाक्षी के आइ बड़ कोनादम भगलै । ओ आलमारी में एलबम निकालि ओकर बिचला पन्ना में साटल मोस्टवाइ साइकल फोटो ओकरा राति में श्याम अंकल बिहारि-बिहारिभऽ छाती पर राखि सुति रहल छलखिन्ह जे अपन मम्मी के देखबैत हुनका सँ पुछलक—“मम्मी ई के छविन्ह ?”

—“ई भोरि-कोरि एलबम देखीनाम तोरा की कुरेकी ?”

—“तो ब्रता ने मम्मी । ई फितकर फोटो छियै ?”

—“तोहर रमा पीलीक—“किई ?”—...पुछैत मम्मी गंभीर भऽ गेलखिन्ह ।

—“हम काहवा दवाबैवै सक ! एखन कतऽ रह्य दे ?”

—“की भरि गेलखुन्ह बेटी !” कहैत लगभग कालऽ लगलखिन्ह मम्मी ।

—“कहिया भरि गेल ?”

—“तोहर जन्मो सँ पहिने ।”—एहि घेर तऽ हिचुकी बहार भऽ उठल मम्मी के । मीनाक्षी एहि पर बिनु अलग बेने प्रश्न करैत रहल ।

—“मम्मी तोरा बूझल छी श्याम अंकल एहेन किई छविन्ह ?”—मम्मीक मुँह पर जेना खूब गरिपर लागल लागल हो । ओ हिचुकि-हिचुकि कऽ हथो हकारे कागऽ लगलखिन्ह । मीनाक्षी एकटा चुड़ रहस्य में इति श्याम अंकलक उकियाएल स्वभाव के जोड़बाक प्रयास करऽ लागल । श्याम अंकल की रहल हेताह । ई जोख लागल । बाहिर बिनु कहने कऽ गेल हेताह अंकल ?—मीनाक्षी प्रत्येक लोकक भऽ अलवार पड़ैत पापा चुप्प रहि गेलखिन्ह, मम्मी सेहो शांत । तखने ओकरा अकस्मात् फाफुवकी में मम्मी के कहैत पापा के रतुका नय मन पड़ल । अंतराज्य अछि, पापा नय किबै ।—ओ शरकिकऽ पापा लग आएल आ हुनका सँ पुछलक—“पापा ! अंतराज्य माने ?”—पापा तँक उठलखिन्ह आ अलवार के तेवी सँ पड़बाक प्रयास

करऽ लगलचिन्ह । ओ सम्मी लग गेलि, मम्मी ओकरा बुझलचिन्ह—“जि लोकक लेल छिदिकऽ काज करै ये माने तुम्हा कऽ ।”

—“काज बोरा कऽ किंवऽ कएल गय छै ? जे बराज काज होय तऽ एकटा...”

—“ते कीको काज कतेक बेर बोरा कऽ करऽ पड़ल छै जे सरकार कहीं गइल नहि बऽ दिशय ।”

बोसर दितुका बखवारक मुकुषक पर क्याम, बंजलक एवढा असाध्य फोटी आ भिरभरातीक समाचार छल छल । ओ एकटा गुप्त भीतिमक संघर्ष मे रहैत, मोहल्लाक एकटा गुप्त इलाका मे चारि बजे गोरि पकड़ाएल छलाह ।

समाचार पढ़ि पावा अखबार मम्मी दिस बड़ा दितखिन्ह । मम्मी अवाक ! बीनाभी सेहो खबरि पढ़लक । ओ बेसीन भा उठल । ओकर साथ मे कौकी प्रपन कहूँकिमा काँट जगलैक । तो सोचऽ लागल आइ बखर अपन इतिहासक प्रोफेसर से छुटल—“मैंतम नौकी काज लोक पौरऽकऽ किंवऽ करै ये । आ सरकार ओकरा...”

प्रपनक भर के उठोने बीनाभीक डेग कबिब दिस बड़ि रहल छलैक ।

बच्चे सभटा के गहि, हुनका परीकी सेहो ई प्रस्ताव तेहइ तब आ बाकसक लगलनि जे ओ लोकनि चीकि उठलीह ।

—“की बच्चे अरुत राम घूम जायब बाबू भी ? तोसर बेटाके केना चिन्ताने नहि भऽ रहल छलैक । ओ गिनके बड़ मनोरम के देखि रहल छल जेना :—“हूँ सत्त, तोरा बिरकास नहि होइत छीक ? ओ बड़ दुनारऽ बेटाके देखैत बगलाह । कोना एहि बीच बेटाक मन जानी बच्चा आ बानी सम्भल अछि उरमुकसमे गलेन बंकर बाबूक मुँह पर गइल छलैक । गंगेश बाबू ई अनुभवो कऽ रहल छलाह । जखन ओ अपन बेटाक अपनेक उत्तर दऽ चुकल छलाह तखन हुनका ई बात बड़ अथलाह समझनि जे अखिर सब गोंडा के हुनकर ई प्रस्ताव एना विचित्र किएक लागि रहल छैक । हिनका सभके जिम्माव किएक नहि भऽ रहल छनि । हुनकर मन भीतरसे खन भरि लेल खोसा गेलनि ।

—“की बात छैक पाईसी ? ओ बतौ दिस तबैत पुछलनि ।

—“तहि, बात की रहलैक । मुदा की सत्त चसबैक ? बानी पुछलनि ।

—“विचित्र बात अछि । किएक पुछैत छी ? जखन कहलहुँ तै ईसी किएक बुझि पड़ैत अछि ? ओ अपन खोसाहटि के बदैत बजलाह ।

—“कतऽ बजलैक ? पत्नी कहे बिहुँसैत पुछलनि । ओ सोचय लगलाह । ताबत बच्चा सभक उत्तराह गलैत पैसा जकाँ एकाएक दिवर कऽ गेल । ओ राम दम छाने ओहि परिणामक आशंका मे भय-बापके देखैत रहम के तम एतहि आबि कऽ कप कटि जाइत छैक आ फेर सभ किछु कटु भऽ जाइत छैक । ओकर बाबो घरमे सभ धँडो चुप रहैत अछि । मुली, मुकेश अपन-अपन किताब कानी लऽ कऽ एक दिस बैसि जाइत अछि । बड़का धुगू बच्चा सेहो घरक कोनो कोने मे अरुत भऽ जाइत अछि । पत्नी अपन सुपना-ओराक तारिकेर तेज बला बिम्बा आ पुरान कपड़ा बिखारैत छनि । फेर कोनो फाटक रामू कऽ वा डील भऽ गेल बटनके सजगतीसे टाँक मे बंदत भऽ जाइत छनि । अरुतो अपेक्ष बाबू अपन बेबीने मोचरल-लोचरल मिशरिदक बिम्बा तबैत बहार करैत छनि वा फेर फाकरो बीयासवाद भऽ अजवाक गेल कहि, ‘सिकरैत बरकास किता कपड़ा बदलमे बैति जाइत छनि ।

बच्चा सभ एहि आशंका मे स्तब्ध छल । गंगेश बाबू एक-एक बच्चाक मुँह विहारैत जेना नकुनि वा यहुती दिनक बड़ एतक देखि आ मनस सँ विद्रुत बजलाह—“तोरा सभ के नहि जवका छीक की । पैवार किएक नहि होइत कह कटाकट । देखि भऽ जवतीक तै सभ बेसद । हुनका बाबू-ससलतो नहि भेल छल कि सभ बच्चा ओही अँदोलमे बुझैत-झूँत छिरिया गेल जेना सत्तमे अपन कबाइत देखीला पर मुत्तर मुत्तर पोंमुआ जानवर ।

समीप बावू अक्षय अपने बच्चा समक ई उल्लास देखलनि तँ मनमन चीजि
लेवाह। हुनकर सनक एहि प्रतिक्रियाक सब सूखस लक्षण हुनक आँखि-कोमन उमरि
मेलनि जकरा पत्नी पार्वती बुझि बेवस्थित आ लग जाय हुनक बाँहिए एकट्ठि बनतीह—
'अहाँ एवा किएक भऽ नेवहुँ । कोन जरूरत छन चूमऽ जयबाक । हाथमे पाइ
अतिरिक्त तँ देखल जयतैक, जेना एतेक दिन नहि, तँ किछु दिन आरो नहि घुमिगहुँ तँ
की भऽ जयतैक । ओहना एकर दुनूक परीक्षा होयईक ।'

'को भैरवक आइए घुमि ली तँ ? भला कहू कतेक दिनसँ कहने छिएक आ एकटा
ई छोटा-छिन कार्यक्रम गहि बना सकलहुँ । हम एहि कहरमे अपन सम्बन्धीओ समसँ
मिट करल नहि लऽ जा सकलईक । बच्चो सब आबिर चाहैत होयतैक जे एहि घरसँ
तकली । कतहु घुनी-किरी । ते हमार बड़ जरूरी बुझायल । चाहे जे होअय । आर एकरा
कम के लऽ कऽ बहरपयैक अवस्य ।'

'कऽ जयतैक से तँ निश्चय होअवाक नाही ।' पतिक मध्यस्थी आकारिमिक भूख
बिम्बित पत्नी समक्षित भऽ कऽ मुछलबिन । एहिबेर पति केर सोतरयल । कोनो खास
स्थानक मस भहि कहि सकलधिय ।

ओम्हर उरताह आ खुनीसँ कुदैत बच्चा सब भीतर जाकऽ तैयारी करऽ
साथि गेल आ जहिना माय-बापक ई छोटा सन विचार बिमर्श कानसे पड़लैक तँ सभ
ठमकि गेल । छोड़नी मुनी जे पूछि रहल छल—'दीदी हम कोन फाक पहिरल, ओ
धुप जेलि छाड़ि छल, किएक तँ ओही काल दीदी छोड़ पर आंगूर दऽ चुप रहबाक
द्वारा कमलक । नय मुनऽ दिअ । मुनक कपड़ाक गुंन पयरसे पहिरि लेने छल मुदा
ओहिसे एकराक पीला भायब छलैक । पेट-बाई जे जरीर पर छल ओएह पहिरने ।
दोसर ओहिसे भीक छलैक नहि ।

दीदी एहि परिस्थिति सभसे नीक जकाँ जतैत छलैक ते अजांकित भऽ गेलि जे
कोनो आचरण नहि छै ओ समके तैयार कऽ दिअय आ माय-बापक एहि विचार-बिमर्शक
परिणाम ई बहराक जे 'आइ आब छोड़ू केर कहियो चलब ।'

एहि आकारिमिक वाझा तँ मुनी पानऽ कानऽ पर भऽ गेलि । किएक तँ ओकरो
हुसा गेलैक जे केर आइ घुमऽ जायब पार नहि लागल । ओम्हर हुनका समक सन कानमे
पड़ि रहल छलैक । मुनी अधिकतर सोच पर बाल गुलम ओघने कचकल रहल छल
जे की कोनो जे कोनो कड़ेइ । तेहन छोट कऽ दैत छैक जे समझ बनल बनाओल कार्यक्रम
विगड़ि जाइत छल । परन्तु लखने किछु ऊँच स्तरमे पिताक चेतनी कानसे पड़ल ।

'की जेलऽ ?' तोरा सन जहनी तैयारी किएक नहि भऽ रहल छहुँ ?' समक मुँई
मुनऽ बसति गेल । केर तेजी सँ सन तैयार होअमे साथि गेल । मुनी केर अपन समझ
दीहरीसकैक । दीदी किछु असमंजसमे पड़ि गेलि । केर बुझलैक—'को हेतै ? ओह

पहिरि ले । खूब नीक लवैत छी ।' ओ ओकरा आभाँ जे फाक बड़ीलसैक से खूब पुरान
कऽ गेल छलैक । फलेक दोसर ओकर कमीस उमरि गेल छलैक । दोसर जे ओएह पहिरि
कऽ चरोमे काज चलैत छल आ बाहरो जायब ? जे ओकर बाल सन के पस्ति नहि
पड़ैत छलैक । ओ बोझैक नाकुर, मुकुर कपलक मुदा दीदीक ई बुझोला पर जे 'कपड़ा
लताते की होइत छैक, कपड़ा नीक नहि रहलातँ, मनुष्य नीक नहि रहि जाइत अछि
की ? मनुष्य पोसाकसँ बोझैक चोहल जाइत छैक ।' दीदी माँ सँ एहि सनके 'कमीसँ मुनैत
आ भासैत आवि रहल छल । जे ओ जहिनी के बुझा-मुझा के कह्य-लागल । ती तँ अपने
तेहन मुन्दरि छै जे तोरा नीक कपड़ा पहिरबाक आवश्यकता भहि । नीक कपड़ा तँ
ओकरा चाहिएक जे देशवामे नकमिचनी होअय ।' ओ बुझा-मुझा के ओकरा फाक पहिरा
देलकैक । मुदा मुनीक ओ प्रकृतित विद्वत् क्षमायलै रहि गेलैक ।

'—येह मुनी तो यवि कपड़ा लऽ कऽ दुखी हेतै तँ बुझि की ! केर ओएह हेतो
जँ हसन होइत छैक । बाबूजी दुखी भऽ कऽ घुमऽ जायब छोड़ि देखुन । दीदी बुझैक
उमे विशीलसैक—देख हमार कुली किछु छोट अछि । बिबुलका भीमनि जोति देवऽ
पड़लै-ए । अछलाह लवैत छै । तँ की भैरवक कपड़ा तँ छैक । हम एएह पहिरिके
बहरावब । मुकेशक कपड़ाक तँ इएह हाल छैक । मनुक कपड़ाक सेहो इएह हाल छैक,
कपड़ा तँ ही होइत छैक । कपड़ा तँ ओह मनुष्य बड़का भऽ जाइत छैक वा नीक भऽ
जाइत छैक ।'

दीदी वयसक हिसाबसँ किछु अधिक तैयार आ होअरसन भाषामे ओकरा
समके बुझा रहल छलैक । अख मुनीक मुवाकूति देखलातँ शाफ बता चलि रहल
छलैक जे बाबू ओ वमसँ जयबा लेल तैयार भऽ रहल अछि । ताबज, एकटा जुतक
फिशा कसने दोसर खूबसे छोड़ने मुकेश बोझैक कऽ दीदीकें प्रोत्साहन पछलकैक—'हम
सन जाइयो नहि जयवैक दीदी ?'—'के कहलसैक नहि जयवैक ? तँ तैयार भैतै ? देख
तँ केन नहि फोरलै । सकरि ले ।' ओ जहासल भऽ कऽ चलि गेल । मनु आ दीदी सभ
अपन-अपन पुरनका कपड़ा मे सँ बीछिकऽ पहिरि जुलूसक रूपमे विहँसित माय लग आयल
ओकरा समके देखि सायक-सन प्रसन्न होअवाक बलामे भीतरसँ हँसि गेलैक । ई हुनक
बोझैक कहि देलकनि । सड़नी वेटी आँचि पड़ब जाति गेल छैक ।

माय रोज पहिरऽ बसा लाइतेसँ भीक बिछवामे फटिवाक अनुभव करैत
छलैक । बड़की वेटी ताकिने कहलकै—'इएह पहिरि लवैत छै' माँ ! आर कोनो दोसर
काजक नहि छैक ।' माय बिना किछु सोचने चाड़ी हाथने लेलक आ पहिरऽ लागल ।
वेटी हुनकासँ आँचि नहि मिलौलक ।

ओहि घरमे एहिँ किछु भिलट पहिने तँसँ खुशी जेना टाङ्गमे मचरेर पड़ि
गैवाक कान्ते एक कोनमे बैसल कहि कऽ लामब ।

दू कोठनीक एहि घरमे जेना कम चटका गप्प चप्पसो जुटल रहल । तौओ किछु ओरोसो बेमार बेसीनी बेत पित्त बजलाह छे—'नरैण जे तो' सब चोपटु करवै । कतेक बेरी ललैत छीक देवार होबा मे ।'

एहि बेसीनी घर सब कतिनर भऽ गेल । मी बड़की बेटीसँ पुछलथिन—'केन छीक छै ?' ओ साधारण रूपेँ अपने बनगर लम्बा केवक जुड़ी खपेटलेनि आ चप्पल पहिरि तैयार भऽ गेलीह । अपना ओहि कालमे तहि भेटलैक । वना तहि बेत बच्चा राखि देखलैक अकरा तकवाने बेटी लागि जायत । ओ अपन श्रेष्ठिकेँ अपना बना गेलनि । ओ अधिक काल, बिना अपनाकेँ एहिना काज चला लैत छथि ।

दोसर कोठनीमे एतेक बाबू किछु सोचमे बैसल छलहु । बेसीनी दऽ कऽ बैसि गेल छलाह । सभहुक नगरक शहर मुनि छलाहिन भऽ डाड भऽ गेलहु ।

हुनका देखितहि सन हुनकमे भऽ गेल ।—'ई की तो' सब एखनो धरि तैयार नहि भेल छै ?'

—'आजकी, सब तैयार छैक, चल् ।' पत्नी हुनक आश्चर्यक अर्थ बुझैत कहलथिन । मुदा गणेश बाबूकेँ ठकनड़ी लागि गेलनि । सभ बच्चाकेँ मूडीसँ पदर धरि निहारलेनि आ फेर पत्नीकेँ, बा चुपे डाड खलाह । पत्नी एहि दृष्टि सँ परिचित छलीह । नवेल बाबूक मनक ई हाहाकार ओ कतेको धरि एकान्तमे मुनि चुकल छलीह बच्चाकेँ चुतल खलापर ।

—'की बात छैक ? अब कही अपने देरी कऽ रहल छी ।' पार्वती बजलीह आ बेटीकेँ बारिद देलनि जे ओ केबाबुमे ताला लगावब ।

गणेश बाबूक ओखि जेना बेबेनीसँ सब बोक दर दीह रहल छलनि—'बेटाक थपल घर नजरि दऽ कऽ बजलाह—'ई एही अवस्थामे जायत ?' हुनक स्वर दृष्ट आ परत छल । पत्नी देखलथिन आ अत्यंत हलचल गेलीह । बजलीह—'बी कर ई छोड़ा छैके चितिय । खूब जोर-जोरसँ घनिह कऽ फीताकेँ तोड़ि देखक आ एकरा फेकिमो देखक कतहु आ जाय एखन... ?' पत्नी बिचकलसँ भरि गेलीह । फेर एकाएक बजलीह—'मुन्नी कमी तो' अपने जूताने देख तँ, जूता तँ बेकार छीक । भरिसक फीता होइ ।' आर संयोग-वश जे फीता निकलल ते फाँसक फीता छल । फेर फीता लगाओल गेल ।

मुदा गणेश बाबूक न्हि एतेक शिथिल छल जे ललैत छल जेना ओ बुझि-ताइ होथि । ओ एक विस्मयजन मंगलनि आ बैसि गेलहु । बेटी घर बाबू करवाक बरवाने हुनका जल आनि कऽ देलथिन । ओ गट-गट कऽ पीबि गेलहु आ निरीह होसँ पत्नीकेँ देखलनि । पत्नी हुनक नजरिकेँ चिन्हलथिन । आ फेर ओ दोसर दिश तकव लगलीह ।

—'कतेक दयनीय ललैत छै सभ किछु नै ?' ओ पत्नीकेँ पुछलथिन ।

—'कतेक दयनीय ललैत छैक ?'

—'दीक ते छैक । चल् उठ । मुदा आबो अही कहि गेहि रहल छी जे कबवाक कतऽ अछि । बीच बाडने जा कऽ तँ निश्चित कहि करव ?' पत्नी बालावरणकेँ हलनुक करवाक प्रयासमे कहलथिन ।

—'हमर तँ बीत बैस गेल पार्वती । भला बहू, एहि हुँस मे हिनका सभकेँ जऽ कऽ जाहि घर मे जायत ते की सोचलैक ।'

—'अहाँ तँ अनेर गप्पमे ओजरा गेली । हम जे जायत तँ अतकर घर छोड़ि जायत ? जलज जायत ते अपने सम्बन्धी अब जायत । जे हमर सम्बन्धी छथि ते हमर हासति अवश्य बुझैत होयताह । एहन बहूनीमे एतेक कल दरमाहा, एही गइमे तँ सभ किछु करव पड़ैत अछि, बच्चा सभक पढ़ाइ लिखाइ, मकान भाड़ा मभरा एही दर-माहासँ । आ दोसर जे कपड़ा लताक कोनो अंत छैक । कलसो नीक पहिरन लोक मुदा ओहूँ नीक आ बाकी कपड़ा भेटि जाइत छैक वषारमे ।'

—'सारा छीक छैक । परन्तु जीवनमे, समाजमे रहि कऽ एहि गप्पकेँ छोड़ि नहि सकैत छी । कोन डेकान हमरा आ हमर बच्चा सभकेँ एहि हुँसमे देखि कऽ हमर सम्बन्धीसोकेँ हिनताइ बुझाइन । तखन उखटै एकरा समझा ।' ओ बजलीह । —'बाह, सम्बन्धी कपड़ा तँ पोछके चिन्हल जाइत छैक । अहाँ आब ई तब छोड़, उठ ।'

मुदा ओ नहि छलहु । बच्चा सभ ओहिना एहि तप सँ आर्तभित भऽ गेल छल । कोनो आश्वासन नहि जे एहि ठाम अछि कऽ कबवाक काइकम रू भऽ जाय । किएक तँ एहन होयत कोनो नव तप नहि थिक ते ओ सभ बाहर निकलि कऽ परिणामक प्रतीक्षा करव लागल ।

—'हिनका सभकेँ एहि हासत मे देखि मोग होइत अछि जे अपने मुँह अपने सोचि ली । हम अही सोचनि केँ नीक सन कपड़ा तक नहि दऽ सकैत छी । हम सभ नयुव सन कपड़ा पहिर कऽ निश्चि नहि सकैत छी ।' ओ उत्तेजित होइत बजलाह ।

पत्नी बुझलथिन—'बच्चा सभ की सोचलैक ? उठ चल् । एतेक छमाहकेँ बच्चा सभ तैयार भेल अछि । नहि चेतासँ एकर सभक मन हुँस भऽ जयलैक । उठ ।'

मनेत बाबू लगभग मने मन निश्चय कऽ चुकल छलाह जे एहि बचामे ओ हुनका नोकनिकेँ बाहर लऽ जयवाक गप्प छोड़ि दैथि । मुदा ओहि क्षण हुनका ई मनमे अवलनि जे एहि तरहेँ कोनो नै कोनो सम्बन्धक कारणे ओ कतेको बेर बच्चा सभकेँ तैयार करवाकऽ फेर बाहर घुमि लेल जयवाक शर्वरुम रोकि देने छलनि । बच्चा सभ तँ जेना एहि गप्पक लेल अजयत भऽ गेल अछि । ओकरा सभकेँ आश्चर्य होइत छैक पूरा जयवाक गप्पसँ । ई गप्प छीकसँ बुझैत छैक । एक बेर तँ ओ अपने

कानेतें सुनलखिन । बच्चा सब धननामे गन करैत छलनि जे बाबू जीक घुस-लस बसबाक कार्यक्रम अछिन् भऽ जाय तयने छुम् । कहैत तँ ओ बलोक बेर छलनि ।

मुनि कऽ हुनका लायल नहि दया अवलनि । ताहि द्वारे आइ तँ जेना होयत' बच्चा सबकेँ पुनर्परीक जहार । बहुरीमे बच्चा सब आजा आ निराशमे उबैत दुरैत प्रतीक्षा कऽ रहल छल । मुदा ई लोकनि एखनि धरि बहुराजल नहि छलाह । एते करैत छलाह । आब बच्चा सब लौका रहल छलनि ।

तखन आ कऽ ई लोकनि बहुराजलाह । घरमे लाजा लगाओल गेल । पार्वती पुर्व साधनादीकेँ ध्यानमे राखि पुछलखिन 'पाणि भरि कऽ राखल अछि की नहि ? एहन ते हो जे औतेक रातिकेँ घूरी आ जानिए नदरल । एहि अलक कोनो भरल नहि ।'

—'समेटा देनि केतिबैक । धर्तन बासन धोल-धामल छैक । आबि कऽ कोनो तरबुत नहि करप पड़थीक ।' बच्ची बाजलि ।

ओ लोकनि धीरे-धीरे सबक पर बइलाह । बेडा अपन पिताक नामा हाथ आ छोड़ि रहित्ता हाथ धपने खुलीसँ चिचिआय लागल । पाछु-पाछु पर्येती ओ दुनू टा बइका बच्चा ।

—'किछु सोचलहुँ । काय जमबाक अछि ?' पर्येती अपन पतिसेँ पुछलनि ।

—'बलू बस स्टैण्डपर बिसरि गेल ।' ओ बजलाह तँ बइकी बेटी आखि बाबि कऽ अपन मायकेँ देखलक आ पिताक स्वभाव पर धिड़ैलनि । पत्नी तेहो चिड़ैलीही ।

ओ लोकनि पाँच मिण्ट चललाक बाद बलू स्टैण्ड पहुँचलाह । कोनो बात नहि छलैक । एन्टा अन्नक अन्नवाक समय भऽ गेल छलैक 'बुनहरिआक समय । पमीक नीसाम । डमससँ भरल । ओठ माछो नहि छलैक ! कोनो छौह नहि छलैक ते कोनो दोकान आदिक छाहुने भऽ कऽ ओ लोकनि आर ओक सभक संग, प्रतीक्षा करप लगलाह ।

—'तोषैत छी बइसँ छोटी बिसरौहुरा चलल जाय रामेश्वर भाइ ओतऽ । बहुत दिनसेँ नहि मेवहुँ अछि । भेटल छलाह तँ उपरान दैत छलाह । नृकेशकेँ तँ ओ देखलहुँ नहि छलनि ।' एकाएक गणेश बजलहुँ तँ पार्वती मेहो उत्साहित भऽ गेलीह ।

—'ई अइ नीक स्वभाव छल । बहिनो बाइ बइ स्नेही स्वभावक छलनि । नीक रहत ।'

आर तखन फेर सब बस अवज्ञा प्रतीक्षा करय लागल । लक्ष्मण बीस मिण्टक बाद बस अवलैक आ सब बच्चा बइ उत्साहसँ ओहिपर सवार भऽ गेल । सबसँ पाछु पति पत्नी । बीइ थइ कम चलैक । टिकट कटौलाक बाद कन्डक्टर बस खोलबाक गेल कहलकैक । ओ धीरे-धीरे सगरब शुरू भेल तखने लोक सब भक्ति कऽ पीदान पर लटकल लागल । देख कऽ बच्चा सबकेँ अहूमे बलन्य अवैत छलैक ।

ओ बस कतेको स्थान पर रकौत आखिर बिसरौहुरा पहुँचल । ओ लोकनि उत्तरि रामेश्वर भीमाक धर बिहल बलि पड़लाह । ओ जाइत छलाह बइ उत्साहमे, तँओ लगेत

छलैक जेना जेनमे उत्साह नहि होयत । उत्साह जेना तेरा रेल होयत । फेर कतेक-किरैत दस मिण्टक बाद ओ सब बंगला घुमा घरमे पहुँचलाह । खूब खूबल जगह छलैक । बइ पैघ हाता । पछिम लोहानी पुरक ओकरा समझक अपन दम पड़े गला गली सन नहि ।

रामेश्वर जेना गणेश बाबूक निसिरीत भाइ छलनि । बिहार सरकारमे कोनो अफसर छलनि । गेट लक्ष पहुँच कऽ अखन ई कार्यता स्कूल तँ पोछे कान जेना भीतर जमबाक साहुने नहि होइत छलैक । तँओ ओ लोकनि धीरे-धीरे अहातामे जा कऽ बरणा पर पहुँचलाह । ओर कपलखिन । एकटा चपरासी तन आदमी आवल । ओ सबकेँ एंडोसँ सूची धरि देखैत पुछलकनि—'की अछि ? साहेब घर पर नहि भेट करैत छलनि ।'

—'जनेत छी । आ कऽ कहन गणेश शंकर आगत छलि ।' ओ किछु रोपसँ कहल-खिन । ओ ओ धूमि गेल । लक्ष्मण दु-तीन मिण्टक बाद एकटा सज्जन बहुराजलाह । थुडू सन बइ-भस् । बज्जा सन नावत डाइ छल आ अगुता रहल छल । पार्वती माथ पर औचर घऽ कऽ एक दिग डाइ भऽ गेलीह । ओ साहेब जखन अवजलाह तँ गणेश बाबू प्रणाम कइलखिन । बच्चा सब मेहो प्रणाम कयलकनि । साहेब जेना लपोकसँ सिनैत बजलहुँ—'ओ ! गणेश एहुर कोनो अदनाइ भेलऽ ? काय ?' आ भीतर मुड़ि गेलाह । हुनका पाछु-पाछु बच्चा समेत इहो सब भीतर गेलाह एकटा भव्य हाइ'स कमरे हुनका बैसा कऽ ओ आरी भीतर चलि गेलाह ।

नहि जानि किधेर गणेश शंकरक सारिकारकेँ बुलाय अवलनि जे कि एक अवललाह ? एतऽ सब गोटाक आखि साहेबक शयनशुल्केँ देखने छल आ किछु नीक नहि लागल छलैक । बच्चा सब जेना बइ असुविधाक अनुभव कऽ रहल छल । ओ स्वयं अपन संदा गपरा आ चूरी समेत ओहि सज्जन—सजाओल हाइ'स कमरे जमबासँ बचल रहल छलाह, बच्चा सब तँ आर धनानका रहल छलैक ।

—'बाबू जी हम सब किनका कोतऽ लायल छलनि ?' के छलनि ई ? मुनेक 'अचानक पुछलकनि अपन पितासँ बइ धीरेसँ पुनर्दुसाह । मुँहसँ बुझलल छल जेना ओकरा बिस्वास नहि भऽ रहल छलैक । ओ कोठनीमे जाककासँ गनैत छल ।

—'ककल ? मुनी धीरेसँ जेना अनिश्वास करैत पुछलकैक—'हम सब प्रणाम कयलखनि तँ कतिको नहि कहलनि नोके रह ? पिता बेटीक भाकार हाथ केरैत बजलाह—'कोनो बात नहि ।'

—'बाबू जी कखन बजल एतयसँ ?' बइकी बेटी अगुताइत पुछलकनि तँ पिता एकाएक चिन्तित भऽ गेलाह आ बजलाह—'एखने बजैत छी ।'

तखने साहेब फेर हाइ'स कमरे अवजलाह आ कनी अलमंगल देखबैत बजलाह—

बंगलमे टी० बी० पर बड़ नीक ओझाम का रहल छै, मे सभ ओकरे घेरने बैसल अछि । ओ बिना मकोरके बैसल कहि गेलाह । 'ताहि परतै एतेक मोर सभ आबि गेल अछि अइस पड़लक । बैसबाक जगह मेही नहि बचल छैक नहि तँ अहँ लोकनि ओतय चलि कऽ बैसलौ ।'

—'की नहि भैया, एखन हमरा सभ चलि गेल छी । एखर बाबूक छली । बच्चा सभकेँ नेहो बहुत दिगस कऽने रहियेक । ओकर मोरक कहि भेटैत छल । आइ मोरक भेटल से घुमऽ कऽ निकललौ ।'

—'एखर आबो तँ केर आबक कहियो ।' ओ बजलाह ।

मनेज बाबू श्रमार्थ कयलनि । बच्चो सभ बिन मोने प्रणाम कयलक । अहतामे बहुत रात हुनक जाग छलैक । ओ पूर देसि का बुत छोड़बाक सोत बड़ खुशी भेल छलैक । नौवा देख छल । मुदा जवना काक 'पुरखोकेँ' माहि देखलक ओ सभ । जदीसँ निचलि का ओ सभ सड़क पर अकलाह । आ चलाय गेलाह ।

तखने मनेज बाबूक मानदे आवाज पड़लनि मुकेश बीबीसँ पुछि रहल छलैक—

—'दयनीय माने की होइत छैक बीबी ?' बीबी टारि देलनि । किछु नहि बजलौह ।

—'बाबू मे बीबी, दयनीय माने की होइत छैक ? ओ बोबाय पुछलकैक ।

—'दयनीय माने जकरा पर दया आबय ।'

—'रवा आबय माने ?'

—'परौस ।' बीबी कहलकैक आ पुछलकैक—'किएक पुछै छै ?'

—'हम सभ परौस छी ? ओ पुछलकैक । बाबूनी मे चरमे कहैत छल—'बिनहँ ।' आउ बीबीकेँ पटना मोन पड़लैक ।

गणेश बाबू सुनलनि । चरैत-चरैत पानीकेँ देखिकऽ बुनु गोटा अथमानक अनुभव करैत छलाह । बजैत किछु नहि छलाह । आ बीच-बीचमे बच्चा सभक बाहि पकड़ि कऽ सड़कक काते कात बलका लेल कहैत छलनि ।

—'बाबूनी पानि पीयत ।' मुन्नी बजलैक । ओकर मुँह रौध आ पसीनासँ जल भेल छल ।

—'अखने थोड़े कासमे बस स्टैंडपर पहुँच जायक । ओतय पीबि लेव ।'

—'बड़ प्यास लागल अछि ।'

—'बस, आबि गेलहुँ ।'

ओ लोकनि तेजीसँ चलय अगलाह । बस स्टैंड पहुँचलाह । कत बन्द छलैक पानिक ओतो बसयो नहि छलैक । बंगलमे एकटा पानि बेचय बला छल । एखर पाइए पिलासँ बैस छलैक । पानिक भाव बूझि गणेश बाबू कोधमे बड़बड़लाह—'अखेर छै । मुदा पानि देखि बच्चा सभक प्यास जेना आरो बड़ि गेलैक । पिलास ओना तँ लगभग सभकेँ पानि देल छलैक । एखर पाइए प्रति गिलास पानि, गाव बच्चे सभकेँ गिलास बसक प्रतीक्षा करय लगलाह ।

गणेश बाबू पानीकी आ बीबी अनन्त-अनन्त मोनसँ एखर लिया पैनालीस पाइए बचलक । बसक मे अपन प्यास सतन कऽ लेलनि । भऽ सकैत अछि रस्ताके कांय दिशय । सम्भव इहो नै बल सभमे कतहुँ पाइ देस दिशय कतहुँ कत नहि पाइ जाय । इहो संभव भऽ सकैत अछि । पानीकी अपन पति आ बीबी अपन पितरक आदितिसँ बड़ परिचित अछि । एहि डारे मुझिँ सँदिशमे लेबाइ रहैत अछि, परित्यक्तिक मोकाबिला करबाक लेल ।

—'अहो, अघलाह लागल ओतय का नऽ मे ?' पानीकी पुछलनि ।

—'स्वाभाविक अछि । धिकट जेनावा छैक । अपन आपहुँसँ बजौलनि । हम की जगत छलहुँ जे एहने बाबू आ हमर एहने आइ ।' ओ धृष्ट भऽ कऽ बजलाह ।

—'जाम दिशक । हमरभि आ हुनकामे आइक सम्बन्ध बेओ नहि सकैछ । हु भाइमे, माने, मणिओत निचिओतमे एतेक अंतर बेना होयतैक ? ओहँ कोनो आन लोक लगैत छथि ?' पत्नी बजलौह ।

—'हँ अकसर छथि । अफसरकेँ पाइ छैक, यतया छैक । सब छैक । हम तँ निर्धन छी । मामूली काज करैत छी, कोनो तरहेँ बच्चा सभक संग निधाई करैत छी ।' ओ बजलौह ।

—'हमरा बिचिब लागल जे कहिनकाह एकोबेर हुनकियो देवऽ नहि अपलौह । बड़ कोनावन लागल टी० बी० मे बड़ नीक ओझाम भऽ रहल छलैक, तँ तँ की ।'

—'छोड़ बर्बा । अब एकर चर्चा हरयम लेल बन्द ।' ओ संभव कोधमे बजलाह ।

—'बाबूनी बहो कहलहुँ जे काका छथि । मुदा ओ तँ एकोबेर जानिओ दऽ नहि पुछलनि । हमरा कतेक जोरसँ प्यास लागल छल । हम सभ तँ बयो कबैत अछि तँ तुरंत पानि भऽ पुछैत छियैक जे भरिसक रस्तामे चलला सँ प्यास सँधि गेल होइक । मुन्नी पुछलकनि ।

—'हँ बाबूनी, आ पूरा घरमे देवलानर कतहुँ करसकिसँका फोटो छलै एकोटा ? आकि विद्यापतिक, पूलसी राम आ काबीर । बाबूक ओनो फोटो छलैन ? केहन काका छथि ?' मुकेश आबबर्ष व्यक्त कयलक तँ गणेश बाबू आ हुनक पत्नीक मुँह पत्तिर गेलनि ।

—'हँ देटा । कड़बड़ छलैक । ताही डारे तँ ओतय तँ अपना सन जदी बलि बचलहुँ । सब चल् धोसर ठाम चलैत छी घुमऽ फिर ।'

पत्नीसँ ओ परामर्श कयलनि जे ओ लोकनि अपन भातिव ओतय पललाह । रस्तामे बसल छतरी कऽ मुस्किबसँ एक भिगट पड़ल । ओतय खुसीतासँ बैसल । बहुत दिन भेटो जेना भऽ गेल । ओ लोकनि डू बेर घर भाबि चुकलहुँ अछि । पत्नी सहमति देलनि ।

बस अवस्था घर टमाटस सीड । तँ ओ ओ लोकनि कहुनाक चरैत गेलाहुँ अपेक्षित स्थान पर उतरलाह । फेर गेलाह भातिबक घर । बाहरसँ सभ किछु जानल छल ।

कोलकाल पर आगुर देलनि । दूसीन प्रयासक बाव केदार खोलि कऽ जे स्थिति बाहर भेलाह ते स्वयं हुनक भातीजे छलाह ।

— 'अरे अहाँ कबका ?' ओ कहलनि ।

— 'हे, हम सब भोटम छी । आइ पूमऽ निकलतहुँ । बहुत दिनसँ हिनका सबके' एक प्रकारे परतारि रहल छनिनि ।' ओ बजलाह ।

— 'आउ मे ।' ओ सामान्य बगसँ स्वागत करैत अयबाक आपस कयलनि ।

ओ लोकनि धीरे-धीरे केदार लग पहुँचलाह । आ भीतर जे हुनकी देलनि तँ ओतम ठाढ़ रहि गेलाह । कोठरी कसमकस भरल छलैक । बीचोमे स्त्री-बच्चा बैसल ।

— 'टी० बी० पर किनेबा चलि रहल छैक ने ! से लोक जमल अछि, आब ककरा मना करिबैक ?' खाचारी ओ तारतम्य से दइत, जेना संकोच सँ बजलाह ।

मनेन बाबू आ हुनक स्त्री जेना आँखिमे निश्चय कयलनि । बच्चा सब एतहुँ ओहिना थोड़े काल असमंजसक स्थितिमे ठाढ़ रहल फेर अगल-बगल खरड फिरे लागल । भातिज बेचारे धर्म संकटमे पड़ि गेलाह । की करथि ? बजलाह— 'बेजू ! एतेक दिनक बाव अहाँ लोकनि अयबो केलहुँ तँओ देना तक नहि सकलहुँ ।' ओ क्षमा प्रार्थी सन लगैत छलाह ।

— 'नद-नद कोनो गय नहि । हम सबकेर कहियो आरि जामब । एवन चलैत छी ।' मनेन बाबू जेना भातिजके' संकटसँ उबारलनि ।

बच्चा समेत ओ चलथ लगलाह तँ भातिज सीढ़ी धरि छोड़्य अयलनि ।

परजन् पुनहुँ एतहुँ अनुमस्ति छलनि । पार्वतीके' एहि गणक अवका लगलनि । ओ वगैत किछु नहि छलीह परन्तु भीतरसँ कानि रहल छलीह । की परिस्थिति छैक । हिनकर पैह मातिज ! आइ हिनका लग टी० बी० वा दुगियौक आन कोनो नीक उपयोगी साधन की उपलब्ध नहि छनि ? कतयसँ ? नोकरीघोरे ई पैह बत्ता करैत छनि । मुदा एतेक होया एतेक साधन कतयसँ भऽ गेलनि ।

ओ लोकनि सड़कक काते काल चलि रहल छलाह आ चुप छलाह । बच्चा सब अवेलाकृत निनिपण भऽ चलि रहल छल । जकरा देखि कऽ पति-पत्नी आना के' आर अपराधी आ दुखी अनुभव कऽ रहल रहथि ।

एतेक दिनक बाव तँ बच्चा सबके' घुमववाक अवसर भेटल छल । जेथी मे पाइ नहि छल तेथी ई सोचि किलतहुँ जे बहुतो दिनसँ बच्चा सबके' नवीरंजनीक लेल घरसँ बाहर कतहुँ नहि लऽ जा सकलिवैक अछि । एकरा सबके' कतहुँसँ घुमा-फिरा अनचाक जाही ।' आ अवलहुँ तँ वैह सम भऽ रहल अछि । की विविध संयोग छैक ।

— 'आब अपना सब कतय जामब बाबूजी ?' मुन्नी पुछलनि तँ पित्तके' स्वयं सन लगलनि । ओ ओकर मुँह देखलनि फेर ओ अपन पत्नीक मुँह देखलनि आ पुछलनि— 'आब !

— 'हम की कहूँ !' पत्नी कहलनि ।

फेर थोड़े सोचि कऽ वैह बजलाह— 'बी हर्ज टहलित कऽ पहुँचय योग तँ दूरी छैक । कमलेक घर पर चलैत छी । ओकरी सँ बहुत दिनसँ भेट नहि भेल अछि । बेचारीक पति कतेको माससँ सपनें छलनि । भेटो कऽ लेबनि ।'

बच्चा सब झरि चुकल छल । मुदा जयबाक छलैक ते' ओ सभ ओही पिस जाय लागलह । बच्चा सब बाकि गेल छल । फसतो-कखनो पति गरनी ओकरा सबक उत्साहके' बड़बैत आनू बड़ल जा रहल रहथ ।

ओतय जखन पहुँचलाह तँ वातावरण मे कोनो कर्म नहि छलैक । ओतहुँ सभ टी० बी० घेरने छल मुदा ओतऽ पार्वतीके' घेरने प्रकारक किछु आर विविध लगलनि । हिनका लग एतेक पाइ कतयसँ अयलनि ! कतऽ ई ससपेण्ड छलाह ! खर जे होइक । पहुँचला तँ कमला बैसलनि अपने लगमे आ अपन पति आ बच्चा सबहुँक सङ्ग टी० बी० मे व्यस्त भऽ गेलीह । कुलल क्षेमो नहि पुछलनि जे कोना छी ! कोना अयलहुँ एम्हर ! बच्चा सब कोना अछि !

ओ सभ बैसलाह थोड़े काल । बच्चा सब तँ खास कऽ कछमठ करऽ लागल । अगुता गेल छल ।

— 'माँ चल ने जखी । चल ने माँ एतऽ सँ । आ तखन सब उठि कऽ चलथ लगलाह । एक गिलास पानिओ तक लेल नहि पुछल देखनि । ओ सब चोटा गेलाह । निकललाह तँ बच्चा सबके' फेर व्यास लागि गेल छलैक ।

धीरे-धीरे सास भऽ रहल छलैक । घुमऽ बला मूड बच्चा सबक भिन्ना गेल छलैक । तीयो अंतिम रूपसँ मनेन बाबूके' अपन एकटा अभिन्न स्मरण अयलनि । ओकरा ओ बहुत स्नेह करैत छलनि । आइ काहि सचिवालय मे कोनो विभाग मे किरानी अछि । भेट भेना कतेक वर्ष भऽ गेल । एकहि नगर मे रहिओ कऽ... ओकरी देखिए लेल जाय । मुदा किछु सोचि कऽ अनडा देखनि ।

सम्बन्धी-यात्राक ई अनुभव बड़ विविध छल हुनका सबक लेल । ओ लोकनि पवरे सड़क पर चलथ लगलाह । साँझ होमबाक कारणे' सड़क किछु ध्वस्तता सँ भरल लागि रहल छलैक । बच्चा सबके' संगे मे लऽकऽ चलबामे कते बेसी खतके' भऽ कऽ चलथ पड़ि रहल छलनि । पार्वती आ मनेन भीतरसँ दबि गेल रहथि आबुक एहि यात्राक अनुभव सँ ।

बच्चा सब भुजलो छल यकलो छल, मुदा बाजि नहि रहल छल किछु । पति-पत्नी सोचैत रहथि जे ई केहन घुमनाइ भेलैक । एहिसँ एकरा सबके' की सजा भेटल होमलैक । मनोरंजनक नाम पर घुमवहुँ अवलिवैक तँ बेचारा सबके' भुखले पेटे पयरे-पयरे सड़क नापऽ पड़ि रहल छैक । ओ आँख ग्लासि सँ भरि गेलाह । कोना परतारिवैक ?

—'भूख लागलए बाबू जी ।' मुकेश बाजल ।

—'हमरो लागलए बाबू जी ।' मुन्गी बाजलि ।

दुनूके आश्वासन दैत कहलखिन 'एखने किछु कीन दैल छी, कनेक रक्कू । आ फेर चलय लगलाह । ओ जैत छलाह जे जीबीमे कतबा पाइ अछि । सबक भिला कऽ बसक फिरायो टा नहि निकलि सकत । मुदा किछु ने किछु करहि पड़त । अच्छा सम भूखायल अछि । पत्नी के देखलनि तँ ओ बलैत-चलैत भूड़ी झुका लेलखिन । भरिसक मनेमन कानि रहल छलीह ।

—'एहन लगैत अछि पार्वती, जेना एहि पूरा शहरमे अपना सब बाहरी आदमी छी । एतय जेना नयो नहि अण्ण । हमरा सब कतय जायक आव भला अहाँ सोनु ।' ओ बजलाह तँ स्वर कोवि रहल छलनि । पतिक गप जेना पार्वतीके आव मनेमन तैयार कऽ देने होअय । बजलीह—

'परि एतबहि गोटाकेँ सम्बन्धीक मानल जाय तँ ठीके अपन नयो नहि अछि । लेकिन ई कोना भऽ सकैत अछि । बबुती होयताह अपन । हमरा जकी हमर, परिस्थितिमे हमरे सन भिलैत जुलैत लाचारीमे जे जीवन बिता रहल होयताह ओ हमर अपन छय । बबुती अछि एहन ।' जेना बुझौलखिन ।

—'हम सम्बन्धीक गप करैत छलहुँ । आव तँ ककरो घर जायक कठिन अछि एहि टी० बी० क द्वारे ।' पति, जेना हुताल भऽ कहलखिन ।

—'एतेक पाइ पर्वण नहि अछि जे एकरा सभकेँ किछु खा सकैक । सिनेमा देखवाक तँ सनयो नहि देखल जा सकैत अछि ।' पति अपन आर्थिक विपन्नता में दुखी होइत बजलाह ।

—'नहि, सिनेमा नहि । अपना लोकनि एकरा सभकेँ कतहु तेहन मनलमू ठाम सऽ जदवैक ।' पत्नी कहलखिन । पतिकेँ ई विचार भीर लगलनि आ चलि पड़लाह । कामा कात बला सड़क पर । ओ लोकनि जतल जा रहल रह्लि ।

बच्चा सभ बाकल आ हुताल छल । बलैत-चलैत पत्नीक चण्डलक ओठा बला चमड़ा टुटि कऽ खलि पड़ल ओ पररकेँ चिलिया-चिलिरा कऽ चलय लगलीह । ओ प्रयास करैत छलीह जे पतिकेँ पता नहि चलनि । ओ गुमगुम चलि रहलि छलीह । गर्णशक मोनमे अपलनि जे किएक नहि महीन शर्कमे चलि कऽ थोड़ेक काल बेसी बच्चा सभक संग । ई विचार एकाएक मोनमे अपलनि ।

—'एतेक पैस शहरमे हमरा लगैत छल जे हमर अपन बबुत लोक अछि । आव भम दूटि गेल । सारतयमे हमर अपन नयो नहि अछि । सन दोसर सन दोसर लोक । हम तँ असनर छी ।' पति फेर बजलाह दुखमें ।

—'फेर ईह भ्रम । मोचवैक तँ बहुत लोक अछि अण्ण । हम बलहि सकरा

अण्णन बुझैत छलैक ओ अण्णन नहि भेलाह, ने धन, ने पद, ने प्रतिष्ठा-बोगीमे नहि । तँ द्वारे दुनका सम्बन्धीक मानबासँ पैच मुर्खता आर की होयत ।

—'ई टी० बी० सबटा सम्बन्धकेँ छपऽ खण्ड कऽ राखि बैलैक अचिला पाँच-सात बरखमे । देखैत रहब अहाँ ।' ओ बजलाह ।

—टी० बी० किएक ! आदमी अपने एता कऽ रहल अछि । सम्बन्ध खतम होय बाक जड़ि टी० बी० कहीं छैक ! ओ तँ अछि सम्बन्धीक, विचार ओकर स्थिति जे ओकर आर्थिक सामाजिक सुरक्षा आ सुविधा उपलब्ध करैत अछि जाहिमे बबुती लोक ओकर उपयोगिताक परिधिसे बाहर रहि जाइत अछि । सम्बन्धकेँ आव एहि प्रकारेँ बुझऽ पड़त नहि तँ तकजीक आर बड़न । हम आर कष्ट काटम, हमर बच्चा हमरोसँ बेसी कष्ट काटम ।

ओ लोकनि मार्कमे पहुँचि गेल रह्लि । ओतुका धूध देखि कऽ पति पत्नी, हृदय विचित्र उल्लाससँ भरि गेलनि । ओतय बबुति राख दुनके सनक माय-बाप अपन बच्चा सभक संग गप्प सथ कऽ रहल छल । मेलि कुचैले कपड़ा बला विपन्न बच्चा सब निर्विकार भावसँ श्लेशा रहल छल, सभ खुशी छल ।

मुन्गी आ मुकेश अपने तुरक बच्चा सभक संग खेलाय लागल । एतुका फूलक नाछ सभकेँ देखि कऽ भूख-प्यास सभटा विसरि गेल छल । दीदीकेँ बुलारसँ छिड़ि-आइत कहय लागल—'दीदी ओम्हर ओहि दिस चल ने, देख केहन मुग्धर-मुग्धर फूल छै ओम्हर ।' दीदी ओकरा सभकेँ सऽ कऽ ओहि दिस चल गेलि ।

बच्चा सभकेँ एहि तरहें सुध देखि पति-पत्नी एकटा गाड़ त्तिक अनुभव कयलनि एहि पार्कमे । बच्चा सभ उन्मुक्त भऽ दौड़ि रहल छल, खेला रहल छल ।

ओ लोकनि पाछ दिस आबि दोहौलनि । ओतय उपस्थित लोकक कबड़ा-खतत देखि कऽ मोनमे एहन विश्वास होइत छलनि जे ओ सभटा हिनके सन परिवारक लोक अछि । एहन लोक, जे बुनि नहि पड़ैत छल जे अण्णन नहि छी । एता लगैत छल जेना एक्के नामे टाक नहि प्रत्युत बराबरिक स्थिति बला आदमी अछि सभ । एहि अनुभवसँ दुनका सभकेँ बड़ जामित भेटलनि । आव दुनू गोटे एक कात हरियर आ मोलायम धुमि पर सोझाँ-सोझाँ बैसल रह्लि ।

—हमरा तँ लगैत अछि पार्वती जेना एखन अपना सभ जाहि दुनिदामे रहैल छी, जाहि शहरमे रहैत छी ताहिमे भरिसक दू दुनिदाक लोक अछि । एकटा दुनिदाक लोक बड़का-बड़का भव्य घरमे अछि आ एहि दुनिदाक लोक, अपने घरमे बं बऽ टी० बी० देखि रहल अछि आ दोसर दुनिदामे अछि अपना सभ सन लोक जे एतय पार्कमे आ एही प्रकारक कतहु खासी जेबी, भारी मन लेने बाहर मनोरंजन कऽ रहल अछि अपन बाकल बाल-बच्चा सभ । आ एहि दूनू दुनिदाक विभाजन कतेक सफ-साफ देखाइत छैक । नहि ?

अपन समाज 111

हमरा सभ तखनसँ ओहि दुनियाँमे भटकि रहल छलहुँ जे हमर अछिन्हि नहि ।
हमर दुनियाँ तँ ई अछि—हमर लोक ई लोकनि छथि आ हमर बच्चाक संगी ई
बच्चा सभ छैक जेकरा संग ओ खेला रहल अछि ।

बच्चा सभ खेलाइत दोसर दिस निकलि गेल छल । गणेश अपन रज्जोकेँ
आवेशतँ देखलनि आ दूमिपर राखल हुनकर हाथपर अपन बहिना हाथ रखैत
पुछलनि,—‘की सोचि रहल छी पार्वती ?’

सौत बेसी भऽ गेल छल । एक-दू कऽ लोक सभ पार्क सँ जा रहल छल ।
गणेशो बच्चा सभकेँ सोर पारलनि । ओ सभ बोझैत आपल आ बड़ खुशी छल ।

ओ जेवीसँ हँसोथि कऽ निकाललनि तँ ओहिमेतँ पचहत्तरि टा पाइ बहुर्य-
लनि । सोलाँ वऽ कऽ ‘चना जोर गरम’ बला जा रहल छल । सोर कयलनि । पत्नी
दोकलनि ‘जे पाइ अछि तँ रखने रहू । अमेरो एहि मे फिएक खर्च करैत छी ?’

—‘बाह, इहो भाइ तँ हमरे एहि दुनियाँक अंग छथि । हमर पाइमे हिनको
हिस्सा होइत छनि । हमरा एकरा बाँटि कऽ जयबाक चाहौ । पत्नी बिहुँसलीह
जेना गणेशक ओखि अम्हारोमे देखल जा सकैत अछि ।

—‘बच्चा सभ भुखले अछि पार्वती ।’ गणेश बजलाह ‘चना जोर गरम बला
संग आपल आ फकड़ पड़ैत दुनियाँ बनाव लागल ।

‘आब दुनियाँ बदलत भैया’

सबहुक घरे घर रूँदा,

भुखले कपो ते आब रहवैपा,

पढ़त बुलख तेहन पढ़ैपा,

तेहने सहारि भरल छै हमर चनाचूर गरम ।

भरिपक चारि-चारि दानाकेँ सबहुक हिस्सामे बडाम पड़ल होपलनि । सभ
पार्कमे पानि पीअय लागल ।

आँतयसँ दू किलोमीटर परे चलबामे बच्चा सभ थकल नहि, खुशीसँ बोझल
चलल जा रहल छल आमुए-आपू ।

मुन्नी अपन दीदीके कहि रहल छल—‘आब अपना सभ एतय सभ छुट्टीमे
आयल करब दीदी ? आयब ने ? एतऽ हमरा दू सीग टा दोस्ती बनि गेल आइ । बाबू
आपब ने ? माँ आ पिता सभटा मुनि रहल छलनि आ आनन्द आवि रहल छलनि ।

□

इत्यादि



लेखक

□ वृत्तांत नहि

अपना हाथक पूरा ओजग
 हमर अपनहि गर्दनि पर लटकि गेल-ए ।
 हमेह ओही बिनक तँ गप्प धिक
 अस्पताल प्लास्टर कऽ देल-ए ।
 हमर जुआन छोट भाय
 अपन दुनू मोचड़ल पंजा-हाथ के
 पेट पर रखने
 हमरा सोझी मे आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेल-ए ।
 हमर माथक भार हमरा गर्दनि पर
 अटक गेल-ए ।
 हमर बेटा मोर्चत अपना माथक केज/
 आखि सँ चिमवी उमलत
 पड़िते-पड़िते पोथी केँ एक काग फेकि
 बिजलीका जकाँ चमकि कऽ
 अकरमात ठाढ़ भऽ गेल-ए ! □